सोना-68,255
चांदी- 77,500
तिथि-चैत्र, कृष्ण, द्वितीया
शेयर मार्केट- 72,470
निफ्टी- 22,044
अधिकतम -34 °c
न्यूनतम -19 °c

लखनऊ से प्रकाशित एवं उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों से एक साथ प्रचारित

चर्चित राजनीति

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

-: सर्वाधिक लोकप्रिय समाचार पत्र :-

www.charchitrajnit.com | वर्ष - 20 अंक-124 आर.एन.आई. नं.- UPHIN/2004/14385 | लखनऊ, बुधवार 27 मार्च, 2024 | पृष्ठ-8 | मूल्य : दो रुपये

शोक, संताप नहीं, उत्साह व उमंग में विश्वास करता है सनातन धर्म : मुख्यमंत्री योगी

अयोध्या में 495 वर्ष बाद रामलला ने भी होली खेली, आशीर्वाद और कृपा लोगों पर बरसाई

चर्चित राजनीति। संवाददाता

गोरखपुर। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सनातन धर्म शोक.संताप में नहीं बल्कि उमंग और उत्साह में विश्वास करता है और होली का पर्व इसी का संदेश देता है। योगी ने मंगलवार को होली के पवित्र पर्व पर गोरखपुर के घंटाघर से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व श्री होलिकोत्सव समिति की ओर से निकलने वाली भगवान नरसिंह की रंगभरी शोभायात्रा के शुभारंभ अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि इस पर्व में समरस समाज की स्थापना का भाव निहित है तो साथ ही यह संदेश भी है कि सनातन धर्म सह अस्तित्व में वसुधैव कुटुम्बकम और सर्वे संतु निरामया में विश्वास करता है। सीएम योगी ने सभी नागरिकों को होली की बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि होली का पर्व उत्साह और उमंग का है। उत्साह और उमंग सुरक्षित, सुखी और समृद्ध समाज में होता है। हमारा समाज सुरक्षित और समृद्ध है इसलिए हम सभी उत्साह और उमंग से होली की हजारों वर्षों पुरानी परंपरा को मनाने के साथ अपनी इस विरासत के प्रति कृतज्ञता भी व्यक्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म पर जब भी कोई संकट आया, समाज में दुष्प्रवृत्तियां बढ़ीं तो कोई ना कोई ईश्वरीय अवतार भी हुआ है और दुष्प्रवृत्तियों को दूर कर समाज आगे बढ़ता रहा है। होली का त्यौहार समतामूलक और समरस समाज की स्थापना का भी संदेश है। आपसी बैर भाव को समाप्त कर, सत्य.न्याय के मार्ग पर चलकर ही हम समाज को शक्तिशाली बना सकते हैं। जहां विभाजन होगा वहां समाज शक्तिशाली नहीं हो सकता। योगी ने कहा कि इस बार की होली पर उत्साह और उमंग एक नई ऊंचाई पर है। अयोध्या में 495 वर्ष बाद रामलला ने भी होली खेली और आशीर्वाद व कृपा लोगों पर बरसाई। उन्होंने लोगों से अनुरोध किया कि बीमार व्यक्तियों को और जो मना करे उसे रंग न लगाएं और साथ ही नब्बे वर्ष से अधिक समय से निकलने वाली भगवान नरसिंह की रंगभरी शोभायात्रा के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तारीफकी।

योगी ने गोरखपुर में खेली फूलों की होली

योगी सरकार के 7 साल पूरे सीएम ने जनता का जताया आभार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ने 7 वर्ष का कार्यकाल सोमवार को पूरा कर लिया है। इस अवसर पर सीएम योगी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए प्रदेश की जनता का आभार जताया। मुख्यमंत्री ने लिखा है कि उनकी सरकार प्रदेशवासियों के हर सपने को साकार करने के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है।सीएम ने लिखा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रेरणादायी मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश की 25 करोड़ जनता की सेवा, सुरक्षा और समृद्धि के संकल्प को आज 7 वर्ष पूरे हो रहे हैं। 7 वर्षों में सबका साथ-सबका विकास के मंत्र के माध्यम से हर व्यक्ति के (शेष पृष्ठ 7 पर)

योगी ने गणेश शंकर विद्यार्थी को दी श्रद्धांजलि

लखनऊ, चर्चित ब्यूरो। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को महान स्वाधीनता संग्राम सेनानी, मूल्य आधारित पत्रकारिता के अतुल्य प्रतिमान, प्रखर समाजसेवी, गणेश शंकर विद्यार्थी की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

महान स्वाधीनता संग्राम सेनानी, मूल्य आधारित पत्रकारिता के अतुल्य प्रतिमान, प्रखर समाजसेवी, गणेश शंकर विद्यार्थी की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! योगी ने सोशल मीडिया पोस्ट एक्स पर लिखा, ''महान स्वाधीनता संग्राम सेनानी, मूल्य आधारित पत्रकारिता के अतुल्य प्रतिमान, प्रखर (शेष पृष्ठ 7 पर)

भाजपा उम्मीदवार बनीं संदेशखाली पीड़िता को मोदी ने किया फोन

चर्चित राजनीति। एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को पश्चिम बंगाल के संदेशखाली की महिला रेखा पात्रा से बात की, जो अब भाजपा की बशीरहाट लोकसभा उम्मीदवार हैं।

रेखा पात्रा तृणमूल कांग्रेस के निलंबित नेता शेख शाहजहां के खिलाफ इलाके में महिलाओं के विरोध प्रदर्शन का चेहरा रही हैं। स्थानीय ताकतवर व्यक्ति, जो अब जेल में है और उसके गुर्गों पर संदेशखाली में स्थानीय लोगों द्वारा अवैध भूमि हड़पने और यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया गया था। पीएम मोदी ने रेखा पात्रा से आगामी चुनावों के लिए उनकी प्रचार तैयारियों के बारे में बात की और उन्हें शक्ति स्वरूपा (देवी जैसी) कहकर उनकी सराहना की। पात्रा जवाब देतमुझे बहुत अच्छा लग रहा है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

केरल : मोदी ने एनडीए प्रत्याशी प्रोफेसर टीएन सरासु से की बात

नई दिल्ली, एजेंसी। रविवार को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने केरल में लोकसभा चुनाव से पहले डॉ. टीएन सरासु को अलाथुर निर्वाचन क्षेत्र से पार्टी का उम्मीदवार घोषित किया। पल्लाकड़ में सरकारी विक्टोरिया कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल डॉ. टीएन सरासु अपने कार्यकाल के दौरान संस्थान में उल्लेखनीय योगदान के लिए जानी जाती हैं। मौजूदा सांसद और यूडीएफ उम्मीदवार राम्या हरिदास और केरल राज्य देवस्वओम मंत्री और एलडीएफ उम्मीदवार के राधाकृष्णन त्रिकोणीय लड़ाई में उनके प्रतिद्वंद्वी हैं। इन सब के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रोफेसर टीएन सरासु से बात की है। पीएम नरेंद्र मोदी ने केरल के अलाथुर से बीजेपी उम्मीदवार प्रोफेसर टीएन सरासु (शेष पृष्ठ 7 पर)

संक्षिप्त समाचार

पंजाब में सभी 13 लोकसभा सीटों पर अकेले चुनाव लड़ेगी भाजपा

चंडीगढ़, एजेंसी। भाजपा की शिरोमणि अकाली दल (शिअद) के साथ बातचीत बेनतीजा रही। इसके बाद भाजपा ने मंगलवार को पंजाब की सभी 13 लोकसभा सीटों पर 1 जून को होने वाले चुनाव में अकेले लड़ने के अपने फैसले की घोषणा की। पंजाब भाजपा अध्यक्ष सुनील जाखड़ ने कहा कि भाजपा ने राज्य में अकेले चुनाव लड़ने का फैसला किया है। उन्होंने कहा, हमने लोगों, पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ विचार-विमर्श के बाद यह फैसला लिया। इस फैसले का उद्देश्य पंजाब के युवाओं, किसानों, व्यापारियों और पिछड़े वर्गों का भविष्य उज्ज्वल बनाना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पंजाब के लिए किए गए कार्य स्पष्ट हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष जाखड़ ने कहा, ष्पिछले 10 वर्षों में, पंजाब के किसानों की उपज का हर दाना खरीदा गया है। उचित एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) एक सप्ताह के भीतर किसानों के बैंक खातों में भेज दिया गया है। पंजाब एक सुरक्षित और संरक्षित सीमावर्ती राज्य है और मुझे यकीन है कि लोग 1 जून के चुनाव में भाजपा का समर्थन करेंगे।

बेंगलुरु में कार धोने व बागवानी करने पर 22 घरों पर लगा जुर्माना

बेंगलुरु, एजेंसी। पिछले कुछ दिनों से बेंगलुरु को लोंगो को पानी की किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। बेंगलुरु में जल संकट के बीच गैर-जरूरी उद्देश्यों के लिए पीने का पानी का उपयोग नहीं करने के आदेश का उल्लंघन करने पर बेंगलुरु जल आपूर्ति और सीवरेज बोर्ड ने 22 परिवारों पर पांच-पांच हजार रुपये का जुर्माना लगा दिया है। अधिकारियों ने कहा कि इस आदेश लगभग दो सप्ताह पहले जारी किया गया था। इसके साथ ही बेंगलुरु जल आपूर्ति और सीवरेज बोर्ड ने सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त कई शिकायतों के आधार पर इसकी कार्रवाई की। सीडब्लयूसी के अनुसार, आदेश का उल्लंघन करने और विशेष रूप से शहर के कुछ हिस्सों में पानी की कमी के बीच कार धोने, बागवानी (शेष पृष्ठ 7 पर)

भारत में विभिन्न देशों के राजदूतों ने जमकर खेली होली, दी शुभकामनाएं

चर्चित राजनीति। एजेंसी

नई दिल्ली। दुनिया भर में हिंदुओं ने होली का त्योहार रंग, गुलाल उड़ाकर धूमधाम से मनाया है। होली के त्योहार पर लोग खुशियों में झूमते, नाचते गाते दिखाई दिए। इस खुशी के मौके पर लोग ब्राइट रंगों के साथ होली खेलते दिखे। इस उत्सव में जमकर स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद भी लिया।

देश की जनता के अलावा भारत में विभिन्न देशों के दूतावासों और उनके भारतीय समकक्षों ने भी होली खेली। होली की धूम इस दौरा जापान से लेकर अमेरिका तक देखने को मिली जहां इन देशों के राजदूतों ने उत्साह और उमंग के साथ होली का त्योहार मनाया। भारत में अमेरिकी दूतावास ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक वीडियो साझा किया है जिसमें महिलाएं, पुरुष और बच्चे गुलाल के साथ खेलते दिख रहे हैं। इस वीडियो में सभी होली की भावना को अपनाते हुए खुशी में झूमते दिख रहे हैं। होली की शुभकामनाएं देते हुए पोस्ट में भारत और अमेरिका की दोस्ती की भी सराहना की गई। शानदार रंगों से लेकर मैदान में गूंजती हंसी तक, हमारे दूतावास में होली का जश्न काफी मजेदार था! लेकिन मज़ा यहीं नहीं रुकता! आइए होली के उत्साह को पूरे वर्ष जीवित रखें। यहां #USIndiaDosti में अधिक मित्रता और एक साथ अधिक अविस्मरणीय क्षण है। इसके अलावा एक वीडियो मैसेज में भारत में अमेरिकी राजदूत एरिक गारसेटी ने सभी को खुशी के साथ होली की शुभकामनाएं दी है। उन्होंने होली की मशहूर मिठाई गुझिया में एक अमेरिकी ट्विस्ट जोड़ा। उन्होंने कहा कि मैं सभी को होली की शुभकामनाएं देना चाहता हूं। हमारे पास यह अद्भुत गुझिया है, जिसमें कुछ पिस्ता, सुंदर गुलाब जल के साथ थोड़ा सा अमेरिकी स्वाद है। पूरे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक साथ मिलकर होली मनाने का इससे बेहतर कोई तरीका नहीं है। अमेरिकी राजदूत एरिक गारसेटी ने बताया कि भारत में उनकी ये पहली होली है। सोशल मीडिया पर उन्होंने लिखा कि मैंने लॉस एंजिल्स में होली समारोह में हिस्सा लिया था। मगर होली के मौके पर भारत में रहने से बेहतर कुछ नहीं है। अमेरिका में भारतीय दूतावास ने वाशिंगटन डीसी में ड्यूपॉन्ट सर्कल में होली उत्सव समारोह की तस्वीरें भी शेयर की है।

वहीं भारत में जापान के राजदूत हिरोशी सुजुकी ने होली के मौके पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर खास वीडियो और फोटो शेयर किए हैं जिसमें वो अपनी पत्नी ईको सुजुकी के साथ दिख रहे है। इस दौरान दोनों होली के गुलाल एक दूसरे पर डालते हुए दिख रहे है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

किसी ने उड़ाया गुलाल तो किसी ने खाई गुझिया

अदालतें लोगों को राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने से नहीं रोक सकतीं : सुप्रीम कोर्ट

चर्चित राजनीति। संवाददाता

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एक व्यक्ति पर उड़ीसा उच्च न्यायालय द्वारा लगाई गई जमानत की शर्त को खारिज कर दिया है। जिसमें कहा गया था कि वह किसी भी राजनीतिक गतिविधि में शामिल नहीं होगा। SC ने कहा कि यह उसके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होगा। न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने उच्च न्यायालय के 18 जनवरी के आदेश के खिलाफ बरहामपुर नगर निगम के पूर्व मेयर सिबा शंकर दास द्वारा दायर याचिका पर आदेश पारित किया।

उच्च न्यायालय ने जमानत की शर्त वापस लेने की उनकी अर्जी खारिज कर दी थी जिसमें कहा गया था कि वह सार्वजनिक रूप से कोई अप्रिय स्थिति पैदा नहीं करेंगे और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी राजनीतिक गतिविधि में शामिल नहीं होंगे। उच्च न्यायालय ने अगस्त 2022 में उन्हें जमानत पर रिहा करने का आदेश देते हुए यह शर्त लगाई थी। शीर्ष अदालत ने अपने 22 मार्च के आदेश में कहा, हमने पाया है कि ऐसी शर्त लगाने से अपीलकर्ता के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होगा और ऐसी कोई शर्त नहीं लगाई जा सकती है। इसमें कहा गया है, (शेष पृष्ठ 7 पर)

'नेवी' ने किया शक्ति प्रदर्शन

चर्चित राजनीति। एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना की आठ पनडुब्बियों ने अरब सागर में एक अभ्यास में हिस्सा लिया। अधिकारियों ने बताया कि पश्चिमी समुद्र तट पर अरब सागर में हाल ही में संपन्न अभ्यास में आठ पनडुब्बियों ने एक साथ शिरकत की और अपनी ताकत का अहसास कराया। पश्चिमी नौसेना कमान ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि वाइस एडमिरल संजय जे. सिंह ने अभ्यास के संचालन की समीक्षा की। उन्होंने इस ग्रुप के पेशेवर और शानदार आचरण के लिए उनकी सराहना की।

पश्चिमी नौसेना कमान पोस्ट में कहा-प्रदर्शन के तहत वाइस-एडमिरल ने पनडुब्बी की निचली सतह को भी देखा और पनडुब्बी चालकों की परंपरा के अनुसार समुद्र के पानी का स्वाद चखा। अदन की खाड़ी, अरब सागर और लाल सागर में ड्रोन रोधी, मिसाइल रोधी और समुद्री डकैती रोधी हमलों के खिलाफ नौसैनिक अभियानों के सौ दिन पूरे होने पर नौसेना प्रमुख एडमिरल हरि कुमार ने मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि नौसेना ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सकारात्मक कार्रवाई जारी रखेगी। नौसेना प्रमुख ने कहा कि क्षेत्र में अव्यवस्था से लाभ उठाने के लिए समुद्री डकैती एक उद्योग के रूप में फिर से उभर कर सामने आई है। नौसेना प्रमुख ने कहा कि हम इसे रोकने के लिए कार्रवाई करेंगे। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन संकल्प ने छोटे और त्वरित अभियानों की मिथक को तोड़ा है और महासागरों में सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए निरंतर अभियानों की आवश्यकता पर जोर दिया है। उन्होंने आगे कहा कि ऑपरेशन की गति काफी तेज है और हमारे पास समुद्र के विभिन्न हिस्सों में 11 पनडुब्बियां और 30 युद्धपोत हैं, जो सभी क्षेत्रों में रुचि सुनिश्चित करते हैं। वहीं दूसरी ओर भारत और अमेरिका की सेनाओं के बीच पूर्वी समुद्र तट पर सोमवार 18 मार्च से संयुक्त युद्धाभ्यास 'टाइगर ट्रायम्फ 2024' जारी है। इस मौके पर यूएसएस समरसेट के भूतल युद्ध अधिकारी ब्रंजिक ने भारतीय नौसेना कर्मियों के साथ विशाखापत्तनम में समय बिताया। अधिकारी ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने भारतीय नौसेना से बहुत कुछ सीखा है। बता दें कि इस युद्धाअभ्यास का उद्घाटन समारोह 19 मार्च को आईएनएस जलाश्व पर हुआ।

आठ पनडुब्बियों के साथ दिखाई ताकत

समरसेट तीन सैन एंटोनियो श्रेणी के उभयचर परिवहन डॉक जहाजों में से एक है, जिसका नाम 11 सितंबर, 2001 के आतंकवादी हमलों के दौरान खोए गए लोगों के सम्मान में रखा गया है। समरसेट पर भूतल युद्ध अधिकारी ब्रंजिक ने कहा, हमें विशाखापत्तनम में भारतीय नौसेना कर्मियों के साथ बिताया गया समय बहुत पसंद आया। हमने उनसे बहुत कुछ सीखा और हमारे पास उनके साथ गेम खेलने के दौरान कुछ बेहतरीन यादें भी हैं। टाइगर ट्रायम्फ 2024, भारत और अमेरिका के बीच एक द्विपक्षीय, त्रि-सेवा अभ्यास है। इसका उद्घाटन समारोह 19 मार्च को आईएनएस जलाश्व पर हुआ। (शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रथम चरण की आठ लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए नामांकन की अंतिम तारीख है 27 मार्च

लोकसभा चुनाव : 46 प्रत्याशियों ने किया नामांकन

चर्चित राजनीति। संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 के प्रथम चरण में प्रदेश की 8 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए प्रत्याशियों के नामांकन के लिए 20 मार्च, 2024 को अधिसूचना जारी हुई थी। प्रथम चरण के लिए अब तक विभिन्न राजनैतिक दलों के कुल 46 प्रत्याशियों द्वारा नामांकन किया गया। आज मंगलवार को कुल 42 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसके पहले 22 मार्च को 04 प्रत्याशियों ने नामांकन किया था।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रथम चरण में प्रदेश की 8 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए आज मंगलवार को जिन राजनैतिक दलों के प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें 1-सहारनपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में आज मंगलवार को कुल 04 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, जिसमें इंडियन नेशनल कांग्रेस से इमरान मसूद, बहुजन समाज पार्टी से माजिद अली, स्वतंत्र प्रत्याशियों में राशिद खान एवं शबनम हैं।

इसी प्रकार 2-कैराना लोकसभा सीट में आज मंगलवार को 07 प्रत्याशियों ने नामांकन किया। इसमें समाजवादी पार्टी से इकरा चौधरी, बहुजन समाज पार्टी से श्रीपाल, समाजवादी पार्टी से वैकल्पिक प्रत्याशी नाहिद हसन, राष्ट्रीय मजदूर एकता पार्टी से प्रीती कश्यप, अखण्ड भारत स्वतंत्र पार्टी से विक्रम सैनी, आजाद अधिकार सेना से ओमवीर तथा स्वतंत्र प्रत्याशी मनोज राना हैं। इसी प्रकार 3-मुजफ्फरनगर लोकसभा सीट में आज मंगलवार को 11 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, जिसमें भारतीय जनता पार्टी से संजीव कुमार बालियान, समाजवादी पार्टी से हरेन्द्र सिंह मलिक, बहुजन समाज पार्टी से दारा सिंह प्रजापति, जयसमता पार्टी से नील कुमार, सर्वजन लोक शक्ति पार्टी से ओमपाल सिंह, राष्ट्रवादी जनलोक पार्टी से कविता, राष्ट्रवादी जनलोक पार्टी से नन्द किशोर पुण्डीर तथा स्वतंत्र प्रत्याशियों में गौतम आनन्द, प्रदीप कुमार, चरन सिंह, राजकिशोर गर्ग हैं। इसी प्रकार 4-बिजनौर लोकसभा सीट में आज मंगलवार को 4 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, जिसमें बहुजन समाज पार्टी से विजेन्द्र सिंह, मजदूर किसान यूनियन पार्टी से रामधन सिंह, पीपुल्स पार्टी ऑफ इण्डिया (डेमोक्रटिक) राजपाल, मजलूम समाज पार्टी से फरमान हैं।

चुनाव आयोग ने बीते 20 मार्च को जारी की थी अधिसूचना

इसी प्रकार 5-नगीना (अ0जा0) लोकसभा सीट में अब तक कुल 5 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, इसमें से आज मंगलवार को 3 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, जिसमें बहुजन समाज पार्टी से सुरेन्द्र पाल सिंह, समाजवादी आंदोलन पार्टी से धरमवीर सिंह, पीपुल्स पार्टी ऑफ इण्डिया (डेमोक्रेटिक) से रवीन्द्र भारती हैं। इसी प्रकार 6-मुरादाबाद लोकसभा सीट में अब तक कुल 6 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, इसमें से 05 प्रत्याशियों ने आज मंगलवार को नामांकन किया, जिसमें भारतीय जनता पार्टी से सर्वेश कुमार सिंह, बहुजन समाज पार्टी से मो. इरफान, समाजवादी पार्टी से डॉ. एसटी हसन, भारतीय बहुजन समता पार्टी से ओंकार सिंह तथा स्वतंत्र प्रत्याशी में साधना सिंह हैं। इसी प्रकार 7-रामपुर लोकसभा सीट में आज मंगलवार को 5 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, जिसमें परचम पार्टी ऑफ इण्डिया से सैफत अली खान, जनसेवा सहायक पार्टी से जगत सिंह, लेबर पार्टी ऑफ इण्डिया से अब्दुल कादर, स्वतंत्र प्रत्याशियों में अशोक कुमार, शिवप्रसाद हैं। सी प्रकार 26-पीलीभीत लोकसभा सीट में अब तक कुल 04 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, जिसमें आज मंगलवार को 3 प्रत्याशियों ने नामांकन किया, इसमें बहुजन (शेष पृष्ठ 7 पर)

वृद्ध किसान की कुएं में गिरकर मौत परिजनों में मचा कोहराम

फाइल फोटो

बछरावां/रायबरेली, चसं। थाना क्षेत्र की चौकी थुलेंडी अंतर्गत ग्राम सभा घुरौना मे उस समय हड़कंप मच गया जब कुएं में बुजुर्ग किसान का शव मिला। मिली जानकारी के अनुसार बीते रविवार को 65 वर्षीय किसान सुरेश कुमार शुक्ला पुत्र मुन्नू लाल शुक्ला निवासी घुरौना दोपहर 3 बजे के आसपास घर से अपने खेत की नीलगायों को भगाने गये हुए थे और वापस नहीं लौटे तो परिजनों ने उनकी खोजबीन शुरू की रात 9 बजे के करीब गांव के बाहर मृतक के खेत के पास एक कुएं में शव पाया गया शव देख ग्रामीणों में हड़कंप मच गया तत्काल पुलिस को सूचना दी गई मौके पर पहुंचे चौकी इंचार्ज वागीश मिश्रा ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्यवाही करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मृतक के बड़े भाई दिनेश चंद शुक्ला ने बताया कि मृतक किसान था खेतों से नील गाय बहुत परेशान करती थी अक्सर उन्हें भगाने चले जाते थे और उस दिन भी वह खेत गए हुए थे खेत के पड़ोस में एक बाग में झाड़ी झंकार से बन्द एक सपाटू कुआं था जिसे वह देख नहीं पाए और जानवरों को भागते समय पैर फिसलने से सम्भवतः कुएं में गिर गए जिससे यह दुर्घटना घटित हो गई है और मौत हो गई इससे पूर्व भी सपाटू कुआं होने के कारण कई जानवर गिरकर मौत के आगोश में समा चुके हैं। फिलहाल मृतक किसान के परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

सड़क हादसे में तीन दर्जन घायल, अस्पताल में भर्ती

रायबरेली, चसं। अलग अलग थाना क्षेत्र में मार्गदुर्घटना में तीन दर्जन होली के पर्व में घायल हुए जिनको जिला अस्पताल व सीएचसी में भर्ती करवाया गया है। जिले के ऊंचाहार; सलोन; जगतपुर; डलमऊ; खीरो; लालगंज; बछरवां; हरचंदपुर; महराजगंज; शिवगढ़; डीह; भदोखर; मिलएरिया; सदर कोतवाली; गुरूबख्सगंज; नसीराबाद के अन्तर्गत हुए मार्गदुर्घटना में तीन दर्जन लोग होली के दिन चोटिल हुए है। जिनको सीएचसी व जिला अस्पताल में स्थानीय ग्रामीणों की मदद से भर्ती करवाया गया है।

डिवाइडर से बाइक टकराई, युवक की मौत

चर्चित राजनीति। संवाददाता

बछरावां (रायबरेली)। ओवर ब्रिज के ऊपर बाइक अनियंत्रित होने से युवक डिवाइडर से टकराया गिरने से हुई मौत, इतना की सीसीटीवी फुटेज सामने जानकारी के अनुसार आपको बताते चले की कस्बे में स्थित लखनऊ प्रयागराज राजमार्ग पर ओवरब्रिज के ऊपर बाइक सवार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गया जिससे घटनास्थल पर ही युवक की मौत हो गई। मृतक युवक संतोष पुत्र हरीभजन उम्र लगभग 35 वर्ष निवासी खजूरों थाना क्षेत्र शिवगढ़ लखनऊ प्रयागराज मार्ग होते हुए अपने गांव की तरफ जा रहे थे। तभी अचानक ओवर ब्रिज के ऊपर पहुंचते ही उनकी बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई, जिसमे युवक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

घटना की जानकारी राहगीरों के द्वारा एंबुलेंस को दी गई, सूचना पर पहुंची एंबुलेंस की सहायता से घायल को बछरावां सीएचसी पहुंचाया गया।

जहां तैनात डॉक्टर प्रभात मिश्रा ने जांच पड़ताल के दौरान युवक को मृत पाया। घटना की जानकारी पुलिस के द्वारा युवक के घर वालों को दी गई है?? पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम प्रक्रिया के लिए भेज दिया है?? इस बाबत थाना प्रभारी बिजेंद्र प्रसाद शर्मा ने बताया की घटना की जानकारी प्राप्त हुई है, शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है तहरीर मिलने पर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी??

सड़क हादसे में 5 की मौत

रायबरेली में अलग अलग थाना क्षेत्रों मे हुए मार्गदुर्घटना में पांच की मौत हो गई है पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेजा है। जबकि परिजन में सूचना के बाद रो रोकर कोहराम मचा हुआ है।

जिले के ऊंचाहार कोतवाली क्षेत्र के सवैयातिराहा के निकट लखनऊ से प्रयागराज मार्ग पर बाइक सवार धीरज निवासी अंबारामथई व राजकुमार निवासी पूरे भूखनतिवारी थाना गदागंज को ट्रक ने रौंद दिया जिसमें दोनो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई है ट्रक लेकर चालक फरार हो गया।दूसरी मार्गदुर्घटना हरचंदपुर थाना क्षेत्र के गंगागंज मे हुई जहां पर रोडवेज बस की चपेट में आने से महेन्द्र 21वर्ष पुत्र जागेलाल निवासी गांव पूरे तिवारी थाना लालगंज की मौत हो गई है।तीसरी मार्गदुर्घटना बछरावां थाना क्षेत्र के अन्तर्गत लखनऊ से प्रयागराज मार्ग पर बने डिवाइडर से बाइक टकराकर गिर गया जिससे बाइक सवार संतोष 35वर्ष पुत्र हरिभजन निवासी गांव खजुरो थाना शिवग? की मौके पर ही मौत हो गई है।चौथी मार्गदुर्घटना में जगतपुर थाना क्षेत्र के गांव जोगमगदीपुर के निकट लखनऊ से प्रयागराज मार्ग पर पिकप ने साइकिल सवार हरीलाल 60वर्ष पुत्र भगवानदीन निवासी गांव हरिजनकापुरवा थाना जगतपुर को टक्कर मारने के बाद रौंद दिया।जिससे हरीलाल की मौके पर ही मौत हो गई।मृतक दैनिक मजदूरी एक ईंट भट्ठा में करता था।मृतक की पत्नी का दो वर्ष पहले निधन हो गया था मृतक की बेटी खुशबू;निक्की देवी;खुशी व बेटे अर्जुन व करन का रो रोकर बुरा हाल था।उधर एएसपी नवीन सिंह ने बताया कि पांचो मृतकों का शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया गया है।

जिला निर्वाचन अधिकारी की अध्यक्षता में समस्त नोडल अधिकारी/अपर नोडल अधिकारी/सहायक प्रभारी अधिकारी के साथ निर्वाचन- 2024 की तैयारी के संबंध में बैठक

संवाददाता

अंबेडकरनगर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिनांक 16 मार्च 2024 को लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 की घोषणा के उपरांत जिला निर्वाचन अधिकारी अविनाश सिंह की अध्यक्षता में मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैन की उपस्थिति में समस्त नोडल अधिकारी ध्अपर नोडल अधिकारी ध्सहायक प्रभारी अधिकारी के साथ कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन- 2024 की तैयारी के संबंध में बैठक आयोजित किया गया। बैठक के दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा विस्तार पूर्वक आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन- 2024 की तैयारी के बारे में बिंदुवार जानकारी दिया गया। बैठक के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा समस्त नोडल अधिकारीध् अपर नोडल अधिकारी ध्सहायक प्रभारी अधिकारी को निर्देशित किया गया कि आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 में लगाए गए समस्त कार्मिक दिए गए दायित्वों का जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन करें जिससे आगामी लोकसभा निर्वाचन 2024 सकुशल एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराया जा सके। जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि संबंधित कार्मिकों को प्रशिक्षण दिलाए, जिससे अधिकारियोंध् कर्मचारियों को अपने दायित्वों का निर्वहन करने में आसानी हो। किसी भी लापरवाही पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी। बैठक के दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. सदानंद गुप्ता, अपर जिलाधिकारी न्यायिक,समस्त उप जिलाधिकारी, जिला विकास अधिकारी सुनील कुमार तिवारी, परियोजना निदेशक दिलीप सोनकर, जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार द्विवेदी तथा संबंधित विभाग के अधिकारीध् कर्मचारी मौके पर उपस्थित रहे।

शैक्षिक भ्रमण की टीम मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय गोरखपुर हुई रवाना

संवाददाता

अम्बेडकर नगर। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में जिलाधिकारी अविनाश सिंह, मुख्य विकास अधिकारी अनुराज जैन के मार्गदर्शन में जिला विज्ञान क्लब अम्बेडकर नगर द्वारा शैक्षिक भ्रमण एवं वैज्ञानिक व्याख्यान कार्यक्रम में जनपद के 13 विद्यालयों से कुल 89 मेधावी विद्यार्थियों व 22 शिक्षकों की टीम जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय से मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय गोरखपुर के लिए जिला विद्यालय निरीक्षक गिरीश कुमार सिंह प्रधानाचार्या सुमित्रा देवी, विज्ञान क्लब के समन्वयक निरंजन लाल, यूथ आइकॉन प्रवीण गुप्ता, द्वारा संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर भ्रमण दल को रवाना किया गया। विद्यार्थियों के दैनिक जीवन में वैज्ञानिक सोच विकसित करने, मस्तिष्क में उत्पन्न कौतुहल प्रश्नों का समाधान करने के उद्देश्य से शैक्षिक भ्रमण के दौरान विश्वविद्यालय परिसर के शोध प्रयोगशालाओं का विजिट, वैज्ञानिक व्याख्यान, विज्ञान क्विज आदि कार्यक्रमों को शामिल कर शैक्षिक भ्रमण को रुचिकर बनाया गया। भ्रमण दल में प्रधानाचार्य रामतीर्थ विश्वकर्मा, अखिलेश कुमार अशोक सिंह, सुशील कांत दूबे, नूतन सिंह, अनूप कुमार, वर्षा गुप्ता, मानस द्विवेदी, सत्यम सिंह, विपिन त्रिपाठी नीरज यादव आदि शिक्षक सम्मिलित रहे।

जिला कांटेक्ट सेंटर द्वारा 1950 टोल फ्री नंबर जारी

संवाददाता

अंबेडकरनगर। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 की घोषणा के उपरांत जनपद अंबेडकरनगर में सकुशलध् पारदर्शी व निष्पक्ष चुनाव संपन्न कराने हेतु तैयारियां तेज कर दी गई हैं। उसी क्रम में आज उप जिलानिर्वाचन अधिकारी डॉ0सदानंद गुप्ता द्वारा कलेक्ट्रेट कार्यालय में स्थापित जिला कांटेक्ट सेंटर, वीडियो अवलोकल टीम, मीडिया प्रमाणन एवं निगरानी समिति (डब्ड०) एवं सी विजिल कंट्रोल रूम का निरीक्षण किया गया वहां पर उपस्थित कर्मचारियों को गहनता पूर्वक निगरानी करने हेतु निर्देशित किया गया। उन्होंने लगाए गए कर्मचारियों को निर्देश देते हुए कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिए गए निर्देशों का अक्षरसरू पालन सुनिश्चित करें। जिला कांटेक्ट सेंटर द्वारा 1950 टोल फ्री नंबर जारी किया गया है। इस टोल फ्री नंबर पर निर्वाचन से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है, वही सी विजिल ऐप के माध्यम से निर्वाचन की गतिविधियों के संबंध में आमजन मानस शिकायत दर्ज करा सकते हैं, जिसका निस्तारण आयोग द्वारा दिए गए समय के अंतर्गत सुनिश्चित कराया जाएगा।

मुख्यातिथि के रूप में प्रान्त के मंत्री देवेंद्र व प्रवासी के रूप में प्रान्त संस्कार प्रमुख शिव प्रताप ,विभाग मंत्री धीरेश्वर प्रान्त सत्संग प्रमुख श्याम बाबू के मार्गदर्शन में सम्पन्न

संवाददाता

अंबेडकरनगर। विश्व हिंदू परिषद का प्रान्त योजना बैठक विगत 9 व 10 मार्च को अयोध्या धाम के कारसेवक पुरम में सम्पन्न हुआ बैठक में तय कार्यक्रमो को जिले के प्रत्येक प्रखंडो में पहुचाने के उद्देश्य को जिला योजना बैठक के प्रत्येक प्रखंडो से आये पदाधिकारियों को अपने अपने प्रखंडो के माध्यम से खंडों में ले जाने के लिए आज टाण्डा नगर के चौरसिया मैरेज लान शंकर गढ़ धुरियहिया में मुख्यातिथि के रूप में प्रान्त के मंत्री देवेंद्र व प्रवासी के रूप में प्रान्त संस्कार प्रमुख शिव प्रताप ,विभाग मंत्री धीरेश्वर प्रान्त सत्संग प्रमुख श्याम बाबू के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ! कार्यक्रम का संचालन जिला मंत्री विकास व अध्यक्षता जिला अध्यक्ष प्रदीप पांडे ने किया! बैठक 2 सत्रों में हुआ प्रथम सत्र कोभगवान श्रीराम के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर प्रान्त संस्कार प्रमुख शिवप्रताप व श्याम बाबू,आलोक चौरसिया,विकास ने प्रारम्भ किया! प्रथम सत्र को विस्तार से विचार व्यक्त करते हुए श्याम बाबू

ने कहा कि विश्व हिंदू परिषद आज हिन्दू समाज का विश्वास पात्र संगठन है जिसने हिंदुओं सहित सन्त समाज को एक सूत्र में पिरोकर अपने मानविन्दुओ पर होने वाले कुठाराघात के विरुद्ध हर स्तर तक जाकर संघर्ष करने के साथ दीन हीन हिंदुओ की सेवा के लिए जाना जाता है! दुनिया जानती जब हिन्दू जात पात में बटकर लंबे समय से अपना नुकसान करता चला आ रहा है जातपात खत्म कर हिंदुओ को कहो गर्व से हम हिन्दू है के भाव को प्रत्येक सुषुप्त अवस्था मे रहे हिंदुओ को समर्थ हिन्दू,सक्षम हिंदु, संगठित हिन्दू के भाव को जागृत कर अपने स्वाभिमान के आन बान शान के लिए सँघर्ष करने का दिशा दिया और इसी सँघर्ष और बलिदान के बल पर आज दुनिया देख रही है कि कैसे कभी ताज महल के रूप दुनिया में हिंदुस्तान की पहचान थी पर आज श्रीराम के मन्दिर को दुनिया प्राथमिकता दे रही है! आगामी महीनों में पड़ने वाले चुनाव में हिन्दू समाज सत प्रतिशत मतदान करे इसके लिए भी कार्यकर्ताओ को जिम्मेदारी निभाने का आग्रह किया गया आगामी रामोउत्सव कार्यक्रम अप्रेल माह के 14 से 23 तक व सीता नवमी के कार्यक्रमो को 16 मइ को प्रत्येक प्रखण्ड व खंडों में छोटे छोटे कार्यक्रम को मनाने का वृहद योजना बनाई गई! साथ ही संगठन के कार्यकर्ता कार्य करने में निपुड़ हो और संगठन के रीति नीति के अनुसार संगठन मजबूत करें इसके लिए प्रत्येक वर्ष विश्व हिंदू परिषद, बजरंगदल, दुर्गावाहिनी, मातृ शक्ति का अभ्यास वर्ग लगता है जिला से अधिक संख्या जाय इनकी भी योजना पर वृहद विचार हुआ! द्वितीय सत्र में प्रान्त मंत्री देवेंद्र मिश्रा ने सभी पीछे हुए कार्यक्रम की और आगामी होने वाले कार्यक्रमों के साथ संगठन के विस्तार पर व्यापक चर्चा करते हुए कहा कि संगठन का कार्य ईश्वर का कार्य है क्योंकि जो काम कभी श्रीराम और कृष्ण सहित तमाम मनीषियों ने किया उन्ही के कार्य को हम संगठन से जुड़कर आगे बढ़ा रहे है हम सबको चाहिए कि पूरी निष्ठा के साथ संगठन के शीर्ष नेतृत्व के अपेक्षाओ पर खरा उतरने के लिए समय देना चाहिए! बैठक में विभाग मंत्री धीरेश्वर वर्मा,जिला कार्याध्यक्ष हृदयमणि मिश्रा,जिला संरक्षक राम आशिष मिश्रा,जिला सहमंत्री संजय, जिला गोरक्षा प्रमुख सतीश मोदनवाल, जिला समाजिक समरसता प्रमुख आशिष,मातृशक्ति जिला संयोजिका शोभना गुप्ता सहित सभी प्रखंडो के अध्यक्ष, मंत्री, संयोजक सहित अन्य सैकड़ो पदाधिकारियों की उपस्थिति रही

महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह धूमधाम के साथ सम्पन्न

संवाददाता

अम्बेडकर नगर। स्थानीय रमाबई राजकीय महिला महाविद्यालय, अकबरपुर, अम्बेडकर नगर में महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह धूमधाम के साथ आयोजित हुआ, सर्वप्रथम वरिष्ठ कोषाधिकारी, अंबेडकरनगर बृजलाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया, तदुपरान्त महाविद्यालय की प्राचार्य व संरक्षक प्रो. शेफाली सिंह ने मुख्य अतिथि का स्वागत पुष्प गुच्छ और अंगवस्त्रम से किया। डॉ सीमा यादव के संचालन में छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से पूरे भारत की सांस्कृतिक विरासत प्रस्तुत किया। पूरे सत्र महाविद्यालय के विभागों द्वारा आयोजित परिषदीय प्रतियोगताओं के पुरस्कार वितरित किए गये, जिसे पाकर

छात्राओं के चेहरे खिल उठे। इस अवसर पर महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में विजेता छात्राओं को भी पुरस्कृत किया गया प् मुख्य अतिथि वरिष्ठ कोषाधिकारी बृजलाल ने छात्र और शिक्षक के अन्तरू सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नियमित और अनुशासन के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, उन्होंने आगे कहा कि शिक्षक की डॉट – फटकार उस कड़वी औषधि के समान है, जो तत्काल कड़वी तो होती है, लेकिन उसका लाभ स्थाई होता है। प्राचार्य प्रोफेसर शेफाली सिंह ने अपने उद्बोधन मे बताया कि आत्मज्ञान और आत्मबल से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का विकास संभव है उन्होंने छात्राओं को अध्ययन के साथ–साथ सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति सचेत रहने को कहा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मुझे यह कहते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि आज हमारी छात्राओं ने वार्षिकोत्सव में जो प्रतिभा प्रदर्शित की है, वह यह कहने के लिए पर्याप्त है कि उनमें हमारे समाज के योग्य नागरिक बनने की क्षमता है। शिक्षा कक्षा की चारदीवारी के भीतर जो कुछ होता है उससे कहीं अधिक है। कार्यक्रम का संचालन प्रो विश्वनाथ द्विवेदी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन समारोहक प्रोफेसर सुधा ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के मुख्य शास्ता प्रो.अरविन्द वर्मा, डा0 पूनम, डॉ. अखिलेन्द्र प्रताप सिंह , डॉ0 मनोज गुप्ता, वी.प्रिया, विजयलक्ष्मी, संगीता,डॉ सीमा यादव,सीता पाण्डेय, चन्द्रभान, डॉ0 नन्दन सिंह, डॉ0 वी0 पी0 सिंह, खीन्द्र वर्मा, डॉ0 अनूप पाण्डेय, डॉ. सतीश उपाध्याय, डा. अतुल कनौजिया, डॉ भानु प्रताप राय,डॉ. अजीत प्रताप सिंह,कुंवर संजय भारती, डॉ0 महेन्द्र यादव, युजवेन्द्र गोंड, छात्राएं , अभिभावक एवं महाविद्यालय के समस्त कर्मचारी उपस्थित थे ।

त्योहारों के दौरान निर्बाध विद्युत आपूर्ति करें - जिलाधिकारी

संवाददाता

अंबेडकर नगर। जिलाधिकारी अविनाश सिंह की अध्यक्षता में जिलाधिकारी कार्यालय में विद्युत विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान अधीक्षण अभियंता द्वारा अवगत कराया गया कि आगामी होली के त्यौहार को देखते हुए पूरे जनपद में 24 घंटे की निर्बाध आपूर्ति की जा रही है जो कि 27 मार्च 2024 तक की जाएगी। शासन से यह भी आदेश प्राप्त हुआ है कि बिना किसी पूर्व सूचना दिए कनेक्शन न काटे जाए। आमजन को यदि विद्युत से किसी प्रकार की कोई समस्याध् शिकायत है तो इसके लिए हेल्प लाइन नंबर, अधीक्षण अभियंता विद्युत तथा अधिशासी अभियंता विद्युत के नंबर आमजन की सुविधा हेतु जारी किया जा रहा है। बैठक के दौरान जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि त्योहारों के दौरान निर्वाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करें तथा किसी प्रकार की फाल्ट होने पर उसे तत्काल ठीक कराएं यदि किसी कर्मचारी द्वारा अनाधिकृत रूप से धन की मांग की जाती है तो दिए गए नंबर पर तत्काल शिकायत दर्ज कराए।

संक्षिप्त समाचार

मारपीट का वीडियो वायरल, जांच में जुटी पुलिस

रायबरेली, चसं। शिवगढ़ थाना क्षेत्र के गांव बोखारेपुर में रंजिस को लेकर दो पक्षो में लाठी डंटे चलने पर उसका वीडीओ मंगलवार के दिन सोशल मीडिया में वायरल कर दिया गया। वायरल वीडीओ के बाद पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया। उधर थाना प्रभारी ने बताया कि वीडीओ के आधार पर जांच पड़ताल प्रारंभ कर दिया गया है।तहरीर मिलने पर विभागीय कार्रवाई किया जाएगा।

कुल्हाड़ी मारकर गाय को किया घायल

रायबरेली, चसं। डलमऊ थाना क्षेत्र के अन्तर्गत टोलाकस्बे में गाय को कुल्हाड़ी से मारकर लहूलुहान कर दिया गया।जिसका वीडीओ बनाकर सोशल मीडिया में वायरल होने के बाद हड़कंप मच गया।गाय के ऊपर हमला करने वाले की तलाश हेतु पुलिस छानबीन में जुट गई है।उधर सीओ ने बताया कि वायरल वीडीओ के आधार पर आरोपी युवक की शिनाख्त करके उसको जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।हलाकि समाचार लिखे जाने तक मुकदमा दर्ज नही किया गया था।

पुलिस के सामने मारपीट का वीडियो वायरल

रायबरेली, चसं। सदर कोतवाली के अन्तर्गत डिग्री कालेज चौराहा के निकट बने पुलिस बूथ पर दो लोगों के बीच मारपीट मामूली बातों को लेकर होने लगा।जिनके बीच मारपीट जमकर हो रहा था वहां पर पुलिस की मौजूदगी भी था किसी राहगीर के द्वारा मारपीट का वीडीओ बनाकर सोशल मीडिया में वायरल कर दिया गया।जिसमें मारपीट का दृश्य साफ साफ दिख रहा है।जिसके बाद पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया।सदर सीओ ने बताया कि मारपीट का वीडीओ के आधार पर मारपीट करने वालों की शिनाख्त किया जा रहा है साथ ही वहां पर तैनात पुलिस कर्मियों की भूमिका भी जांच किया जा रहा है।

मंदिर के दानपेटी से पैसा चोरी का वीडियो वायरल

रायबरेली, चसं। मिलएरिया थाना क्षेत्र के झारखंडेश्वर मंदिर है।जिस मंदिर के दान पेटी से विगत 6 माह से अपने आप पैसा गायब होने से तंग होकर वहां पर सीसी कैमरा लगवाया गया।जिसमें मंदिर के दान पेटी से पैसा चोरी करने वाले युवक का वाक्या सीसी कैमरे में कैद हो गया।जिसका वीडीओ सोशल मीडिया में वायरल किया गया।मिलएरिया थाना प्रभारी ने बताया कि वायरल वीडीओ के आधार पर आरोपी युवक की शिनाख्त हेतु पुलिस की टीम लगाया गया है।

प्रधान अपने पुत्रों के साथ दलित को दौड़ाकर पीटा

रायबरेली, चसं। दैनिक मजदूर मजदूरी लेकर वापस होते दौरान पुरानी रंजिस को लेकर ग्राम प्रधान ने अनुसूचित जाति के मजदूर को लाठी डंडो से दौड़ा दौड़ाकर पीट दिया जिससे उनके बीच बचाव करने आए तीन अन्य को भी हमला करके उनको भी लहूलुहान कर दिया है।जिसमें ग्राम प्रधान समेत तीन के खिलाफ एफआईआर दर्ज किया गया है। जिले के सलोन कोतवाली के गांव दुबहन है।जिस गांव के सुरेश सरोज 30वर्ष अपने गांव के राजेन्द्र उपाध्याय के यहां दैनिक मजदूरी लाने हेतु गया था जहां से अपने घर के लिए जाते दौरान पुरानी रंजिस को लेकर प्रधान अपने दो पुत्रों के साथ लाठी डंडो से हमला कर दिया।जिससे सुरेश लहूलुहान हो गया जिसके बीच बचाव करने आए राजेन्द्र उपाध्याय 58वर्ष ;अभिषेक उपाध्याय 28वर्ष;आनन्द उपाध्याय 33वर्ष निवासीगढ़ दुबहन पर भी आरोपी हमला कर करके लहूलुहान कर दिया।जिनको पुलिस के द्वारा सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया गया।सलोन कोतवाली प्रभारी ने बताया कि घायल की ओर से सुरेश पासी की तहरीर पर प्रधान कमलेश पटेल;अक्षत व अमित पटेल निवासीगण गांव दुबहन के खिलाफ संबंधित धाराओ में एफआईआर दर्ज कर लिया गया है।जिनके गिरफ्तारी के प्रयास जारी है।

उल्टीदस्त से वृद्ध की हालत बिगड़ी, मौत

रायबरेली, चसं। ऊंचाहार कोतवाली के गांव सुमेरबाग मजरे रायपुर निवासी हरपाल 62वर्ष को उल्टीदस्त होने पर हालत गंभीर बिगड़ गई जिनको परिजन के द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ऊंचाहार में लाते दौरान रास्ते में मौत हो गई है।मृतक के पुत्र अशोक कुमार ने बताया कि उल्टीदस्त से पीड़ित होने पर सीएचसी में ले जाते दौरान रास्ते में मौत हो गई है।सीएचसी के अधीक्षक ने बताया कि वृद्ध को मृतक अवस्था में लाया गया था।

डेढ़ लाख के जेवर महिला से दो टप्पेबाजों ने उड़ाया

रायबरेली, चसं। सदर कोतवाली के अन्तर्गत गोलचौराहा के निकट कलावती पत्नी रामसेवक निवासिनी फिरोजगांधीनगर के साथ दो उचक्कों ने झूठबोलकर झांसे में लेने के बाद मंगलसूत्र व कान के सोने के टप का टप्पेबाजी करके फरार हो गए।जिसकी सूचना पर पुलिस ने जांच पड़ताल जब तक करते उचक्कों का सुराग नही लगा पाई है।सदर कोतवाली निरीक्षक ने बताया कि सीसी कैमरे के मदद से तलाश किया जाएगा जिसको लेकर सीसी कैमरे के रिकार्ड एकत्र किये जा रहे हैं।

70 हजार का झांसा खाते से 10 हजार उड़ाया

रायबरेली, चसं। डलमऊ थाना क्षेत्र के गांव पूरे नया मजरे सोंड़ासी निवासी मनीष कुमार पुत्र रामखेलावन के मोबाइल पर फोन अज्ञात टप्पेबाज का आया कि गलती से आपके एकाउण्ट में 70 हजार रूपए चला गया है।हमें जरूरत है दस हजार तत्काल आनलाइन मोबाइल से उनके बताए एकाउंट में दस हजार रूपए भेज दिया जब खाता चेक किया तो उनके खाते में पैसा 70हजार रूपए आया भी नही था। पीड़ित ने थाना में लिखित शिकायत किया है।थाना प्रभारी ने बताया कि प्रकरण की जांच पड़ताल करवाया जा रहा है।

रेलवे ट्रैक पर मिला युवक का शव

रायबरेली, चसं। बछरावां थाना क्षेत्र के गांव खैरानी निकट रेलवे ट्रैक पर संदिग्ध परिस्थितियो में युवक का शव मिला है।युवक का शव मिलने के बाद अलग अलग चर्चाएं थी।उधर थाना प्रभारी ने बताया कि युवक की षिनाख्त विवके सिंह 21वर्ष पुत्र करूणा सिंह निवासी गांव खैरहनी के रूप में हो गई है।युवक देहरादून से वाराणसी एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आने से मृत्यु हुई है।शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेजा है।

युवक का संदिग्ध परिस्थितियों में मिला शव, हत्या का आरोप

रायबरेली, चसं। मिल एरिया थाना क्षेत्र के अन्तर्गत देवानंदपुर स्थित धर्मकाटा के निकट मनीष सोनकर 25वर्ष का संदिग्ध परिस्थितियो में शव मिला है।मृतक के परिजन राधेश्याम ने मृतक मनीष सोनकर की हत्या करके फेंकने का आरोप लगाया गया है जिसको लेकर सीओ से लेकर अन्य पुलिस अधिकारी मौके पर फोरेसिंक टीम के साथ पहुंच घटनास्थल पर घटना से संबंधित साक्ष्य संकलन किया है।मिलएरिया थाना प्रभारी ने बताया कि युवक का शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया गया है।जिसकी रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई किया जाएगा।

युवक का फांसी से लटका मिला शव

रायबरेली, चसं। डलमऊ थाना क्षेत्र के गांव लालूकापुरवा मजरे हींगामऊ निवासी विवेक कुमार उर्फ मोनू पुत्र चन्द्रमोहन यादव का फांसी के फंदे से लटकता शव उनके ही घर के कमरे में मिला है।जिनके फांसी लगाने को लेकर तरह तरह की चर्चाएं थी। थाना प्रभारी ने बताया कि युवक का शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेजा गया है।

हाईकोर्ट के जज वाहन के टायर फटे, बाल-बाल बचे

रायबरेली, चसं। ऊंचाहार कोतवाली के मदारीगंज के निकट लखनऊ से प्रयागराज मार्ग पर प्रयागराज से लखनऊ की ओर परिवार के साथ हाईकोर्ट के जज के जाते दौरान उनकी कार अनियंत्रित एक व्यक्ति को बचाने के चक्कर में हो गया।जिससे जज के चालक के हैंडब्रेक लगाने पर जज के वाहन के चारों पहिया के टायर फट गए लेकिन उसमें सवार सभी बाल बाल बच गए।ऊंचाहार कोतवाली प्रभारी ने बताया कि जज समेत उनका परिवार सुरक्षित बच गए है जिनको दूसरे वाहन से रवाना कर दिया गया है।

3300 स्थानों पर होलिका दहन के बाद उड़ा गुलाल

रायबरेली, चसं। होली का त्योहार को जिले के 3300स्थानो पर होलिका दहन किया गया।जिसके बाद रंग व गुलाल की बौछार की शुरूआत पुरानी परंपरा के तहत उड़ने लगा।पुराने गिले शिकवे मिटाकर भाईचारा का पर्व होली पे एक दूजे से गले मिलकर लोग बधाई दिया।कहीं मिरदंग तो कहीं ढोलक;झांझ व मंजीरा के बीच होली के भाग गीत गाए तो वहीं एक दूजे को बधाई देने के लिए सोशल मीडिया में स्ट्राग्राम;व्हाट्सएप;फेसबुक में देते रहे तो मोबाइल तक में काल करके बधाई देने का परंपरा का दौर चला तो घरो में मेहमानों व होली मिलने वाले आगुंतको को तरह तरह के व्यजंन का लुत्फ उठाने का दौर भी होली मिलन के दौर चला।जिसको लेकर पुलिस व प्रशासनिक टीम अलग अलग अपने बनाए प्वाइंटो में तैनात होकर निगरानी करती रही।

संक्षिप्त समाचार

रेलवे पुलिस ने बिछड़ी मासूम को परिजनों से मिलाया

लखनऊ, चसं। ऑपरेशन मुस्कान के तहत शाहजहांपुर से जम्मू यात्रा के लिए प्लेटफॉर्म एक पर ट्रेन का इंतजार कर रहे परिवार से बिछड़े दो वर्ष के मासूम को जीआरपी शाहजहांपुर टीम ने सर्च ऑपरेशन से 20 मिनट में प्लेटफार्म न चार से बरामद कर मासूम को परिवार से मिलाया। पुलिस अधीक्षक रेलवे लखनऊ के निर्देशन में पुलिस उपाधीक्षक रेलवे के पर्यवेक्षण में प्रभारी निरीक्षक रेहान खान के नेतृत्व में ऑपरेशन मुस्कान के तहत दिनांक शाहजहाँपुर रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नं. एक पर एक मासूम बच्ची उम्र करीब दो वर्ष जो खेलते खेलते कहीं गायब हो गई जिसके सम्बन्ध में थाना जीआरपी शाहजहाँपुर पर परिजन द्वारा सूचना दी गई। सूचना मिलते ही तत्काल प्रभारी निरीक्षक द्वारा स्वयं के निर्देशन में टीम गठित कर ऑपरेशन मुस्कान के तहत सम्पूर्ण प्लेटफार्म पर सर्च अभियान चलाकर महज 20 मिनट के अन्दर बच्ची को सकुशल बरामद कर बच्ची को उसके परिजनों को सुपुर्द कर सराहनीय कार्य किया गया। रेलवे स्टेशन पर आने जाने वाले यात्रियो द्वारा थाना जीआरपी पुलिस की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

वाशिंग मशीन में शार्ट सर्किट से फ्लैट में लगी आग

लखनऊ, चसं। शीश महल के पास पारस अपार्टमेंट में शार्ट सर्किट से आग लग गई। रात आठ बजे घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंचे अग्निशमन कर्मियों ने आग को बुझाया है। इस दौरान घर के लोग आग की चपेटे में आने से बच गए। मुख्य अग्निशमन अधिकारी ने बताया कि आग की सूचना पर दो गाड़ियां चौक फायर स्टेशन से और एक गाड़ी हजरतगंज फायर स्टेशन से घटनास्थल पर भेजी गई। आग पारस अपार्टमेंट के दूसरे मंजिल पर लगी थी। फ्लैट में काफी धुआं होने के कारण मेन गेट से कमरे से फ्लैट में नहीं जा मिल रहा था। इसके कारण चौक फाइट स्टेशन की टीम ने बाहर की तरफसे एक सीढ़ी लगाकर अग्निशमन कर्मी को होज पाइप के साथ ऊपर भेजा। आग थोड़ा काबू होने के बाद अग्निशमन कर्मियों की दूसरी टीम मेन गेट से अंदर गई। इस दौरान पानी की बौछार डालकर आधे घंटे बाद आग पर काबू पाया जा सका। वहीं, आग कमरे के बाथरूम में एक वॉशिंग मशीन में शॉर्ट सर्किट की वजह से लगी थी। कमरे का ज्यादातर सामान सुरक्षित बचा लिया गया। इस दौरान कोई भी जनहानि नहीं हुई। आग सैयद मेजबान हैदर आब्दी के घर में लगी थी। घटना के बाद परिवार के लोग कमरे से बाहर निकल गए थे।

होलिका दहन का लोगों ने एक-दूसरे को रंग लगाकर बधाई दी

लखनऊ, चसं। यूपी में रविवार को शुभ मुहूर्त में 11.13 बजे जगह-जगह होलिका दहन किया गया। लोगों ने विधि-विधान से पूजा की। साथ ही एक-दूसरे को रंग लगाकर होली की बधाई दी। कई जगह लोग होली के गीतों पर थिरकते नजर आए। मंदिरों में भजन-कीर्तन की दौर भी चला। सबसे पहले लखनऊ में होलिका दहन हुआ। इसके बाद पूरे प्रदेश में होली जली। कानपुर, अलीगढ़ से लेकर मुरादाबाद, वाराणसी में होली का उत्साह देखा गया। इससे पहले होली के अवसर पर यूपी के सभी शहरों में लोगों ने जमकर रंग-गुलाल खेला। यहां लखनऊ, आगरा, मथुरा, वाराणसी, गोरखपुर, झांसी, मेरठ, प्रयागराज और कानपुर में लोगों ने जोश-खरोश के साथ एक-दूसरे को बधाई दी और मुंह मीठा कराया। ऑफिसों में डांस किया। बाजारों में रौनक दिखी। कई शहरों में होली बारात निकाली गई। गोरखपुर में होली के साथ दिवाली भी मनाई गई। वहीं, अलीगढ़ में होली का खुमार जमकर छाया हुआ है। अलीगढ़ संवेदनशील जिला है। ऐसे में होली और रमजान को देखते हुए प्रशासन ने मिश्रित आबादी वाले इलाकों में मस्जिदों को काली पन्नी से ढक दिया गया है, जिससे कि मस्जिदों में रंग न जाए। बाबरी मस्जिद के पूर्व मुद्दई इकबाल अंसारी ने कहा कि सभी को त्योहार मिलकर मनाना चाहिए। सभी धर्मों को एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना चाहिए।

सफाईकर्मी का संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी के फंदे से लटका मिला शव

लखनऊ, चसं। मोहनलालगंज कोतवाली क्षेत्र के गौरा गांव में मगंलवार की देर रात संदिग्ध परिस्थितियों में सफाईकर्मी का शव नीम के पेड़ की डाल में साड़ी के फंदे के सहारे लटका मिला। परिजनो ने बेटे का शव नीम के पेड़ से लटकता देखा तो कोहराम मच गया। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक सफाईकर्मी के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा। प्राप्त जानकारी के अनुसार मोहनलालगंज के गौरा गांव में परीदीन रावत अपनी पत्नी रामावती व तीन बेटो आकाश,अरविंद,रोहित व दो बेटियों गुड़िया व मेनका के साथ रहते है.छोटा बेटा रोहित (19 वर्ष) मोहनलालगंज नगर पंचायत में संविदा पर सफाईकमर्चारी था.बीते मगंलवार को होली पर रोहित ने अपने परिजनो व पड़ोसियो के साथ जमकर रंग खेला था। बड़े भाई अरविंद ने बताया रात 11बजे के करीब घर से कुछ दूर पर जानवरो को बंधाने के लिये बने बाड़े में लगे नीम के पेड़ की डाल में छोटे भाई रोहित का साड़ी के फंदे के सहारे संदिग्ध परिस्थितियों में शव लटकता देखा वो चीख पड़ा जिसके बाद परिजन मौके पर पहुंचे तो कोहराम मच गया। परिजनो ने बताया दिन में बाइक से रोहित मोहनलालगंज गया था लौटते समय फुलवरिया मोड़ पर उसकी बाइक दूसरी बाइक से टकरा गयी थी जिसमें हाथ व पैर में चोटे भी आयी थी।जिसके कुछ घंटो बाद ही रोहित के आत्महत्या करने से पूरा परिवार सन्न रह गया। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक सफाई कर्मी के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा।

ए री सखी मंगल गाओ जी, गाकर मनाई होली

डिप्टी सीएम बृजेश पाठक और केशव प्रसाद मौर्य ने लोगों से मिलकर दी बधाई

होली पर निकाली शोभायात्रा

डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने ऊंट पर बैठकर पूर्व उप मुख्यमंत्री पर डाला रंग

लखनऊ, चसं। लोकसभा चुनाव का समय चल रहा है। चारों तरफ राजनीति पर चर्चाओं का बाजार गर्म है, लेकिन होली के दिन हर कोई होली के रंग में रंगना चाहता है,खुशियां मनाना और झूमना चाहता है। फिर चाहे वह आम आदमी हो या फिर राजनेता। राजधानी में सोमवार को होली के दिन सुबह से ही चारों तरफहर्षो उल्लास का माहौल था। हर कोई होली के रंग में रंगा हुआ था, कहीं नाच गाना तो कहीं थिरकना जारी रहा। इस दौरान राजधानी के चौक इलाके में बीजेपी के दो बड़े नेता एक दूसरे पर पिचकारी से रंग डालते नजर आए। जी हां हम बात कर रहे हैं उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक और पूर्व डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा की। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ऊंट पर सवार थे और पिचकारी से दिनेश शर्मा पर रंग डाल रहे थे, तो वहीं दूसरी तरफपूर्व उपमुख्यमंत्री दिनेश शर्मा भी डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक पर पिचकारी से रंग डालने में पीछे नहीं रहे। होली पर्व पर राजधानी स्थित खाटू श्याम मंदिर पर सोमवार के दिन भारी तादाद में भक्त इकट्ठा हुए और जमकर होली खेली, एक दूसरे को गुलाल लगाया और होली की शुभकामनाएं दी। इससे पहले भक्तों ने भगवान खाटू श्याम के दर्शन कर आशीर्वाद मांगा। होली के पर्व पर राजा बाजार में एक शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमें भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया। इस दौरान लोगों ने जमकर रंग और गुलाल भी उड़ाए। यह शोभा यात्रा लखनऊ हरिश्चंद्र वंशीय होलीकोत्सव समिति की तरफसे निकाली गई। शोभा यात्रा में भगवान गणेश, मां दुर्गा, भगवान शंकर, मां पार्वती के स्वरूप का भक्तों ने दर्शन किया।

चर्चित राजनीति। संवाददाता

लखनऊ। होली के मौके पर भाजपा की तरफ से कई जगहों पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने हजरतगंज स्थित राज भवन आवास पर होली मिलन समारोह का आयोजन किया। इसमें आए पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को गुलाल और रंग लगाकर गले मिलकर होली की शुभकामनाएं दी है।

भाजपा नेता नीरज सिंह ने गोमतीनगर स्थित आईएमआरटी कॉलेज में होली मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें भजन गायक किशोर चतुर्वेदी ने भजन हमारे राम बड़े हितकारी, होली खेल रहे नंदलाल.., आज बृज में होली, ए री सखी मंगल गाओ गाकर लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। मौके पर लोग ढोल नगाड़े पर डांस करते रहे हैं। इस दौरान एक दूसरे को जमकर अबीर और गुलाल लगाया गया है। कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और राज्यसभा सांसद डॉ दिनेश शर्मा ने भी कार्यकर्ताओं के साथ होली खेली है। मौके पर आरएसएस के अवध प्रांत प्रचारक कौशल, महापौर सुषमा खर्कवाल, पूर्व मंत्री महेंद्र सिंह, प्रदेश महामंत्री संजय राय, मुख्यमंत्री मुख्य सलाहकार अवनीश अवस्थी, विधायक डॉ. नीरज बोरा, बीकेटी विधायक योगेश शुक्ला, एलएमसी मुकेश शर्मा, राम चंद्र प्रधान, पवन चौहान, अपर्णा विष्ठ, उपविजेता रजनीश गुप्ता, अंजनी श्रीवास्तव, भाजपा महानगर महामंत्री त्रिलोक चंद्र अधिकारी, पुष्कर शुक्ला, उपाध्यक्ष धनश्याम दास अग्रवाल, विवेक सिंह तोमर, टिंकू सोनकर, सौरभ वाल्मीकि सहित अन्य लोग कार्यक्रम में शामिल हुए हैं। आलमबाग स्थित कार्यालय पर लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने होली उत्सव का कार्यक्रम किया। इसमें उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने शामिल हुए। उन्होंने कार्यकताओं को बधाई दी है। मौके पर भाजपा महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कहा कि होली का त्योहार आपसी प्रेम और सद्भाव का त्योहार है।

भाजपा लखनऊ महानगर कार्यकताओं ने अबीर गुलाल लगाकर मनाया होली उत्सव

चर्चित राजनीति। संवाददाता

लखनऊ। उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक द्वारा हजरतगंज स्थित राज भवन के 9 नंबर आवास पर अपराहन होली मिलन समारोह आयोजन जिसमे उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने आए हुए सभी पदाधिकारियों एवम कार्यकर्ताओ को गुलाल रंग लगाकर गले मिलकर शुभकामनाएं दी।

वहीं शाम को भाजपा वरिष्ठ नेता नीरज सिंह द्वारा आयोजित गोमतीनगर स्थित आईएमआरटी कॉलेज में होली मिलन कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध भजन गायक किशोर चतुर्वेदी ने भजन हमारे राम बड़े हितकारी, होली खेल रहे नंदलाल.., आज बृज में होली से राशियां, ए री सखी मंगल गाओ.. भजनों की प्रस्तुति से समा बांध रखा। यहां सभी भाजपा के पदाधिकारियों ने एक दूसरे को अबीर गुलाल लगाकर खुशी मनाई। एक दूसरे के गले मिलकर होली की शुभकामनाएं दीं। ढोल नगाड़े व होली के गीतों पर सभी ने डांस किया। भाजपा महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कहा कि होली का त्योहार आपसी प्रेम और सद्भाव का त्योहार है। गोमतीनगर स्थित आईएमआरटी कॉलेज के होली मिलन समारोह में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या, राज्यसभा सांसद डॉ दिनेश शर्मा, अवध प्रांत प्रचारक कौशल, महापौर सुषमा खर्कवाल, पूर्व मंत्री महेंद्र सिंह, प्रदेश महामंत्री संजय राय, मुख्यमंत्री मुख्य सलाहकार अवनीश अवस्थी, उत्तर विधायक डॉ नीरज बोरा, बीकेटी विधायक योगेश शुक्ला, एलएमसी मुकेश शर्मा, राम चंद्र प्रधान, पवन चौहान, अपर्णा विष्ठ, उपविजेता रजनीश गुप्ता, अंजनी श्रीवास्तव, भाजपा महानगर महामंत्री त्रिलोक चंद्र अधिकारी, पुष्कर शुक्ला, विधायक धनश्याम दास अग्रवाल, विवेक सिंह तोमर, टिंकू सोनकर, सौरभ वाल्मीकि, मीडिया प्रभारी प्रवीण गर्ग, अनुराग साहू कार्यक्रम में उपस्थित रहे। रविवार को आलमबाग स्थित कार्यालय पर लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने होली उत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया जिसमे उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने शिरकत किया। साथ ही बड़ी संख्या में पदाधिकारी, पार्टी के कार्यकता उपस्थित रहे।

ब्रज की तर्ज पर श्री राधाकृष्ण संग फूलों की होली का आयोजन

चर्चित राजनीति। संवाददाता

लखनऊ। सनातन महासभा की ओर से झूलेलाल वाटिका, गोमती तट पर प्रत्येक पूर्णिमा पर आयोजित होली फाल्गुन पूर्णिमा पर आयोजित सनातन महा समागम एवं 123वी आदि गंगा माँ गोमती महाआरती का आयोजन रविवार को किया गया।

मंगलाचरण, स्वस्तिवाचन, पुष्पांजलि व शंखनाद के साथ हरिद्वार की तर्ज पर 7 भव्य मंचो से, पूज्य स्वामी आनंद नारायण जी,स्वामी हरेंद्र गिरी जी, देवेंद्र शुक्ल के सानिध्य में हुई। महाआरती में मृदंग, मंजीरा, ढोल, तासे, शंख का खूब प्रयोग किया गया। अध्यक्ष डॉ. प्रवीण ने बताया कि बच्चों द्वारा विभिन्न देवताओं के रूप में महाआरती के पूर्व कार्यक्रम का आरंभ मोनिका अग्रवाल के गणेश वंदना और पूनम विष्ट के होली नृत्य से हुआ। शशि गुप्ता के नेतृत्व में रंगोली भी बनाई गई, सभी को प्रमाण पत्र व पगड़ी से सम्मानित किया गया। इसके बाद भव्य श्री राधाकृष्ण संग फूलों की होली का आयोजन बृज की होली की तर्ज पर हुआ बाद में महाआरती का संयोजन कर रहे महासभा के अध्यक्ष डॉ. प्रवीण व महासचिव देवेंद्र शुक्ल ने बताया कि महाआरती के बाद 501 दीपो से घाट दिवाली की तरह जगमगा उठा साथ ही सभी ने सम्पूर्ण मतदान करने को लेकर संकल्प लिया और सभी ने राष्ट्रीय महासचिव देवेंद्र शुक्ल व डॉ आहुति बाजपेयी ओझा के नेतृत्व में शत प्रतिशत मतदान हेतु संकल्प दीपो से सभी भक्तों को कराया। इस भव्य कार्यक्रम का संचालन प्रवक्ता विकास मिश्र ने किया। भक्तो को अपनी मिमिक्री से मनोज सारस्वत ने हँसते हँसाते धर्म का ज्ञान तमाम फिल्मी कलाकारों व राजनेताओ की आवाज में दिया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि रूप में न्यायमूर्ति रंगनाथ पांडेय एवं योगी जी पूर्व सांसद प्रतिनिधि विष्णु शंकर श्रीवास्तव उपस्थित रहे। कार्यक्रम के बाद में भक्तों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया। हर बार की तरह सनातन शिरोमणि सम्मान से वरिष्ठ समाजसेवी को न्यायमूर्ति एवं मुख्यमंत्री जी के सलाहकार रंगनाथ पांडेय, योगी जी के पूर्व सांसद प्रतिनिधि विष्णु शंकर श्रीवास्तव, बीजेपी नेत्री नीलिमा त्रिपाठी, पप्पू यादव व कोमल द्विवेदी को, सम्मानित किया गया। बाद में 21 विशेष सनातन पदाधिकारियों व सदस्यों को गंगाजल व कृपाण देकर धर्म विस्तार हेतु संकल्पित कराया गया। इस मौके पर सीपी अवस्थी, रामकिशोर शुक्ल, डॉ. आहुति बाजपेयी, रवि कचरू, एड. शैलेन्द्र श्रीवास्तव,संजीव पांडेय, विश्वनाथ शुक्ल, कोमल द्विवेदी, नविता द्विवेदी, अर्जुन द्विवेदी, शोभित सिंह, कमल कपूर,आशीष द्विवेदी, शुभम खरे, तेज सिंह, रेनू शर्मा, मुकेश आनंद मौजूद रहे। सहयोगी संस्थाओं में अ.भा ब्रह्म समाज, पनुन कश्मीर, विनायक ग्रामोउद्योग,अरोड़ा डिपार्टमेंटल स्टोर,फोरसी वेलफेयर संस्थान के सदस्य भी उपस्थित रहे।

देवर और भाभी के मिले शव गांव वाले बोले–हत्या की गई

चर्चित राजनीति। संवाददाता

- पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में इटौंजा में रविवार सुबह देवर-भाभी के शव मिले हैं। महिला का शव खेत में पड़ा था। वहीं, 100 मीटर की दूरी पर एक युवक का शव भी पेड़ से लटका मिला। गांव वालों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। छानबीन करने पर शवों की पहचान विमला और उसके चचेरे देवर रमेश के तौर पर हुई। दोनों शनिवार सुबह से लापता थे। ग्रामीणों ने कहना है कि विमला की हत्या की गई है। वहीं, रमेश ने फांसी लगाकर खुदकुशी की है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है।

अहमदपुर निवासी नरेश की पत्नी विमला शनिवार सुबह घर से कहीं गई थी। वहीं, चचेरा भाई रमेश भी काम पर जाने की बात कह कर निकला था। शाम गुजरने के बाद भी दोनों लोग घर नहीं लौटे। विमला की तलाश रहे नरेश को पता चला कि उसका चचेरा भाई रमेश भी घर नहीं आया है। दोनों के मोबाइल नंबर भी नहीं मिल रहे थे। जिससे परिवार वाले घबरा गए। आस-पास तलाश करने पर भी कोई जानकारी नहीं मिल सकी। रविवार सुबह गांव वालों ने नरेश को बताया कि विमला का शव खेत में पड़ा हुआ है। वहीं 100 मीटर की दूर पर रमेश का शव फंदे से लटका है। यह जानकारी मिलने पर नरेश परिवार के साथ मौके पर पहुंचा। इसके बाद लोगों ने इसकी सूचना इटौंजा थाना पुलिस को दी। सूचना मिलने पर इटौंजा थाना प्रभारी मार्कंडेय यादव पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। साथ ही फोरेंसिक टीम को भी बुलाया गया। जहां जांच-पड़ताल करने के बाद शव का पंचनामा भरकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया।घ् इस बारे में थाना प्रभारी ने बताया कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद कार्रवाई की जाएगी। ग्रामीणों ने पुलिस के सामने रमेश और विमला की हत्या किए जाने का आरोप लगाया। वहीं, परिवार वाले कुछ भी कहने को तैयार नहीं हैं।

रमेश ने पुलिस को बताया कि वह पत्नी को तलाश रहा था। जानकारी नहीं मिलने पर सुबह थाने जाकर गुमशुदगी दर्ज कराने की बात सोची थी। लेकिन उससे पहले ही विमला और रमेश के शव मिलने की सूचना आ गई।

भाजपा हटाओ, नौकरी पाओ, अखिलेश यादव बोले युवाओं की एकजुट शक्ति से हार जाएगी बीजेपी

चर्चित राजनीति। संवाददाता

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ (जेएनयू) के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) की पराजय और अध्यक्ष पद पर दलित प्रत्याशी चुने जाने को पीडीए (पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक वर्ग) की सामूहिक जीत करार दिया है। अखिलेश यादन ने युवाओं को लोकसभा चुनाव में सतर्क रहने की अपील करते हुए कहा कि ईवीएम पर नजर रखें और ''जीत का सुबूत दिए जाने तक आराम न करें।

उन्होंने कहा कि ''युवा विरोधी भाजपा सभी युवाओं की एकजुट शक्ति से हार जाएगी। जेएनयूएसयू ने लगभग तीन दशक बाद रविवार को अपना पहला दलित अध्यक्ष चुना जो वाम समर्थित समूह से है। संयुक्त वामपंथी पैनल ने रविवार को जेएनयूएसयू चुनाव में अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) समर्थित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) को सभी पदों पर शिकस्त दी। सपा प्रमुख ने सोशल मीडिया मंच एक्स लिखा, ''पीडीए की एकजुटता ने जेएनयू छात्र संघ चुनाव में समेकित रूप से सभी महत्वपूर्ण पदों पर जीत हासिल की है और भाजपा समर्थित एबीवीपी को भारी अंतर से बुरी तरह हराया है। दलित अध्यक्ष सहित सभी विजयी पदाधिकारियों और उन्हें चुनने वाले सजग, सतर्क मतदाता विद्यार्थियों को भी बहुत बधाई। जेएनयू की नकारात्मक छवि बनाने वालों को आगे भी यूँ ही हराते रहने एवं देशहित में सकारात्मक राजनीति का झंडा फहराते रहने के लिए शुभकामनाएं। उन्होंने कहा, ''जेएनयू के छात्रों की तरह देश भर के युवा आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा राज में फैली 'अभूतपूर्व बेरोजगारी, पेपर लीक होने की वजह से कहीं 'नौकरी न मिलने की हताशा और 'चुनावी बॉन्ड के रूप में फैले भाजपा के 'अथाह भ्रष्टाचार को हमेशा के लिए दूर करने के लिए, महंगी पढ़ाई एवं चतुर्दिक महंगाई से त्रस्त अपने परिवारों और आसपास के लोगों को भी भाजपा के खिलाफमतदान करने के लिए प्रेरित करेंगे। यादव ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा, ''इस बार लोकसभा एवं अन्य चुनावों में युवा मतदान स्थल पर आखिरी क्षण तक फर्जी मतदान पर सजग निगाह रखनेय ईवीएम के सील बंद होनेय ईवीएम रखने के स्थान तक मशीनों के सुरक्षित पहुंचनेय ईवीएम के गोदामों पर 24 घंटे हर तरफसे चतुर्दिक चौकीदारी करने, किसी को ईवीएम गोदामों के आस पास फटकने न देने के लिए लामबंद रहनेय मतगणना के दिन सक्रिय रहकर हर तरह से नजर रखने व चुनाव परिणाम आने एवं जीत का प्रमाण पत्र न मिल जाने तक डटे रहने का काम करें।

होली पर खूनी संघर्ष मायावती ने जताया दुख

लखनऊ, चसं। उत्तर प्रदेश के बिजनौर में अनुसूचित जाति के परिवारों पर जानलेवा हमला करने की घटना पर बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमो मायावती ने दुख जताया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट डालकर इस घटना को निंदा की है और आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है। बसपा सुप्रीमो मायावती ने एक्ट पर ट्वीट कर लिखा, जिला बिजनौर में नजीबाबाद के मुखत्यारपुर गांव में सामंती तत्वों द्वारा दलित परिवारों पर प्राणघातक हमले में अनेक लोगों के घायल होने की घटना गंभीर व अति-दुःखद। सरकार एससी,एसटी एक्ट के तहत दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करे ताकि चुनावी माहौल न बिगड़े। चुनाव आयोग भी इसका संज्ञान ले।

दरअसल, नजीबाबाद के गांव मुख्तियापुर में कल यानी होली के दिन मामूली विवाद को लेकर दो पक्ष आपस में भिड़ गए। इस दौरान दोनों पक्षों के बीच जमकर खूनी संघर्ष हुआ। दोनों तरफसे धारदार हथियार भी चले। इसमें कई लोग घायल हुए और एक की हालत गंभीर बनी हुई है।

लोकसभा चुनाव : बसपा के मुस्लिम दांव से विपक्ष का बिगड़ सकता है खेल

चर्चित राजनीति। संवाददाता

- सात सीटों पर मुस्लिम वोटों का बंटवारा होने से त्रिकोणीय मुकाबला होने के आसार

लखनऊ। लोकसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी के इस बार ज्यादा मुस्लिम उमीदवार उतारने से विपक्ष का सियासी खेल खराब हो सकता है। इस फैसले से सपा-कांग्रेस गठबंधन को बसपा कड़ी चुनौती देने जा रही है।

सात सीटों पर मुस्लिम वोटों का बंटवारा होने से त्रिकोणीय मुकाबला होने के आसार हैं। राजनीतिक जानकार बताते हैं कि बसपा ने जो 16 प्रत्याशियों की अपनी पहली सूची जारी की है, जिसमें सात सीटों पर मुस्लिमों को तरजीह देकर इंडिया गठबंधन के लिए मुश्किल खड़ी कर दी है। हालांकि पार्टी की पहली सूची में कोई महिला उम्मीदवार नहीं है। तीन सुरक्षित सीटों पर भी पार्टी ने अपने प्रत्याशी घोषित किए हैं। बसपा की इस रणनीति से इंडिया गठबंधन को नुकसान उठाना पड़ सकता है। विधानसभा चुनाव में भी बसपा की रणनीति कुछ ऐसी ही थी। पार्टी भले ही एक सीट पर सिमट गई, लेकिन कई सीटों पर सपा की हार के अंतर से अधिक वोट उसके उम्मीदवारों को मिले थे। वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक वीरेंद्र सिंह रावत कहते हैं कि पहली सूची में सात मुस्लिम प्रत्याशियों को उतार कर बसपा ने अतीत में पश्चिमी उप्र में सफलता पूर्वक आजमाए गए दलित-मुस्लिम गठजोड़ पर फिर दांव लगाने का इरादा जताया है। वहीं, प्रत्याशियों के चयन में मुस्लिम चेहरों को तरजीह देकर उसने इंडिया गठबंधन की राह मुश्किल करने का संकेत दिया है। अन्य सीटों पर भी विभिन्न जातियों के प्रत्याशी खड़ा कर सोशल इंजीनियरिंग के प्रयोग को विविधता दी है। बसपा ने जिन 25 सीटों के लिए प्रत्याशी घोषित किए हैं, उनमें से उसने चार सीटें-सहारनपुर, बिजनौर, नगीना व अमरोहा, पिछले लोकसभा चुनाव में जीती थीं। इस बार भी बसपा ने अपना सोशल इंजीनियरिंग का फार्मूला खड़ा करने का प्रयास किया है। उनको सफलता कितनी मिलती है, यह तो आने वाला वक्त बताएगा। बसपा के प्रदेश अध्यक्ष विश्वनाथ पाल कहते हैं कि बसपा ने अपने नारे के अनुसार, जितनी जिसकी हिस्सेदारी, उतनी उसकी भागीदारी के मुताबिक यूपी के लोकसभा चुनाव में उम्मीदवार उतारे हैं। इस पर उनको ही तकलीफ होगी जिसने इस फार्मूले पर उम्मीदवार नहीं उतारे होंगे। विपक्ष को गलत सवाल नहीं उठाने चाहिए। उत्तर प्रदेश में 20 फीसदी मुस्लिम है तो उसी आधार पर टिकट दे रहे हैं। बसपा किसी जाति मजहब में भेदभाव नहीं कर रही है।

सपा के लोग भाजपा के साथ मिलकर सामान्य सीट पर अनुसूचित जाति के उम्मीदवार उतारकर बसपा के बेस वोट काटने का काम कर रहे हैं। इंडिया गठबंधन से रालोद, महान दल, संजय चौहान और अपना दल सब गठबंधन तोड़ चुके हैं। विपक्ष के पास कुछ बचा नहीं है। पश्चिम से पूरब तक इनके पास बचा क्या है।

पति ने बेल्ट से पीटकर पत्नी को मार डाला

लखनऊ, चसं। लखनऊ में शराब के नशे में पति ने पत्नी की पीटकर हत्या कर दी। मंगलवार सुबह नशा उतरा तो देखा कि पत्नी मरी पड़ी है। पुलिस के डर से आरोपी पति मौके से फरार हो गया है। बिजनौर थाना पुलिस हत्या की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर आरोपी की तलाश कर रही है। बिजनौर थाना क्षेत्र के चंद्रावल का माजरा सहदुल्ला खेड़ा में चंद्रावती और सुरेश अपने बच्चों के साथ रहते थे। पुलिस के मुताबिक, आरोपी सुरेश मजदूरी करता है। रोज शराब पीकर घर पहुंचता था। इसके बाद मारपीट करता था।

होली की रात में भी सुरेश शराब के नशे में घर पहुंचा। इसके बाद रात में सुरेश ने पत्नी चंद्रावती की पिटाई की। रात के समय में पत्नी को नशे में धुत पति ने खूब पीटा। इससे चंद्रावती के माथे और चेहरे पर कई जगहों चोट लग गई। बुरी तरह से चोट लगने के बाद चंद्रावती ने दम तोड़ दिया। 14 साल पहले सुरेश और चंद्रावती की शादी हुई थी। दोनों के चार बच्चे हैं। शिवा (13) कुरौनी स्थित स्कूल में कक्षा 9वीं का छात्र है। सुशांत (9) सादुल्लाह खेड़ा स्थित सरकारी स्कूल में 5वीं का छात्र है। पांच वर्ष का बेटा आयुष और बेटी कविता भी है।

मन की एकाग्रता ही समग्र ज्ञान है, बल ही जीवन है और दुर्बलता मृत्यु, मौन, क्रोध की सर्वोत्तम चिकित्सा है, दिल और दिमाग के टकराव में दिल की सुनो, खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है : स्वामी विवेकानंद

संपादकीय

मॉस्को में आतंकी हमला दुखद

व्लादिमीर पुतिन द्वारा रूस के पांचवीं बार राष्ट्रपति बनने के महज पांच दिनों के भीतर ही देश की राजधानी मॉस्को में भीषण आतंकी हमला हुआ जिसमें लगभग 145 लोगों के मारे जाने की खबर है जो बहुत दुखद है। बड़ी संख्या में लोग घायल भी हुए हैं। सुरक्षा कर्मचारियों ने 100 से ज्यादा लोगों को बचा लिया। इसकी जिम्मेदारी दोषी संगठनों एवं इस हत्याकांड से जुड़े लोगों को सजा दिये जाने की जरूरत तो है, लेकिन निर्दोष नागरिकों या उस देश की इसमें अनावश्यक संलिप्तता न बतलाई जाये जो इसके जिम्मेदार न हों।दोषियों के खिलाफकार्रवाई भी कानून के अनुसार हो, न कि किसी अन्य तरीके से। रविवार को मरने वालों को श्रद्धांजलि देने के लिये पूरे रूस में राष्ट्रीय शोक रहा। हमले की ही रात पुतिन ने देशवासियों को सम्बोधित किया। नेशनल सेक्यूरिटी कांउसिल के डिप्टी चेयरपर्सन दिमित्री मेदवेदेव ने तो साफकर दिया है कि श्खून का बदला खून से लिया जायेगा'। सुरक्षा एजेंसियों ने चार आतंकियों को गिरफ्तार भी कर लिया है। वह वीडियो भी जमकर वायरल हो रहा है जिसमें एक गिरफ्तार हमलावर बयान देकर अपराध कुबूल कर रहा है। पहले बताया जा रहा था कि हमला करने वालों की संख्या 5 है। सुरक्षा एजेंसियों द्वारा तहकीकात के बाद ही पूरी वस्तुस्थिति सामने आएगी। उल्लेखनीय है कि शुक्रवार की रात राजधानी के कोकस सिटी हॉल में पांच आतंकियों ने अंधाधुंध गोलीबारी कर हॉल को जलाने की कोशिश की। 2009 में बना क्रोकस सिटी हॉल में कुछ बड़े सभागार हैं और यह स्थल लोगों के मनोरंजन का एक प्रमुख स्थल है। इस हमले की जिम्मेदारी आतंकी संगठन आईएसआईएस के खुरासान विंग ने ली है। उसने मॉस्को के बाहरी इलाके में क्रास्नोगार्क शहर में ईसाइयों की एक सभा में भी हमला करने की जानकारी दी और बताया कि उसके सदस्य हमला कर मौके से निकल जाने में कामयाब हो चुके हैं। अभी इस पर विस्तृत बयान आना बाकी है। उत्तर पूर्वी ईरान, दक्षिणी तुर्केमेनिस्तान तथा उत्तरी अफगानिस्तान में सक्रिय इस संगठन को खुरासान के कारण आईएसआईएस-के कहा जाता है। 2014 से सक्रिय इस संगठन में रूस के अनेक लड़ाके शामिल बतलाये जाते हैं। इस संगठन का आरोप है कि पुतिन सरकार वहां के इस्लामी धर्मावलम्बियों पर अत्याचार करती है। चेचन्या एवं सीरिया में रूसी कार्रवाइयों के कारण तो इस संगठन की नाराजगी है ही, सोवियत काल में अफगानिस्तान में हुई सैन्य कार्रवाई से भी वह बेहद खफा है।रूसी सरकार की नाराजगी जायज है और यह भी सच है कि वहां के लोग इस हमले से बेहद दुखी हैं, जो कि स्वाभाविक है। फिर भी इस शोक की घड़ी में संतुलन और विवेक को बनाये रखने की आवश्यकता है। रूस में बड़ी संख्या में मुसलिम रहते हैं। पुतिन ने कहा है कि इस हमले के जरिये दो समुदायों को बांटने की कोशिश की जा रही है। सरकार ऐसा होने नहीं देगी। रूसी सरकार को यह भी शंका है कि इस हमले के पीछे यूक्रेन का हाथ हो सकता है। इस पर यूक्रेन सरकार ने बयान दिया है कि श्ये आरोप यूक्रेन के खिलाफयुद्ध का उन्माद बढ़ाने के लिये लगाये जा रहे हैं। यह अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी में यूक्रेन को बदनाम करने की कोशिश है। इसके जरिये यूक्रेन के विरूद्ध रूसी नागरिकों को लामबन्द किया जा रहा है।' देखना यह होगा कि इस घटना और तत्सम्बन्धी लगाये जा रहे रूसी आरोपों को लेकर अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में किस तरह की प्रतिक्रिया होती है। रूस एवं यूक्रेन के बीच पिछले लगभग सवा साल से जंग जारी है। पश्चिमी देश नाटो (नॉर्थ एटलांटिक ट्रिटी ऑर्गेनाइजेशन) के माध्यम से यूक्रेन के साथ खड़े हैं।

प्रभु श्रीराम मंदिर ने भारतीय समाज को एक किया

हमारे शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि दोनों हाथों से कमाएं जरूर, परंतु अपने लिए न्यूनतम आवश्यक राशि रखकर शेष सारा पैसा सेवा और परोपकार के माध्यम से समाज को वापिस कर दें। सुचेता पर चलना यानी पवित्रता होनी चाहिए और पवित्रता के लिए संयम होना चाहिए। लोभ नहीं करना, संयम में रहना और शासन द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना, अपने जीवन में अनुशासित रहना, अपने कुटुंब को अनुशासन में रखना, अपने समाज में अनुशासन में रहना तथा सामाजिक जीवन में नागरिक अनुशासन का पालन करना आदि कुछ ऐसे नियम हैं जिनके अनुपालन से भारत को वैश्विक स्तर पर एक अलग पहचान दिलाई जा सकती है।

22 जनवरी 2024 का दिन भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा क्योंकि इस दिन श्री अयोध्या धाम में प्रभु श्रीरामलला के विग्रहों की एक भव्य मंदिर में समारोह पूर्वक प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। इस प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में पूरे देश से धार्मिक, राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के शीर्ष नेतृत्व तथा समस्त मत, पंथ, सम्प्रदाय के पूजनीय संत महात्माओं की गरिमामय उपस्थिति रही थी। इससे निश्चित ही यह आभास हुआ है कि प्रभु श्रीराम मंदिर ने भारत में समस्त समाज को एक कर दिया है। यह भारत के पुनरुत्थान के गौरवशाली अध्याय के प्रारम्भ का संकेत माना जा सकता है।

सामान्यतः किसी भी भवन का ढांचा नीचे से ऊपर की ओर जाता दिखाई देता है परंतु प्रभु श्रीराम मंदिर के बारे में यह कहा जा रहा है कि प्रभु श्रीराम का यह मंदिर जैसे ऊपर से बनकर आया है और पृथ्वी पर स्थापित कर दिया गया है। इस भव्य मंदिर को त्रिभुवन का मंदिर भी कहा जा रहा है। तमिलनाडु के एक बड़े अधिकारी, जो कला के जानकार हैं, का तो यह भी कहना है कि इस प्रकार की नक्काशी से सज्जित मंदिर शायद पिछले 1000 वर्षों में तो बनता हुआ नहीं दिखाई दिया है। इस मंदिर में प्रभु श्रीराम के विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा के समय लगभग समस्त समाज के लोग पूजा सम्पन्न कराने के उद्देश्य से बिठाए गए थे। पूजा सम्पन्न कराने के लिए माननीय पंडितों को देश के लगभग समस्त राज्यों से लाया गया था। देश में लगभग 150 संत महात्माओं की परम्पराएं हैं जैसे गुरु परम्परा, दार्शनिक परम्परा आदि। ऐसी समस्त परम्पराओं के संत महात्माओं की भागीदारी प्राण प्रतिष्ठा समारोह में रही। साथ ही, सामाजिक जीवन के कई क्षेत्रों के प्रमुख नागरिकों की भी इस समारोह में भागीदारी रही, जैसे खेल, साहित्य, लेख, कला, मीडिया, प्रशासन, आदि। कुल 18 श्रेणियों के नागरिकों को इस समारोह में भाग लेने हेतु आमंत्रित किया गया था। जिन लगभग 4000 श्रमिकों ने इस मंदिर के निर्माण में अपना योगदान दिया था उनमें से 600 श्रमिकों, इंजीनियरों एवं सुपर्वायजर आदि की भी इस कार्यक्रम में भागीदारी करवाई गई। 22 जनवरी 2024 के पवित्र दिन श्रीअयोध्या धाम के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 60 चार्टर हवाई जहाज आए थे। कुल मिलाकर व्यवस्थाएं इतनी अच्छी थीं कि किसी भी नागरिक को श्री अयोध्या धाम में प्रवेश करने में किसी भी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हुई थी। मंदिर परिसर में भी समस्त नागरिकों को अपनत्व लगा था। ऐसा लगा कि स्वर्ग में पहुंच गए हैं एवं मंदिर परिसर में दैवीय अनुभूति हुई। आज भारत एवं अन्य देशों से लगभग 2 लाख श्रद्धालु प्रभु श्रीरामलला के दर्शन हेतु श्री अयोध्या धाम प्रतिदिन पहुंच रहे हैं। 15 से 17 मार्च 2024 को नागपुर में सम्पन्न हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में प्रभु श्रीराम मंदिर के निर्माण पर एक प्रस्ताव पास किया गया है। इस प्रस्ताव में यह कहा गया है कि भारत में सम्पूर्ण समाज हिंदुत्व के भाव से ओतप्रोत होकर अपने 'स्व' को जानने तथा उसके आधार पर

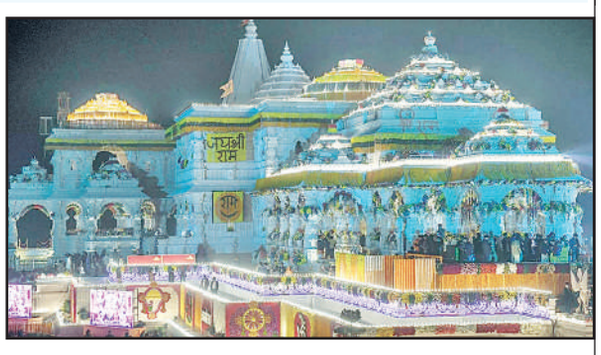

जीने के लिए तत्पर हो रहा है। अब जब प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण हो चुका है अतः अब भारत के समस्त नागरिकों के संदर्भ में अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह सुविचरित मत है कि सम्पूर्ण समाज अपने जीवन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों को प्रतिष्ठित करने का संकल्प ले, इससे राम मंदिर के पुनर्निर्माण का उद्देश्य सार्थक होगा। प्रभु श्रीराम के जीवन में परिलक्षित त्याग, प्रेम, न्याय, शौर्य, सद्भाव एवं निष्पक्षता आदि धर्म के शाश्वत मूल्यों को आज समाज में पुनः प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। सभी प्रकार के परस्पर वैमनस्य और भेदों को समाप्त कर समरसता से युक्त पुरुषार्थी समाज का निर्माण करना ही प्रभु श्रीराम की वास्तविक आराधना होगी। इसी दृष्टि से, अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा समस्त भारतीयों का आह्वान करती है कि बंधुत्व भाव से युक्त, कर्तव्य निष्ठ, मूल्य आधारित और सामाजिक न्याय की सुनिश्चितता करने वाले समर्थ भारत का निर्माण करें, जिसके आधार पर वह एक सर्व कल्याणकारी वैश्विक व्यवस्था का निर्माण करने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर सकेगा। यदि भारतीय समाज एक होगा तो भारत को पुनः एक बार विश्व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित करने में आसानी होगी। श्री अयोध्या धाम में नव निर्मित प्रभु श्रीराम मंदिर ने न केवल भारतीय समाज को एक किया है बल्कि इससे भारत की आर्थिक प्रगति में चार चांद लग रहे हैं। देश में धार्मिक पर्यटन की जैसे बाढ़ ही आ गई है। न केवल भारतीय नागरिक बल्कि अन्य देशों में रह रहे भारतीय मूल के लोग भी प्रभु श्री राम के दर्शन करने हेतु श्री अयोध्या धाम पहुंच रहे हैं। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के लाखों नए अवसर विकसित हो रहे हैं। भारतीय समाज में एकरसता आने से भारत में मनाए जाने वाले विभिन्न त्यौहारों को भी बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जा रहा है जिससे आपस में भाईचारा बढ़ता दिखाई दे रहा है। यदि मां भारती को विश्व गुरु बनाना है तो भारत में निवास कर रहे समस्त नागरिकों में एकजुटता स्थापित करनी ही होगी। भारत में मजबूत राजनैतिक स्थिति, मजबूत लोकतंत्र, मजबूत सामाजिक स्थिति, मजबूत सांस्कृतिक धरोहर होने के चलते विश्व के अन्य देशों का भारतीय सनातन संस्कृति पर विश्वास बढ़ रहा है जिसे भारत के वैश्विक स्तर पर पुनरुत्थान के रूप में देखा जा सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूज्य सर संघचालक मोहन भागवत जी भी अपने एक उदबोधन में कहते हैं कि राम राज्य के सामान्य नागरिकों का जो वर्णन शास्त्रों में मिलता है, उसी का आचरण आज हमें करना चाहिए क्योंकि हम भी इस गौरवमय भारतवर्ष की संताने हैं। आज हमें राम राज्य के समय नागरिकों द्वारा किए जाने वाले आचरण को अपनाने हेतु तप करना पड़ेगा, हमको समस्त प्रकार के कलह को विदाई देनी पड़ेगी। समाज में आपस में अलग अलग मत हो सकते हैं, छोटे छोटे विवाद हो सकते हैं, इन्हें लेकर आपस में लड़ाई करने की आदत छोड़ देनी पड़ेगी। राम राज्य के समय नागरिकों में अहंकार नहीं हुआ करता था वे बगैर अहंकार के आपस में मिलजुलकर काम करते थे। श्रीमद् भागवत में बताया गया है कि जिन चार मूल्यों की चौखट पर धर्म का निवास रहता है, वे चार मूल्य हैं - सत्य, करुणा, सुचिता और तपस। राम राज्य में इन मूल्यों का अनुपालन नागरिकों द्वारा किया जाता था। भागवत जी आगे कहते हैं कि आज की परिस्थितियों के बीच नागरिकों द्वारा आपस में समन्वय रखकर व्यवहार करना यह धर्म का ही प्रथम पायदान है। दूसरा कदम माना जाता है धर्म का आचरण अर्थात सेवा और परोपकार करना। केंद्र सरकार एवं अन्य कई राज्य सरकारों द्वारा चलाई जा रही कई योजनाएं गरीबों को राहत दे रही है। आज इस संदर्भ में सब कुछ हो रहा है लेकिन भारत के नागरिक होने के नाते हमारा भी तो कुछ कर्तव्य है।

:: एजेंसी

भाजपा की राजनीतिक चाल और केजरीवाल का कानूनी संघर्ष

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने प्रवर्तन निदेशालय द्वारा अपनी गिरफ्तारी के खिलाफअपनी अपील शुक्रवार को सर्वोच्च न्यायालय से वापस ले ली। शीर्ष अदालत याचिका पर सुनवाई करने के लिए तैयार थी जब केजरीवाल के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने अपील वापस लेने की बाद की, जिसे सॉलिसिटर-जनरल तुषार मेहता ने कहा कि केजरीवाल के वकील ने इसका इस्तेमाल अदालत को गुमराह करने' के लिए किया था। मेहता ने कहा, मैंने ईडी से कहा था कि जब तक इस अदालत द्वारा मामले का निपटारा नहीं हो जाता, तब तक उसे रिमांड के लिए पेश न करें।' इससे पहले, सिंघवी ने कहा था कि याचिका वापस ली जा रही है क्योंकि यह रिमांड से टकरा रही है।' इस नाटक के अलावा, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी आम आदमी पार्टी के लिए इससे अधिक महत्वपूर्ण मोड़ पर और क्या हो सकती थी। हालांकि यह महत्वपूर्ण बात है कि दिल्ली का मुख्यमंत्री कौन है, यह केजरीवाल की चिंताओं में सबसे नीचे है।

भाजपा का कहना है कि यह एक विशुद्ध रूप से कानूनी मामला' है, जबकि आप का कहना है कि कांग्रेस के साथ आप के गठबंधन के बाद दिल्ली की संसदीय सीटों पर भाजपा के सामने आप की चुनौती को रोकने के लिए यह उसकी एक विशुद्ध राजनीतिक चाल' है। बता दें कि भाजपा को यकीन नहीं है कि वह दिल्ली की 7 लोकसभा सीटों को बरकरार रख पायेगी जो उसने 2014 और 2019 में जीती थीं। क्या होगा अगर अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए दिल्ली में बढ़त की संभावना के विपरीत स्थिति हो जाये? दिल्ली के मतदाता केजरीवाल को सहानुभूति के साथ-साथ वोट भी दे सकते हैं। संकट के इस समय में आम आदमी पार्टी काले बादलों की उम्मीद की किरण पर भरोसा कर रही है। कागज पर, यह संभव है कि दिल्ली के मतदाता प्रतिशोधात्मक ताकत के साथ भाजपा पर पलटवार करेंगे। बेशक, चिंता है कि आप दबाव में बिखर सकती है। वहां नेतृत्व शून्यता है। कई अन्य लोगों की तरह, केजरीवाल ने भी पार्टी प्रमुख के रूप में उनकी जगह लेने के लिए किसी को नहीं छोड़ा। योगेन्द्र यादव, किरण बेदी, प्रशांत भूषण और कुमार विश्वास आदि, सूची बहुत लंबी है। जब तक केजरीवाल अपना विकल्प नहीं खोज लेते -एक वफादार मंडली नहीं ढूंढ लेते या अपनी पत्नी को दिल्ली पर थोप नहीं देते, तब तक आप को नुकसान होगा। आप मंत्री आतिशी मार्लेना और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान को समुचित फैसला लेना होगा। आम चुनाव नजदीक होने के कारण, केजरीवाल के लिए इस गिरफ्तारी से अधिक बुरा समय और क्या हो सकता है। केजरीवाल प्रवर्तन निदेशालय के साथ जो समन का खेल खेल रहे थे, उसका परिणाम सामने आया। नरेंद्र मोदी का भूत अब आम आदमी पार्टी को परेशान कर रहा है, जबकि भाजपा दिल्ली के राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन की बात कर रही है,

भाजपा ने केजरीवाल की गिरफ्तारी को पूरी तरह से कानूनी मामला' करार दिया है। दूसरी ओर आम आदमी पार्टी इसे पूरी तरह से राजनीतिक करार दे रही है। दिल्ली का नियंत्रण और शासन दांव पर होने के कारण, आप और गठबंधन सहयोगी कांग्रेस दोनों आशावादी हैं कि इंडिया गठबंधन दिल्ली लोकसभा चुनावों में शानदार प्रदर्शन करेगा। आप मंत्री आतिशी मार्लेना ने कहा, आप संविधान की रक्षा के लिए भाजपा से लड़ रही है... हमें उम्मीद है कि सर्वोच्च न्यायालय भारत के लोकतंत्र की रक्षा करेगा।' मार्लेना की थाली में बहुत कुछ है।

और उसका कहना है कि अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी से इसमें मदद मिलेगी। जैसे कि किसी ने लिखा, राज्य के मतदाता मूल रूप से इस समय एक जम्प बॉल हैं', जिसका अर्थ है कि केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद एक बड़ा हिस्सा अनिर्णयित मतदाताओं' का हो गया है। स्थिति से परिचित एक व्यक्ति ने कहा, नवीनीकृत दिल्ली शराब नीति सभी परेशानियों का कारण है। ऐसा कहा जा रहा है कि इस समय यह कल्पना करना कठिन है कि कौन किसे बाहर कर रहा है?कागज पर, मोदी का पलड़ा भारी है। लेकिन 4 जून को भाजपा के लिए दिल्ली में 7/7 होने की संभावना नहीं है। विशेषकर तब नहीं जब कांग्रेस मुश्किल में फंसी आम आदमी पार्टी के साथ मजबूती से खड़ी है और आप के साथ-साथ भाजपा भी बहुत प्रतिस्पर्धी है। इस बार नतीजे भाजपा के लिए उतने अच्छे नहीं होंगे जितने पहले हुआ करते थे। कांग्रेस-आप गठबंधन गेम-चेंजर साबित होगा, भले ही हालिया इतिहास भाजपा के पक्ष में रहा हो।कांग्रेस के साथ, एक बड़ा मुस्लिम वोट होगा, जिसके आप को भी वोट देने की संभावना है। कर्नाटक विधानसभा चुनाव के बाद से, मुस्लिम मतदाता चाहे बारिश हो या धूप, कांग्रेस को वोट देने के लिए उत्सुक हैं। स्कूलों और स्वास्थ्य क्लीनिकों पर आप के संदेश उसके वोट-बैंक के साथ गूंजेंगे और भाजपा कथित तौर पर विपक्ष को समान अवसर से वंचित करने के लिए हर संभव कोशिश कर रही है। केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद संभावना है कि दौड़ की गतिशीलता केजरीवाल की पार्टी के अनुकूल होगी, हालांकि केजरीवाल की अनुपस्थिति महसूस की जायेगी क्योंकि कोई भी पार्टी अकेले अपनी उपलब्धियों के भरोसे नहीं रह सकती। साथ ही, मोदी की भाजपा बदली हुई स्थिति का लाभ उठाने के लिए खुद को तेजी से आगे लायेगी। जब तक आम आदमी पार्टी यह तय नहीं कर लेती कि क्या करना है और कैसे मुकाबला करना है और सफल होना है, तब तक भाजपा निश्चिंत रहेगी। कुछ बिंदु पर, केजरीवाल ने गलत अनुमान लगाया। अब, आप को भ्रष्टाचार के रंग में रंग दिया गया है, जो कि अनुचितता की एक सामान्य बीमारी का लक्षण है जो राजनीति को परेशान कर रही है। अरविंद केजरीवाल का मुख्यमंत्री बने रहना और तिहाड़ से दिल्ली पर शासन करना एक मूर्खतापूर्ण प्रस्ताव है। मोदी सरकार दिल्ली को आप सरकार से मुक्त कराने के लिए मौके का फायदा उठायेगी।आप को एक नये मुख्यमंत्री की पहचान करनी चाहिए और दिल्ली पर शासन जारी रखना चाहिए। केजरीवाल का तिहाड़ से दिल्ली का शासन चलाना केंद्रीय हस्तक्षेप के जोखिम से भरा है। यह आप के लिए व्यापक नेतृत्व आधार बनाने का भी एक अवसर है। भारतीय जनता पार्टी आरामदायक स्थिति में है क्योंकि उसका दिल्ली का सपना सच हो गया है। दिल्ली सरकार को घोटालों में दोषी ठहराने की पार्टी की रणनीति काम कर गई है। आबकारी नीति और दिल्ली जल बोर्ड' घोटाले पर की गई कार्रवाई भाजपा की योजना के अनुसार चली। बहुत ही राजनीतिक कारणों से, केजरीवाल हमेशा डीजेबी घोटाले' और आबकारी नीति' घोटाले दोनों में, मोदी सरकार के निशाने पर थे। दिल्ली के मुख्यमंत्री को डीजेबी घोटाले' में भी समन जारी किया गया है। भारतीय जनता पार्टी की योजना केजरीवाल को भ्रष्टाचार के चेहरे' के रूप में चित्रित करने की है और केजरीवाल की गिरफ्तारी के साथ भाजपा का आधा काम हो गया है।

:: एजेंसी

नेता जी की कोठी में मदनोत्सव

वैसे तो नेता जी की कोठी में उत्सव होना कोई नई बात नहीं है। इधर चुनावों का बिगुल बजता है, उधर नेता जी के घर उत्सव शुरू हो जाता है। दारू की पेटियां पहुंचने लगती हैं। शौकीनों की बहार आ जाती है। दो घूंट अंदर जाते ही 'जिंदाबाद-जिंदाबाद' के नारों से पूरी कोठी गुंजायमान हो जाती है। नेताजी के चुनाव जीतने के बाद तो उत्सव लगातार कई दिन चलता है। पूरी कोठी रंगीन लाइटों से

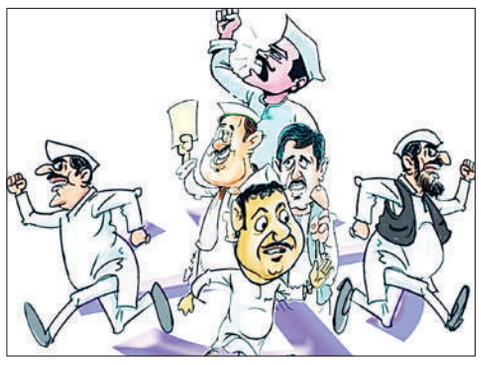

जगमग करने लगती है। बधाई देने के लिए जब थोड़ा रुतबे वाले लोग आते हैं तो जाहिर है कि दारू के ब्रांड भी सुपीरियर हो जाते हैं। अब सड़क छाप समर्थकों की बजाय धन्ना सेठों और ब्यूरोक्रेट्स की गाड़ियां नेताजी की कोठी की शोभा बढ़ाने लगती हैं। नेताजी जब अपने राजयोग को और मजबूत करने के लिए मंगल, केतु, राहु और शनि जैसे ग्रहों को साध लेते हैं और बिल्ली के भाग्य से छींका फूटने की तर्ज़ पर जब उन्हें झंडी वाली गाड़ी मिल जाती है तो फिर उत्सवों का सिलसिला स्थायी रूप धारण कर लेता है। उनके घर जाती रोड वीआईपी रोड में तब्दील हो जाती है। पायलट गाड़ी नेताजी के आगे पीछे लग जाती है। उनकी पांचों उंगलियां घी में और सिर कड़ाही में हो जाता है। यानी उत्सवों का नशा सिर चढ़कर बोलने लगता है। नेताजी का रोम-रोम उत्सवमय हो जाता है। उत्सवों की अंतहीन श्रृंखला में पहली मर्तबा नेताजी की कोठी पर मदनोत्सव का आयोजन हुआ। अफसर और अफसरनियां तो गुलाल लेकर आए ही, नेताजी की कई चेलियां भी वहां खिलखिलाती हुई नमूदार हो गई। उनके चेहरे रंग से इतने पुते हुए थे कि यह पता लगाना मुश्किल था कि उनमें शीला कौन है, लीला कौन है और बसंती कौन! नेताजी एक संत की तरह विनम्रता की प्रतिमूर्ति बने अपने चेहरे पर रंग लगवाए जा रहे थे और बीच-बीच में किसी-किसी से कनखियों में बतियाये भी जा रहे थे। उनके चेहरे की रंगत और आंखों का नूर देखते ही बनता था। वे अच्छे खासे सिद्ध पुरुष मालूम पड़ रहे थे। मदनोत्सव के लिए नेता जी ने क्या क्या प्लानिंग कर रखी है, यह जानने की उत्सुकता खाकसर के भीतर कुलांचे भर रही थी। जेहन में लगातार नए नए आइडिया दस्तक दे रहे थे। एक आइडिया ने दिमाग में ऐसी सरगोशी की कि खाकसार भी पैंट, कोट, हैट और काला चश्मा लगाकर किसी सुपर हीरो की तरह मस्ती से डग भरते और सिक्योरिटी गार्डों का सलाम कबूलते हुए भीतर पहुंचने में कामयाब हो गया। फिर किसी मंझे हुए एंकर की तरह अपने मोबाइल से नेताजी की कोठी में चल रहे मदनोत्सव का नजारा लाइव दिखाना शुरू कर दिया। अब लोग लाइव देख रहे हैं और क्या देख रहे हैं किज नेताजी को रंग लगाने दूसरे दलों के नेता भी आए हैं। जिनके खिलाफ नेताजी आए रोज बयानों के गोले छोड़ते हैं, वे भी नेताजी की बगल में विराजमान हैं। एक-दूसरे को कोहनियां मार रहे हैं। एक दूसरे के कान में फुसफुसा रहे हैं। स्माइल पर स्माइल दे रहे हैं। ऐसे लग रहा है जैसे दोनों विरोधी नहीं बल्कि एक ही थैली के चट्टे बट्टे हों। राजनीति में पार्टनर हों। एक दूसरे के कारनामों के राजदार हों। लोग लाइव देख रहे हैं कि नेताजी भीतर से पुरानी ढोलकी उठा लाए हैं और ढोलकी पर थाप देते हुए नृत्य की मुद्रा में आ गए हैं। उनके समर्थक 'जय हो' का नारा लगा रहे हैं और नेताजी ठुमक ठुमक कर होली के रंग हवा में बिखेर रहे हैं। उनकी भाव भंगिमाएं सभी को चकित कर रही हैं। नेताजी लीडर होने के साथ-साथ अच्छे खासे नर्तक भी हैं, ऐसा दृश्य पहली बार लोग देख रहे हैं। लोग तालियां बजा रहे हैं। एक अति उत्साही समर्थक ने डीजे बजाना भी शुरू कर दिया है। मदनोत्सव अपने शबाब पर है। खाकसार ने भी लाइव कवरेज बीच में छोड़कर नेताजी की एक चेली के साथ नाचना शुरू कर दिया है।

अरुणाचल पर चीन की बद-दिमागी

भारत के तिब्बत से सटे राज्य अरुणाचल प्रदेश के बारे में चीन शुरू से ही अनर्गल दावे ठोकता रहा है जिनका माकूल जवाब भारत की सरकारें समय-समय पर देती रही हैं। चीन मूलतः विस्तारवादी व सैनिक दिमाग वाला कम्युनिस्ट देश है। इसी वजह से इसने 1962 में भारत पर आक्रमण करके हमारी पीठ में छुरा घोंप दिया था। इस चीनी आक्रमण के समय इसकी फौजें असम के तेजपुर तक पहुंच गई थीं। इससे पहले चीन ने तिब्बत को जबरन अपने कब्जे में ले लिया था जिसकी स्थिति 1949 तक एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में थी। इसी वर्ष चीन में कम्युनिस्ट क्रान्ति हुई थी और यह उपनिवेशवादी शक्तियों से आजाद हुआ था। आजाद होते ही इसने सबसे पहले तिब्बत को हड़पा। इसके बाद इसकी विस्तारवादी नजरें हमारे राज्य 'नेफा' पर गड़नी शुरू हुई जिसे अब 'अरुणाचल प्रदेश' कहा जाता है। 1962 में भारत पर आक्रमण करके इसने तिब्बत से सटे 'अक्साई चीन' के इलाके पर भी कब्जा कर लिया। हकीकत तो यह है कि भारत पर ब्रिटिश हुकूमत के दौरान ही 1914 में भारत, चीन व तिब्बत के बीच सीमाओं का निर्धारण कर दिया गया था और तीनों के बीच सीमाओं को बांटने वाली रेखा खींच दी गई थी जिसे मैकमोहन रेखा कहा जाता है। मगर चीन ने इस रेखा को यह कहते हुए मानने से इन्कार कर दिया था कि तिब्बत एक स्वतन्त्र राष्ट्र नहीं है बल्कि यह चीन का ही हिस्सा है। इसके बाद 1947 में भारत के आजाद होने के बाद इसने भारत व चीन के बीच वास्तविक नियन्त्रण रेखा खींचने की मांग

मनमोहन सरकार ने जब अरुणाचल के लिए आर्थिक पैकेज दिया था तो चीन ने इसका भी विरोध किया था। अतः चीन की ढिठाई भारत के लोग भलीभांति समझ सकते हैं। भारत की संसद के भीतर ही मनमोहन शासनकाल में यह मांग भी उठी थी कि जम्मू-कश्मीर की भांति ही इसमें एक प्रस्ताव पारित किया जाये जिसमें यह घोषणा हो कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न अंग है।

तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू से की जिन्होंने उसकी इस मांग को ठुकरा दिया। मगर 1959 में जब चीन ने तिब्बत को रौंदा तो पं. नेहरू ने इससे सटे 'नेफा' क्षेत्र में भारतीय प्रशासन को बहुत चुस्त-दुरुस्त कर दिया और तिब्बत पर उसके कब्जे को खारिज कर दिया। 1962 में उसके भारत पर आक्रमण करने की यह पृष्ठभूमि थी। इस हमले के बाद जब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के पक्ष में माहौल बना तो इसने अपनी फौजों को वापस बुला लिया मगर अक्साई चीन का 36 हजार वर्ग किलोमीटर का इलाका अपने कब्जे में रखा जिसे भारत आज भी अपना इलाका मानता है। इसके बाद 2003 तक चीनी मोर्चे पर यथास्थिति बनी रही हालांकि बीच-बीच में चीन भारतीय क्षेत्रों में फौजी अतिक्रमण करता रहा जिसका हर बार भारत के रणबांकुरों ने उसे माकूल जवाब दिया।

मगर 2003 में केन्द्र में स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के रहते चीन के साथ सीमावर्ती क्षेत्र के बारे में एक समझौता हुआ जिसके तहत भारत ने तिब्बत पर उसके कब्जे को स्वीकार किया और तिब्बत को चीन का एक स्वायत्तशासी क्षेत्र स्वीकार कर लिया। इसके एवज में चीन ने सिक्किम प्रान्त को भारत का हिस्सा स्वीकार किया। सिक्किम रियासत का भारत में विलय स्व. प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी के शासनकाल 1974 में हुआ था। 2003 में भारत ने चीन की बहुत बड़ी मांग स्वीकार कर ली थी क्योंकि उस समय भी भारत में तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा की निर्वासित सरकार चल रही थी। सबसे बड़ा सितम यह हुआ था कि 2003 में तिब्बत को चीनी हिस्सा मानने के बाद ही चीन ने अपने देश का जो मानचित्र प्रकाशित किया था उसमें अरुणाचल प्रदेश को अपना भाग दिखाया गया था। चीन की इस हरकत पर भारत की संसद में बहुत हंगामा हुआ था। भारत ने तब इस मुद्दे पर चीन को कड़ा विरोध पत्र लिखा था। मगर इसके बावजूद चीन पर कोई असर नहीं पड़ा और वह किसी भी सत्तारूढ़ राजनीतिज्ञ के अरुणाचल प्रदेश के दौरे पर आपत्ति जताता रहा। 2004 में केन्द्र में डा. मनमोहन सिंह की कांग्रेस नीत यूपीए सरकार काबिज होने पर भी यही रुख अपनाये रखा। जब अपने शासन के दौरान प्रधानमंत्री के रूप में डा. मनमोहन सिंह अरुणाचल की यात्रा पर गये तो उसने इसका विरोध किया और अरुणाचल को अपना हिस्सा बताया। भारत की सरकार ने तब इसका कड़ा विरोध किया मगर दोनों देशों के बीच सीमा तय करने हेतु एक कार्यकारी दल बनाया जिसमें भारत की तरफसे राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और चीन की तरफ से ऐसी ही हैसियत रखने वाले मंत्री को मनोनीत किया गया। तब से लेकर अब तक इस कार्यदल की दो दर्जन के लगभग बैठकें हो चुकी हैं मगर नतीजा कुछ नहीं निकल पाया है। हालांकि दोनों पक्ष इस बात को लेकर आगे चल रहे हैं कि जो इलाका जिस देश के प्रशासनिक नियंत्रण में है उस पर उसी का कब्जा माना जाये लेकिन इसके बावजूद चीन अरुणाचल प्रदेश में भारत की सरकार द्वारा कराये जा रहे विकास कार्यों पर आपत्ति दर्ज करता रहता है।

:: चर्चित डेस्क

आज का राशिफल

मेषः- परिवार की छोटी-छोटी बातों बाहरी लोगों से न कहें। भावना से उद्वेलित मन संबंधियों के सुख-दुख के प्रति चिंतित होगा। किसी नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य रंग लायेगी। रोजगार में व्यस्तता रहेगी।

वृषभः- हर घटना से आपको सीख लेने की जरूरत है। नये क्षेत्र में निवेश से पूर्व जानकार लोगों से विचार-विमर्श करें। भविष्य के प्रति निराशाजनक विचारों को मन पर हावी न होने दें। नये व्यावसायिक यात्राओं का योग है।

मिथुनः- निकट संबंधों में मधुर संवाद से अपनी सुंदर छवि बनायें। कुछ महत्वपूर्ण अभिलाषाओं की पूर्ति होने के आसार हैं। सामान्य दिनर्चया के साथ बीत रहे जीवन में उत्साह का अभाव रहेगा। घर में खुशहाली होगी।

कर्कः- भविष्य संबंधी कुछ चिंताएं उत्पन्न होंगी। किसी कार्य को छोटा-बड़ा समझने के बजाए अपने कर्त्तव्यों का सही ढ़ंग से निर्वहन करें। वर्तमान कार्य से मन असंतुष्ट रहेगा। जरूरी कार्यों में आलस्य का त्याग करें।

सिंहः- पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति हेतु चिंता उत्पन्न होगी। अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें एवं ज

होली पर गुंडों का आतंक, घर में घुसकर मारपीट व पथराव

हरदोई के पिहानी थाना क्षेत्र के नरधिरा गांव में नशेड़ी गुंडों ने मचाया तांडव

चर्चित राजनीति। संवाददाता

हरदोई। उत्तर प्रदेश के हरदोई जनपद के पिहानी थाना क्षेत्र के नरधिरा गांव में दबंगई का आलम रुकने का नाम नहीं ले रहा है। विगत वर्षों गांव में खूनी खेल में कई लोग आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं लेकिन गांव में गुंडई थमने का नाम नहीं ले रही है।

होली के त्यौहार पर जब लोग रंग खेल रहे थे तभी नशे में धुत दबंगों ने एक परिवार के घर के बाहर गाली गलौज शुरू कर दिया। विरोध करने पर पूरी विरादरी के लोगों को बुलाकर हाथों में ईंट, पत्थर डंडे लेकर पहुंचे और परिवार के साथ मारपीट कर महिलाओं से भी अभद्रता की। गनीमत रही कि मोहल्ले के लोगों ने किसी तरह बुजुर्ग दंपत्ति की जान बचाई। अब दबंग घात लगाकर जान से मारने की धमकी दे रहे हैं जिससे परिवार दहशत में है। मौके पर पिहानी थाना की पुलिस पहुंची तो गुंडे घरों में छिप गए। पुलिस ने खेत जाने के लिए अपने भतीजे को बुला रहे एक युवक को बिना मतलब पीट दिया जिससे ग्रामीणों में पुलिस के प्रति आक्रोश व्याप्त है। जानकारी के अनुसार, घटना पिहानी थाना क्षेत्र के नरधिरा गांव की है। यहां के रहने वाले

65 वर्षीय रामऔतार पुत्र स्व. नंदलाल ने बताया की पीड़ित का गांव में किसी से कभी कोई विवाद नहीं हुआ। 25 मार्च 2024 को होली मिलन था तो पीड़ित का पौत्र मिथुन पुत्र श्यामू पिहानी को सेविंग करवाने के लिए पंडरवा के रासिद के साथ बाइक पर गया था। पिहानी से घर आते समय नरधिरा गांव के बाहर अनिल पुत्र दाताराम, दीपक पुत्र लालाराम ने अपनी बाइक से ओवरटेक करके रुकवा लिया। दोनों लोग शराब पिए थे और हाथ में बांका था। दीपक ने गालियां देते हुए कहा कि मिथुन का सिर काट लो, अनिल ने धमकी दी कि तमंचा लेकर आओ और गोली मार दो सालों के, अनिल और दीपक ने रसीद को बहुत मारा। यह बात यहीं खत्म हो गई थी, प्रार्थी के बेटे ने सआदतनगर चौकी पर इसकी सूचना दे दी थी। 26 मार्च 2024 को सुबह दीपक शराब पीकर घर के बाहर आया और माँ बहन की गालियां देने लगा। इस दौरान घर में महिलाएं थी प्रार्थी और उनके पुत्र खेत गए थे। प्रार्थी का बेटा खेत से घर आया तो उसे गाली गलौज की जानकारी मिली। इसके बाद बेटे ने कहा कि बिना किसी बात के घर के बाहर कोई गाली दे तो उसे पकड़ कर मारो। ये बात सुनकर दीपक शराब पीकर आया और माँ बहन की गालियां देने लगा। इस पर श्यामू ने उसे पकड़ा और गाली देने का विरोध किया तो दीपक ने हाथ छोड़ दिया। इस बात पर श्यामू ने उम्र में बड़े होने के नाते उसके एक थप्पड़ मारा और कहा शराब पीकर ये करना उचित नहीं है घर चलो। आरोप है कि दीपक और अनिल नशे में धुत होकर गया और राठौर बिरादरी भर के लोगों को बुला लाया। सभी लोग डंडे, बांका लेकर आये और बुजुर्ग पीड़ित को पकड़कर गला दबाकर जान से मारने की कोशिश की। पीड़ित को बचाने आयी बीमार पत्नी सरोजनी देवी को मारा पीटा। पिटाई होती देख मोहल्ले के लोगों ने बीच बचाव कराने की कोशिश की तो एकजुट हुए नशे में धुत गुंडे मोहल्ले के लोगों को भी धमकी देने लगे। अनिल पुत्र दाताराम, दीपक पुत्र लालाराम, विवेक पुत्र लालाराम, विकास पुत्र राजाराम, सूरज, अजीत उर्फ जीतू, पुत्रगण स्व. ब्रजेश, सचिन पुत्र सुनील उर्फ सुनीत, लेखराम, सुशील पुत्रगण राजेश, रौनक पुत्र राकेश, पीयूष पुत्र महेश्वर, विश्वराज पुत्र संतराम और एक दर्जन अज्ञात लोगों ने घर पर पथराव कर ईट पत्थर से तोड़फोड़ की। आरोप है कि अनिल के हाथ में तमंचा भी था। आरोप है कि दीपक और अनिल ग्राम प्रधान के साथ हर दम रहते हैं इसलिए गांव में शराब पीकर आये दिन गुंडई करते हैं। झगड़े के दौरान ग्राम प्रधान पुष्पेंद्र और उनके भाई मुनेंद्र मौके पर गए। प्रधान ने नशेड़ियों को बड़ी मुश्किल से भगाया। पीड़ित के परिवार में बहुएं और दो जवान पौत्रियां और एक पौत्र रहता है। अब दीपक और अनिल घात लगाकर पौत्र मिथुन को जान से मारने और हाथ-पैर तोड़ने की बात कह रहे हैं। पीड़ित का परिवार दहशत में है और जान का खतरा है। इसलिए पीड़ित ने मुख्यमंत्री और पुलिस से उचित धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर सुरक्षा की गुहार लगाई है। पीड़ित का कहना है कि अगर हमारे परिवार के साथ कोई भी घटना होती है तो इसके जिम्मेदार उपरोक्त सभी लोग होंगे।

विधिविधान से हुआ 170वां होलिका दहन उत्सव

चर्चित राजनीति। संवाददाता

हरदोई। दुलीचंद्र चौराहे पर आयोजित 170 वें होलिकोत्सव के दिन सुबह से ही बाबू दुलीचंद्र चौराहे पर मारवाड़ी समाज की महिलाएं उपवास रख कर पूरे विधि-विधान से गाय के गोबर के बड़कुले (उपलों) और कच्चा सूत जिसे कुकड़ी कहा जाता है, से जीवित होलिका माता की पूजा कर अपने परिवार की लम्बी उम्र की प्रार्थना की हे होलिका माता जिस तरह अपने बालक प्रहलाद की रक्षा की थी उसी तरह इन बच्चों की भी रक्षा करना। महिलाओ द्वारा पूजन का ये सिलसिला देर शाम तक चलता रहा।

इसके उपरांत रात्रि 10:30 बजे होली पुजारी के सरंक्षण में पूरे विधि विधान से होलिका माता की पूजा कर हलवे पूरी का भोग लगा कर होलिका दहन का कार्यक्रम हुआ और जलती होली की परिक्रमा कर निरोगी काया की कामना की गई। होलिका दहन उत्सव में समाज के हर वर्ग की उपस्थिति रही तथा लोगो ने भक्त प्रहलाद की जय व होलिका मैया की जय बोलकर परिवार की उन्नति व् सुख समृद्धि की कामना की।यहां होलिका दहन के तुरंत पश्चात सर्व समाज के सभी लोग एक दूसरे के गले मिलकर और बड़े बुजुर्गों के पैर छूकर उनसे आशीर्वाद लिया।

परिषदीय विद्यालयों के बच्चों को कराया गया एक्सपोजर विजिट

चर्चित राजनीति। संवाददाता

कछौना, हरदोई। राष्ट्रीय आविष्कार अभियान शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम के अन्तर्गत विकास क्षेत्र कछौना के परिषदीय विद्यालयों/उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को एक दिवसीय एक्सपोजर विजिट लखनऊ के विज्ञान आंचलिक केन्द्र के टूर पर भेजा गया। बच्चों को ले जाने वाली दोनों बसों को एआरपी दीपक जायसवाल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, नौनिहालों साथ में स्वंय टूर पर गए। इस अभियान के तहत जाने वाले छात्र/छात्राओं का चयन बीआरसी कछौना पर विज्ञान विषय से संबंधित क्विज परीक्षा से किया गया।

सभी जाने वाले छात्र/छात्राओं को नाश्ता, बैग,कॉपी, जॉमैट्री बॉक्स दिया गया। दोपहर के खाने की व्यवस्था विज्ञान आंचलिक केंद्र में ही की गई। सभी छात्र/छात्राओं ने बहुत आंनद लिया व विज्ञान विषय व उससे संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ हासिल की। इस अवसर पर छात्र/छात्राओं के साथ दस शिक्षकों व दो एआरपी दीपक जायसवाल, एआरपी राजेश व शिक्षकों गण चंद्र प्रकाश, विपिन कुमार, अवधेश शुक्ला, शैलेन्द्र, दीप कुमार, धर्मेन्द्र कुमार, वंदना सिंह, स्नेहा जायसवाल आदि ने बच्चों की सहायता कर उनको जानकारियां दी।

अभियान अपराधी सत्यापन, चेकिंग के दौरान जिला बदर अभियुक्त गिरफ्तार

चर्चित राजनीति। संवाददाता

शाहजहांपुर। अशोक कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में मनोज कुमार अवस्थी, अपर पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) व क्षेत्राधिकारी पुवायां जनपद शाहजहाँपुर के पर्यवेक्षण में चलाये जा रहे अभियान तलाश वांछित,वारन्टी-जिलाबदर अपराधी व रोकथाम अवैध शराब शस्त्र बिक्री-निर्माण एवं चौंकिग संदिग्ध व्यक्ति-वाहनधाश्त के दौरान थाना बण्डा पुलिस को बड़ी सफलता प्राप्त हुई। उ0नि0 बहादुर बख्श मय हमराह मु0आ0 336 वेदप्रकाश सिंह, का0 1788 प्रिन्स चौधरी के थाना से रवाना होकर देखरेख क्षेत्र शान्ति कानून व्यवस्था व चौंकिग संदिग्ध व्यक्ति वाहन व रोकथाम जुर्म जरायम आदि में मामूर थे कि मुखबिर खास द्वारा सूचना मिली कि ग्राम भांभी का जिला बदर अपराधी अवधेश सक्सेना जनपद की सीमा में आया हुआ है और वह अपने गांव में नहर विभाग कोठी की तरफ आ रहा है। यदि जल्दी करो तो पकडे जा सकता है। इस सूचना पर उ0नि0 बहादुर बख्श मय हमराही उपरोक्त के मुखबिर की निशादेही पर नहर कोठी के पास से पकड लिया, पकडे जाने पर नाम पता पूछा तो इसने अपना नाम अवधेश सक्सेना पुत्र ब्रजेश सक्सेना नि0ग्रा0 भांभी थाना बण्डा जिला शाहजहाँपुर बताया। चूंकि अभियुक्त अवधेश सक्सेना उपरोक्त थाना बण्डा से जिला बदर चल रहा था। अभियुक्त उपरोक्त के विरुद्ध नियमानुसार मु0अ0सं0-215ध्24 धारा 10 उ0प्र0 गुण्डा निवारण अधि0 1970 पंजीकृत किया गया एवं विधिक कार्यवाही करते हुए न्यायिक हिरासत में भेजा जा रहा है।

स्वयंसेवकों ने मनाई फूलों की होली

चर्चित राजनीति। संवाददाता

हरदोई। नगर के आवास विकास कॉलोनी स्थित आ.वि.लायंस पार्क में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने की होली खेली।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता विभाग संघ चालक शिव स्वरूप ने कहा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सदैव से ही उस समरस समाज की परिकल्पना को साकार करने की ओर अग्रसर रहा है जहाँ समाज के विभिन्न वर्गों के बीच भेद भाव न रहे।होली एक ऐसा पर्व है जहां समाज का हर वर्ग सारे विभेद भुला कर प्रेम पूर्वक गले मिलते हैं।उन्होंने आव्हान किया कि समाज का प्रत्येक वर्ग आगे आकर रंग पर्व त्यौहार मनाएं और एक समरस समाज का निर्माण करें। इस अवसर पर उपस्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक

संघ के नगर कार्यवाह विनय पाण्डेय ने कहा, होली का त्यौहार तो प्रेम का त्यौहार है पर इस अवसर पर लोग, विशेषकर युवा व्यसन करके हुडदंग मचाते हैं जिससे समाज की सभ्रांत और सज्जन लोग इस त्यौहार से दूर होते जा रहे हैं।इस अभिनव कार्यक्रम से हमें संदेश देना था कि होली सज्जन शक्ति का भी त्यौहार है। जिसे सभी प्रेम और सौहार्द से मनाएं. फूलों की होली से केमिकल वाले रंग से भी छुटकारा मिलता है। उद्बोधन के पश्चात प्रार्थना हुई. और सभी लोगों जमकर फूलों की होली खेली। रंगों की जगह फूलों की पंखुडियां उड़ाई गयी। ठंडाई का आनंद लिया गया, और सभी गले मिले। इस मौके पर नगर संघ चालक मिथिलेश, नगर कार्यवाह विनय पाण्डेय, नगर प्रचारक विशाल, विभाग संपर्क प्रमुख राजेश चौहान, जिला संपर्क प्रमुख हर्ष, सुहाना जैन, कल्पना सिंह, निधि सिंह, दीपमाला मिश्र, गंगा सिंह चौहान सहित सैकड़ों बंधु /भगिनी उपस्थित रहे।

ट्रेन से कटकर युवक की मौत

शाहजहांपुर, चसं। ट्रेन से कटकर युवक की दर्दनाक मौत हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पीएम के लिए भेज दिया। वहीं सूचना पर पहुंचे मृतक युवक के परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है।क्षेत्र के गांव भोजपुर निवासी अभिषेक पुत्र राजकुमार उम्र लगभग 20 वर्ष की मंगलवार को हुलासनगला गांव के पास ट्रेन से कटकर मौत हो गई। बताया जाता है कि मृतक अभिषेक की अपने परिजनों से किसी बात को लेकर कहा सुनी हो गई थी। तभी अभिषेक सुबह घर से चला गया था। दोपहर 11 बजे रेलवे ट्रैक पर अभिषेक का शव पड़ा होने की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। परिजनों के मुताबिक मृतक अभिषेक के पिता राजकुमार विकलांग है। मां राजरानी नगर के एक कोल्ड स्टोर में आलू बीनने का कार्य कर अपने परिवार का भरण पोषण करती है। मृतक अभिषेक चार भाई बहनों में सबसे बड़ा था। वही अभिषेक की मौत से भाई अंशु, मनजीत, बहन सोनी उर्फपल्लवी सहित परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है। थाना प्रभारी गौरव त्यागी ने बताया कि अभिषेक घर से गुस्से में चला आया था और ट्रेन से कटकर सुसाइट कर लिया।

कुछ सीटों का हर बार बदल जाता नुमाइंदा, किसी दल के नहीं बने गढ़

चर्चित राजनीति। संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में वोटरों का मूड कहीं खुशनुमा रहता है तो कहीं बिगड़ने में वक्त नहीं लगता। कुछ लोकसभा सीटों पर वोटर हर बार बदलाव करते आ रहे हैं। अब 2024 के लोकसभा चुनाव में देखना है कि वोटर्स का मिजाज कैसा रहेगा, लेकिन यह तो नतीजे आने के बाद पता चलेगा। कुछ सीटों पर जब मौका मिलता है तो जीती हुई पार्टी को सबक सिखा कर दूसरे को जिता देते हैं।

पश्चिम यूपी से लेकर पूर्वांचल तक तमाम सीटें ऐसी हैं जहां वोटरों ने जिस दल को जिताया, उसे अगले चुनाव में हरा दिया. जिसे हराया उसे अगली बार जिताया। वोटर किसी एक दल के होकर नहीं रह गए हैं इसीलिए यह सीटें किसी का गढ़ नहीं कही जा सकती हैं। सहारनपुर के वोटरों का मूड हर चुनाव में बदलता रहता है। पिछले छह चुनाव से मतदाता हर चुनाव में संसद में अपना नुमाइंदा बदल देते हैं।1998 में यहां भाजपा जीती। उसके बाद बसपा विजयी हुई। 04 में सपा, 09 में बसपा, 14 में भाजपा व 19 के चुनाव में बसपा चुनाव जीती।घोसी में 1991 से लेकर 19 के बीच सात चुनावों में हर बार नया सांसद चुन कर भेजा गया।1989 से कांग्रेस के कल्पनाथ की जीत का सिलसिला शुरू हुआ और वह अगले तीन चुनाव जीते। 1999 के चुनाव में जनता का मूड बदलना शुरू हुआ और इसके बाद चुनाव दर चुनाव नए प्रत्याशी जीतते रहे। जौनपुर भी हर बार बदलाव का प्रतीक रहा है। 1977 के आम चुनाव में दिखा जब यहां बीएलडी के यादवेंद्र दत्त दुबे जीते।इसके बाद किसी दल को लगातार दो बार जीत नहीं मिली।1980 में जेएनपी एस, 1984 में कांग्रेस, 1989 में भाजपा, 1991 में जनता दल, 1996 में भाजपा, 1998 में सपा, 1999 में भाजपा, 04 में सपा,14 में भाजपा व 19 में बसपा जीती। अमरोहा में 1998 में भाजपा के चेतन चौहान जीते तो अगले चुनाव में जनता ने बसपा के राशिद अल्वी को संसद भेजा।04 के निर्दलीय हरीश नागपाल जीते तो 09 में रालोद के देवेंद्र नागपाल और 19 में बसपा के कुंवर दानिश अली विजयी हुए।लालगंज सुरक्षित में1996 में जनता ने बसपा के बलिराम को जिताया। 1998 में बसपा के बलिराम हार गए और सपा के दरोगा प्रसाद सरोज जीते।1999 में बलिराम व 04 में सपा जीती. अगले तीन चुनाव में क्रमश बसपा, भाजपा व बसपा जीती।मुरादाबाद के वोटरों ने पिछली बार सपा के एसटी हसन को जिताया था।1998 में सपा, 1999 में एबीएलटीसी के चंद्र विजय सिंह, 04 में सपा, 09 में कांग्रेस, 14 में भाजपा के कुंवर सर्वेश जीते थे। अब 2024 में क्या होने वाला है, यह तो मतदान के बाद पता चलेगा।

सीस्टोन सिरप एवं लिव 52 बिक्री योग्य : निदेशक

लखनऊ, चसं। आयुर्वेद निदेशालय द्वारा 12 मार्च को फर्म हिमालया वेल्सनेस कम्पनी बैंगलुरु कर्नाटक निर्मित आयुर्वेदिक औषधि सीस्टोन सीरप एवं लिव-52 को प्रतिबिन्धित किया गया था।निदेशक आयुर्वेद सेवाएं उत्तर प्रदेश के लाइसेंस प्राधिकारी निदेशक डा.पीसी सक्सेना ने बताया कि केंद्रीय आयुष मंत्रालय के ड्रग पॉलिसी सेक्शन के 19 मार्च द्वारा प्राप्त निर्देशों एवं फर्म के स्पष्टीकरण पर सम्यक विचारोपरान्त फर्म हिमालया वेलनेस कम्पनी बंगलुरू कर्नाटक के सीस्टोन सीरप एवं लिव-52 को बिक्री योग्य पाया गया है।

थानों में पुलिसकर्मियों की होली, अफसरों ने दी बधाई

चर्चित राजनीति। संवाददाता

● उल्लास से मनाया गया पर्व

उन्नाव। उन्नाव में इस होली पर्व पर पुलिसकर्मियों ने थानों और चौकियों में जमकर होली खेली। मंगलवार को पुलिसवालों ने रंगों की होली खेलकर त्योहार मनाया। जिले के सभी थानों के पुलिसकर्मी होली की मस्ती में डूबे नजर आए। कई थानों में तो पुलिसकर्मियों ने कपड़े फाड़ तक होली खेली है। इसके साथ ही आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर लगाई गई आचार संहिता का भी का अफसरों ने ध्यान रखा। एसपी के आदेश के बाद मंगलवार को सुबह से ही पुलिसकर्मी होली खेलने में लग गए।

एसपी सिद्धार्थ शंकर मीणा के आवास पर भी पुलिस होली की शुरुआत हुई। दर्जनों की संख्या में पुलिसकर्मियों ने रंग व गुलाल की होली खेली। इसके बाद 11 बजे से थाने चौकियों पर रंगों की बौछार शुरू हुई। औरास प्रभारी निरीक्षक रेखा, गंगाघाट कोतवाली प्रभारी रामफल प्रजापति, दही थानाध्यक्ष अनुराग सिंह समेत अन्य थानों पर प्रभारियों के निर्देश में थाने पर होली को लेकर पूरी तैयारियां की गई थीं। थाने में रंगों की शुरुआत थानाध्यक्ष ने की। उसके बाद मौजूद पुलिसकर्मियों ने इसकी शुरुआत की। थाने में लगे डीजे पर पुलिसकर्मी जमकर थिरके। उधर गंगाघाट कोतवाली में भी पुलिसकर्मियों ने खूब होली खेली। यहां तक एक दूसरे के कपड़े तक फाड़े। पुलिस कर्मियों का कहना है कि उन्हें दो साल बाद पहली बार ऐसी खुलकर होली खेलने का मौका लगा। इससे सभी उत्साहित हैं।

पूरे उत्साह के साथ एक-दूसरे को गले मिलकर होली पर्व की बधाई दी। रंगों का त्योहार मनाया। उन्नाव में होली पर्व की दूसरे दिन भी शहर और ग्रामीण इलाकों में जमकर होली खेली गई। इस बीच होली खेलने वाले पुलिसकर्मी अपना त्योहार मनाने के बाद फिर से अपने-अपने ड्यूटी प्वाइंटों पर पहुंचकर ड्यूटी कर रहे हैं। हसनगंज कोतवाली क्षेत्र के मोहान में होली पर होते दूसरे दिन हर साल की तरह इस साल भी धूमधाम से होरीयारों का जुलूस निकला। सीओ के नेतृत्व में सकुशल जुलूस को संपन्न कराया गया।

संक्षिप्त समाचार

युवक ने गर्रा नदी में कूदकर की आत्महत्या, शव बरामद

हरदोई, चसं। पत्नी से हुई कहासुनी के चलते उसका पति घर से निकल गया। उसका कोई सुराग़ न लगने पर उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई गई। फिर उसके दूसरे ही दिन बरवन गांव के बाहर गर्रा नदी से उस युवक का शव बरामद किया गया। युवक ने लोनार पुल से गर्रा नदी में कूद कर आत्महत्या की,उससे पहले उसने अपने पिता से फोन पर कहा था कि...वह जा रहा है,उसे ढूंढना नहीं।बताया गया गया है कि साण्डी थाने के गांधी गांव निवासी 28 वर्षीय राजपाल पुत्र रामरतन की शनिवार (23 मार्च) को उसकी पत्नी से किसी बात पर कहासुनीं हुई थी। उसके बाद वह घर से चला गया। काफी तलाश के बाद उसका कोई सुराग़ नहीं लगा,इस पर अगले दिन रविवार को उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई गई। उसी बीच सोमवार को लोनार पुलिस ने बरवन गांव के बाहर से गर्रा नदी से एक शव बरामद किया। शव की शिनाख्त रामपाल के रूप में की गई। कुछ लोगों का कहना है कि उन्होने उस युवक को लोनार पुल से नदी में कूदते हुए देखा था।

उधर रामपाल के पिता रामरतन का कहना है कि रविवार को ही उसके पुत्र ने फोन पर कहा था कि...जा रहा हूं,ढूंढना नहीं,फिर उसके बाद कोई बात नहीं हुई। माना जा रहा है कि पत्नी से हुई कहासुनी के चलते रामपाल ने ऐसा कदम उठाया। इसके अलावा गांव में और भी तरह की बातें हो रहीं हैं। पुलिस का कहना है कि सारे मामले की हर पहलू से जांच-पड़ताल की जा रही है।

कूड़ा फेंकने के विवाद में पड़ोसियों ने लाठियों से पीटकर पड़ोसी को उतारा मौत के घाट

हरदोई, चसं। कूड़ा फेंकने की बात इतनी बढ़ गई कि पड़ोसियों ने अपने पड़ोसी को लाठियों से इतनी बेरहमी से पीटा कि उसकी मौत हो गई। इस तरह की वारदात टड़ियावां थाने के साखिन गांव में होना बताई गई है। पुलिस सारे मामले की गहराई से जांच-पड़ताल कर रही है।बताया गया है कि सोमवार की शाम को साखिन निवासी 50 वर्षीय कुन्दन कूड़ा फेंकने गया हुआ था। कूड़ा फेंकने की बात पर उसके पड़ोसी रामनरेश और श्यामदास ने कोईबात कह दी,वही बात इतना तूल पकड़ गई कि वो दोनों घर से लाठी उठा लाए और कुन्दन को बुरी तरह से पीटने लगे। जिससे गांव में अफ़रा-तफ़री मच गई सिर में गहरी चोंट पहुंचने से कुन्दन वहीं पर गिर कर बेहोश हो गया। उसी बीच दोनों हमलावर वहां से भाग निकले। कुन्दन को आनन-फानन में मेडिकल कालेज में भर्ती कराया गया,जहां उसने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। इसका पता होते ही समूचे गांव में कोहराम मच गया। पुलिस सारे मामले की गहराई से जांच-पड़ताल कर रही है। उसका कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

तेज रफ्तार कार और बाइक में टक्कर एक युवक की मौत, दूसरा गंभीर

उन्नाव, चसं। जनपद में तेज रफ्तार कार ने बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर लगने से बाइक में सवार दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों को जिला अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कराया। जहां डॉक्टर ने एक युवक को मृत घोषित कर दिया। दूसरे का उपचार शुरू किया है। पुलिस ने पहचान के बाद घटना की जानकारी उनके परिजनों को दी और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। घटना दही थाना क्षेत्र के दीनदयाल स्टेडियम के पास की है।

जवाहर खेड़ा गांव के रहने वाले धर्मेंद्र कुमार और उसका साथी सोनेलाल एक ही बाइक पर सवार होकर किसी काम से साथ निकले थे। पंडित दीनदयाल स्टेडियम के पास ही पहुंचे तभी सामने से आ रही कार से टक्कर हो गई। टक्कर लगने से बाइक पर सवार धर्मेंद्र और सोनेलाल गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों ने मौके पर कार को पकड़ लिया और घटना की जानकारी पुलिस को दी। एक्सीडेंट की सूचना पर दही थाना प्रभारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और उन्होंने दोनों घायलों का एम्बुलेंस की मदद से उपचार के लिए जिला अस्पताल भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने धर्मेंद्र को मृत घोषित कर दिया और सोनेलाल की हालत गंभीर देखते हुए उपचार शुरू किया है। मॉर्च्युरी पहुंचे परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।थाना प्रभारी ने बताया कि परिजनों ने अभी तहरीर नहीं दी है। तहरीर मिलने के बाद मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

सड़क हादसे में एक की मौत, 2 घायल

उन्नाव, चसं। जिले के असोहा थाना क्षेत्र में दो बाइकों की आमने-सामने भिड़ंत होने से तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की सूचना राहगीरों ने पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को उपचार के लिए नजदीकी सीएचसी में भर्ती कराया। जहां डॉक्टर ने एक युवक को मृत घोषित कर दिया। दोनों घायलों के बेहतर उपचार के लिए जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। पुलिस ने पहचान के बाद घटना की जानकारी परिजनों को दी और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

जानकारी के अनुसार सिसेंडी चौकी क्षेत्र के हलगी गांव का रहने वाला सुजीत उर्फबउवा (24) पुत्र अयोध्या बाइक से जा रहा था। अशोक थाना क्षेत्र के लाला खेड़ा चौराहे के पास ही पहुंचा था कि सामने से आ रही एक तेज रफ्तार बाइक की आमने सामने भिड़ंत हो गई। दो बाइकों की आमने-सामने भिड़ंत होने से बाइक पर सवार तीन युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। टक्कर लगने के बाद दोनों के वाहन क्षतिग्रस्त हो गए। राहगीरों ने घटना की जानकारी असोहा थाना पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को उपचार के लिए नजदीकी सीएचसी में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने सुजित को मृत घोषित कर दिया और दो युवकों को बेहतर उपचार के लिए जिला अस्पताल रेफर कर कर दिया। सूचना पर युवक के परिजन मॉर्च्युरी पहुंचे और शव देखकर रोने लगे। बताया जा रहा है कि युवक की 20 अप्रैल को बोधी खेड़ा गांव में शादी होनी थी। त्योहार पर मौत होने के बाद खुशियां मातम में बदल गई। पुलिस ने के शव का पोस्टमॉर्टम कराया है। असोहा थाना प्रभारी राम अवतार ने बताया कि घटना की जानकारी पर पुलिस पहुंची थी। आवश्यक विधि कार्रवाई की जा रही है।

पाक्सो एक्ट में वांछित अपराधी को थाना पुलिस द्वारा किया गया गिरफ्तार

शाहजहांपुर, चसं। अशोक कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक शाहजहाँपुर के निर्देशानुसार, मनोज कुमार अवस्थी, अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के निर्देशन एवं पंकज पंत, क्षेत्राधिकारी पुवायां के कुशल पर्यवेक्षण मे अपराध की रोकथाम व वांछित वारण्टी अपराधियो के विरूद्ध चलायें जा रहे अभियान के क्रम में थाना खुटार पुलिस द्वारा ग्राम दिलीपपुर मोड पर खडे अभियुक्त अमरीश पुत्र छोटेलाल निवासी ग्राम चमराबोझी थाना खुटार जिला शाहजहाँपुर मूल निवासी ग्राम सिसोरा सिसोरी थाना बण्डा जनपद शाहजहाँपुर उम्र करीब 24 वर्ष सम्बन्धित मु0अ0स0 184/2024 धारा 363/376(3) भादवि व 3/4(2) पाक्सो एक्ट को गिरफ्तार किया गया जिसके पास से दो अदद मोबाइल (एक नीला रंग फोन कीपैड व एक एन्ड्रायड सैमसंग फोन सिल्वर रंग) बरामद किये गये। अभियुक्त अमरीश उक्त पाक्सो एक्ट का वांछित अभियुक्त है। गिरफ्तार शुदा अभियुक्त को न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

रंजिश में दबंगो ने युवक को पीटा,मुकदमा दर्ज

लखनऊ, चसं। निगोहां थाना क्षेत्र के बघौना गांव में रंजिश के चलते एक युवक को लोहे की रोड से हमला कर घायल कर दिया। पुलिस ने घायल को उपचार के लिए सीएचसी भेजा और पीड़ित द्वारा दी गई तहरीर पर मुकदमा दर्ज का जांच शुरू कर दी। निगोहां के बघौना गांव निवासी निहाल सिंह ने बताया कि होलिका दहन पर रात में करीब 9.00 बजे उसका भाई विशाल नदौली गांव की होलिका दहन में जा रहा था तभी गांव के ही कृष्णपाल रंजिश के चलते अपने बेटे पवन, बेटी रोशनी, और प्रिंस के साथ मिलकर उसके भाई को रास्ते मे रोक लिया और लोहे की रॉड से हमला कर लहूलुहान कर दिया।थाना प्रभारी अनुज कुमार तिवारी ने बताया कि दी गई तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है घायल को उपचार के लिए सीएचसी भेजा गया है जांच की जा रही।

तीन बाइको में भिड़ंत, युवक की मौत

लखनऊ, चसं। मोहनलालगंज कोतवाली क्षेत्र के हुलासखेड़ा गांव निवासी शिवप्रसाद अपनी पत्नी शिवरानी व बेटे गिरजाशंकर व पोती जानवी के साथ मगंलवार की शाम दो बाइको से रिश्तेदारी में होली मिलकर वापस घर आ रहे थे जैसे ही बाइको से उत्तरगांव के पास पहुंचे ही थे कि तभी सामने से बाइक लेकर आ रहे युवक योगेन्द्र कुमार यादव (21वर्ष) निवासी धनुवासाड़ की तेज रफ्तार बाइक अनियंत्रित हो गयी ओर दोनो बाइको से टकरा गयी।

संक्षिप्त समाचार

चालू वित्त वर्ष के पहले 11 माह में रूस को भारत का इंजीनियरिंग निर्यात दोगुना हुआ

कोलकाता, एजेंसी। चालू वित्त वर्ष 2023-24 के पहले 11 माह यानी फरवरी तक रूस को भारत का इंजीनियरिंग निर्यात दोगुना होकर 1.22 अरब डॉलर पर पहुंच गया है। इंजीनियरिंग निर्यात संवर्धन परिषद (ईईपीसी) ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पिछले वित्त वर्ष में भारत से रूस को इंजीनियरिंग निर्यात 61 करोड़ 66.8 लाख डॉलर का रहा था। ईईपीसी ने बयान में कहा कि इस अवधि के दौरान अमेरिका को निर्यात सालाना आधार पर सात प्रतिशत घटकर 15.95 अरब डॉलर का रह गया है। चीन के मामले में, यह मामूली घटकर 2.38 अरब डॉलर रहा है। पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में यह 2.40 अरब डॉलर रहा था। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और ऑस्ट्रेलिया को निर्यात सकारात्मक रहा। इन देशों के साथ भारत का मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) है। फरवरी तक, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के लिए निर्यात सालाना आधार पर 16 प्रतिशत बढ़कर 5.22 अरब डॉलर का हो गया, जबकि ऑस्ट्रेलिया के लिए निर्यात पांच प्रतिशत बढ़कर 1.30 अरब डॉलर का रहा। बयान में कहा गया है कि अप्रैल-फरवरी (2023-24) के दौरान कुल इंजीनियरिंग निर्यात 98.03 अरब डॉलर का रहा, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 96.84 अरब डॉलर का हुआ था। ईईपीसी इंडिया के चेयरमैन अरुण कुमार गरोडिया ने कहा, ÷पिछले कुछ महीनों में, भारत से इंजीनियरिंग निर्यात लगातार आगे बढ़ रहा है। पिछले तीन महीनों में क्षेत्र के उल्लेखनीय प्रदर्शन ने कुल निर्यात में उच्च वृद्धि को संभव बनाया है।

बीते साल 50 करोड़ रुपए या उससे अधिक कीमत के लक्जरी घरों की बिक्री 51 फीसदी बढ़ी

नयी दिल्ली, एजेंसी। बीते कैलेंडर साल 2023 में मजबूत मांग के चलते 50 करोड़ रुपए और उससे अधिक कीमत वाले लक्जरी घरों की बिक्री मूल्य के हिसाब से 51 प्रतिशत बढ़कर 4,319 करोड़ रुपए हो गई। रियल एस्टेट सलाहकार जेएलएल इंडिया के आंकड़ों के अनुसार, 50 करोड़ रुपए और उससे अधिक कीमत वाले कम से कम 45 मकान 2023 में 4,319 करोड़ रुपए में बेचे गए। कैलेंडर वर्ष 2022 में इस मूल्य वर्ग में 2,859 करोड़ रुपए मूल्य के कम से कम 29 मकान बिके थे। जेएलएल के अनुसार, इन लक्जरी मकानों में बंगला और अपार्टमेंट दोनों शामिल हैं। इसमें प्राथमिक बाजार और पुन बिक्री लेनदेन भी शामिल हैं। इसमें कोई उपहार और संयुक्त उद्यम लेनदेन शामिल नहीं हैं। जेएलएल इंडिया के मुख्य अर्थशास्त्री एवं अनुसंधान प्रमुख सामंतक दास ने कहा, ''2023 में बेचे गए 45 लक्जरी मकानों में से 14 मकान 100 करोड़ रुपए और उससे अधिक कीमत के थे। इनमें से अधिकतर (79 प्रतिशत) मुंबई में बेचे गए। इंडिया सोथबी के इंटरनेशनल रियल्टी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) अश्विन चड्ढा ने कहा, ''ऐसी आवासीय रियल एस्टेट की मांग 2021 से महत्वपूर्ण वृद्धि दर्ज कर रही है और यह 2024 में भी इसी रफ्तार से जारी रहेगी।

शेयर बाजार में गिरावट : सेंसेक्स 361 अंक गिरकर 72,470 पर बंद

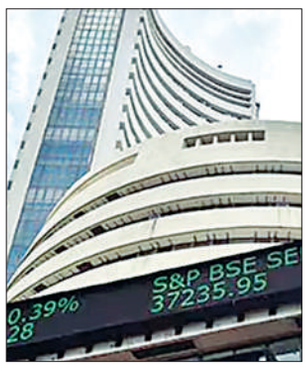

नयी दिल्ली, एजेंसी। हफ्ते के पहले कारोबारी दिन यानी 26 मार्च को शेयर बाजार में गिरावट देखने को मिली। सेंसेक्स 361.64 (0.50:) अंक की गिरावट के साथ 72,470.30 के स्तर पर वहीं, निफ्टी भी 92.05 (0.42:)अंक टूटा, ये 22,004.70 के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 19 में गिरावट और 11 में तेजी देखने को मिल रही है। आज पावर, एन्ज् और बैंकिंग शेयर्स में ज्यादा गिरावट है। पावर ग्रिड के शेयर में आज 2: से ज्यादा की गिरावट है। इससे पहले हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन यानी 22 मार्च को शेयर बाजार में बढ़त देखने को मिली थी। सेंसेक्स 190 अंक की तेजी के साथ 72,831 के स्तर पर बंद हुआ था। वहीं, निफ्टी में भी 84 अंक की तेजी रही, ये 22,096 के स्तर पर बंद हुआ था।

विप्रो जीई हेल्थकेयर भारत में पांच सालों में 8,000 करोड़ रुपए से अधिक का करेगी निवेश

नयी दिल्ली, एजेंसी। विप्रो जीई हेल्थकेयर ने स्थानीय विनिर्माण और अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) को बढ़ाने के लिए अगले पांच वर्षों में भारत में 8,000 करोड़ रुपए से अधिक का निवेश करने की मंगलवार को जानकारी दी। अग्रणी वैश्विक मेडटेक (चिकित्सकीय प्रौद्योगिकी), फार्मास्युटिकल डायग्नोस्टिक्स और डिजिटल समाधान प्रदाता कंपनी ने कहा कि निवेश के एक हिस्से के रूप में इसका मेड इन इंडिया पीईटी सीटी डिस्कवरी आईक्यू स्कैनर 15 देशों में निर्यात किया जाएगा। बयान के अनुसार, इसके अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर उत्पादित रिवोल्यूशन एस्पायर सीटी, रेवोल्यूशन एसीटी और एमआर ब्रेस्ट कॉइल्स का निर्माण ''दुनियाभर के लिए भारत में किया जाएगा। विप्रो जीई हेल्थकेयर के चेयरमैन अजीम प्रेमजी ने कहा कि भारत स्वास्थ्य सेवा उद्योग में पुनरुत्थान के मार्ग पर है और मेडटेक क्षेत्र का तेजी से विस्तार कर रहा है। उन्होंने कहा, ''मेक इन इंडिया (भारत निर्मित) के साथ हम देश के विनिर्माण क्षेत्र का तेजी से विस्तार देख रहे हैं, जिससे दुनिया के मेडटेक (चिकित्सकीय प्रौद्योगिकी) हब के रूप में भारत की क्षमता मजबूत हो रही है। प्रेमजी ने कहा, ''विप्रो जीई हेल्थकेयर तीन दशकों से अधिक समय से इस स्थानीयकरण यात्रा के लिए प्रतिबद्ध है और यह रणनीतिक निवेश इस क्षेत्र के लिए हमारे दृष्टिकोण का प्रमाण है। जीई हेल्थकेयर के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) पीटर जे. अर्डुइनी ने कहा कि वैश्विक स्तर पर जीई हेल्थकेयर के लिए भारत एक उच्च क्षमता वाला, उच्च प्राथमिकता वाला बाजार है। विप्रो जीई हेल्थकेयर के वर्तमान में बेंगलुरु में चार विनिर्माण संयंत्र हैं।

सीएसके ने गुजरात टाइटन्स को दी करारी शिकस्त

चर्चित राजनीति। एजेंसी

अहमदाबाद। इंडियन प्रीमियर लीग 2024 सीजन के 7वें मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स और गुजरात टाइटन्स का मैच समाप्त हो चुका है। चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में खेले जा रहे इस मुकाबले में चेन्नई टीम गुजरात को 63 रनों से हरा दिया है। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए चेन्नई टीम ने 6 विकेट गंवाकर 206 रन बनाए। टीम के लिए शिवम दुबे ने 23 गेंदों पर सबसे ज्यादा 51 रन जड़े। इस दौरान उन्होंने 5 छक्के और 2 चौके जमाए। उनके अलावा रचिन रवींद्र 20 गेंदों पर 46 रन बनाकर राशिद खान की बॉल पर स्टम्पिंग आउट हुए। जबकि कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ 46 रन बनाकर स्पेंसर जॉनसन की बॉल पर कैच आउट हुए। दूसरी ओर गुजरात टीम के लिए स्पिनर राशिद खान ने 2 विकेट झटके। साई किशोर, मोहित शर्मा और स्पेंसर जॉनसन को 1-1 सफलता मिली।

आईपीएल में गुजरात टीम ने 2022 सीजन में दस्तक दी थी। तब उसने हार्दिक पंड्या की कप्तानी में पहला ही सीजन जीत लिया था। जबकि दूसरे यानी 2023 सीजन में गुजरात को चेन्नई के हाथों ही हार झेलनी पड़ी थी। इस तरह अब तक दोनों टीमें 5 बार आमने-सामने आई हैं। इस दौरान गुजरात ने 3 और चेन्नई ने 2 मुकाबले जीते हैं।गुजरात टीम ने आईपीएल में दस्तक देने के साथ ही शुरुआती 3 मुकाबलों में चेन्नई टीम को करारी शिकस्त दी थी। मगर महेंद्र सिंह धोनी की इस सीएसके टीम ने दमदार वापसी की। उसने शुरुआती 3 मैच हारने के बाद लगातार 2 मुकाबलों में गुजरात को पटका है। अब यह मैच जीतकर CSK टीम गुजरात के खिलाफ जीत की हैट्रिक लगाना चाहेगी।

चेन्नई सुपर किंग्स : ऋतुराज गायकवाड़ (कप्तान), रचिन रवींद्र, अजिंक्य रहाणे, डेरेल मिचेल, शिवम दुबे/मथीशा पथिराना (इम्पैक्ट प्लेयर), रवींद्र जडेजा, समीर रिजवी, एमएस धोनी (विकेटकीपर), दीपक चाहर, मुस्ताफिजुर रहमान और तुषार देशपांडे।

गुजरात टाइटन्स : शुभमन गिल (कप्तान), ऋद्धिमान साहा (विकेटकीपर), अजमतुल्लाह उमरजई, साई सुदर्शन/मोहित शर्मा (इम्पैक्ट प्लेयर), विजय शंकर, डेविड मिलर, राहुल तेवतिया, राशिद खान, उमेश यादव, आर साई किशोर और स्पेंसर जॉनसन।

धोनी ने लिया शानदार कैच, वीडियो वायरल : चेन्नई सुपर किंग्स के पूर्व कप्तान एमएस धोनी ने मंगलवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल 2024) के 7वें मैच के दौरान गुजरात टाइटंस के विजय शंकर को आउट करने के लिए एक शानदार कैच पकड़कर चेपॉक में आग लगा दी।आउट होने की घटना 8वें ओवर में हुई जब डेरिल मिशेल की ऑफ-स्टंप के बाहर की गेंद पर शंकर ने किनारा कर लिया, गेंद तेजी से धोनी के दाहिनी ओर गई लेकिन 42 वर्षीय ने उम्र की अवहेलना की और दोनों हाथों से गेंद को पकड़ने के लिए छलांग लगाई।स्टेडियम के अंदर मौजूद 33 हजार से ज्यादा प्रशंसकों ने आईपीएल इतिहास में अब तक सुनी गई सबसे तेज दहाड़ में से एक का शोर मचाया।

शुबमन गिल ने IPL मैच में CSK बनाम टॉस में रोहित शर्मा की गलती दोहराई : गुजरात टाइटंस के कप्तान शुबमन गिल को अपनी नई नौकरी में सिर्फ एक मैच का अनुभव हुआ है, इसलिए इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 सीजन के दौरान टॉस के दौरान छोटी-मोटी गलतियां करने के लिए उन्हें माफ किया जा सकता है।चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ टॉस के दौरान गिल को ब्रेन फेड का सामना करना पड़ा और उन्होंने अपना फैसला तुरंत बदलने से पहले गलत तरीके से

■ गुजरात टाइटन्स ने मुम्बई इंडियन को हराया

पहले बल्लेबाजी करने का विकल्प चुना।गिल ने सीएसके के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ के खिलाफ टॉस जीता जिसके बाद कमेंटेटर संजय मांजरेकर ने उनसे उनके फैसले के बारे में पूछा।गिल ने मांजरेकर को बिफरते हुए कहा, ÷हम पहले बल्लेबाजी कर रहे हैं, क्षमा करें, हम पहले गेंदबाजी करने जा रहे हैं। यह घटना प्रशंसकों को न्यूजीलैंड के खिलाफ एकदिवसीय मैच के दौरान भारत के कप्तान रोहित शर्मा के उस पल की याद दिला सकती है जब वह टॉस जीतने के बाद पूरी तरह से भूल गए थे कि वह क्या करने जा रहे हैं।

दोनों टीमों ने सीज़न के अपने पहले गेम जीते, जिसमें सीएसके ने घरेलू मैदान पर रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को हराया और जीटी ने अहमदाबाद में मुंबई इंडियंस को हराया।टाइटंस ने उसी विजयी संयोजन के साथ खेलने का फैसला किया है लेकिन सुपर किंग्स ने एक बदलाव किया है और महेश थीक्षाना की जगह मथीशा पथिराना को शामिल किया गया है।

श्रीसंत ने कहा-गिल के कप्तान होने से गेंदबाजों को आजादी मिलेगी

गुजरात टाइटंस ने नए कप्तान शुभमन गिल के नेतृत्व में अहमदाबाद में आईपीएल 2024 के अपने पहले मैच में पांच बार की विजेता मुंबई इंडियंस पर जीत के साथ शानदार शुरुआत की। टूर्नामेंट में तेजी से नाम कमाने वाली फ्रेंचाइजी अब पांच बार की चैंपियन सीएसके से भिड़ेगी। शुभमन गिल की टीम सीएसके से पुराना हिसाब चुकता करना चाहेगी, क्योंकि पिछले साल फाइनल मुकाबले में गुजरात को धोनी की टीम के खिलाफ हार झेलनी पड़ी थी। हार्दिक पांड्या के मुंबई इंडियंस के लिए रवाना होने के बाद आईपीएल 2024 से पहले गुजरात में बदलाव हुआ है। अब टीम का कार्यभार युवा बल्लेबाज शुभमन गिल को सौंपा गया। नए कप्तान के नेतृत्व में जीत के साथ गुजरात के लिए सीजन की शुरुआत अच्छी रही। जैसे ही टीमें अहम मुकाबले के लिए तैयार हो रही हैं, फैनकोड के द सुपर ओवर में भारतीय क्रिकेट के दिग्गज और विश्व कप के विजेता एस.श्रीसंत ने इस मुकाबले पर खुलकर बात की। पिछले पांच मुकाबलों में से तीन में जीत हासिल करने के बाद, गुजरात इस मैच में अपना फॉर्म जारी रखना, और पिछले साल चेन्नई के खिलाफ फाइनल की हार का बदला लेना चाहेगी। हार्दिक पांड्या के बाद गुजरात टाइटन्स टीम के भीतर मौजूदा माहौल पर श्रीसंत ने कहा कि कैसे आशीष नेहरा और गैरी कर्स्टन के अनुभव के साथ गिल के रूप में एक नया कप्तान गुजरात टाइटन्स को नई पहचान दे रहा है। श्रीसंत ने कहा कि गुजरात में कोई हार्दिक नहीं है जो गेंदबाजों को बता सके कि क्या गेंदबाजी करनी है।

पिछले साल के फाइनल और फाइनल डिलीवरी से पहले मोहित शर्मा के साथ हार्दिक पांड्या की चर्चा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कभी-कभी आपको गेंदबाज को गेंदबाजी करने की आजादी देने की जरूरत होती है। इस बार कप्तान गिल हैं और मुझे यकीन है कि आशीष भाई (आशीष नेहरा) कहेंगे कि उन्हें गेंदबाजी अपने हिसाब से करने दो। युवा कप्तान के साथ गेंदबाज भी जिम्मेदारी उठाएंगे और कभी-कभी, युवा कप्तान होने का यह फायदा है।

सुनील छेत्री के पूरे हुए 150 अंतर्राष्ट्रीय मैच, एआईएफएफ अध्यक्ष ने दी बधाई

चर्चित राजनीति। एजेंसी

गुवाहाटी। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) के अध्यक्ष कल्याण चौबे ने मंगलवार को यहां पुरुष राष्ट्रीय टीम होटल में सुनील छेत्री से मुलाकात की और कप्तान को सीनियर टीम के लिए उनकी 150वीं उपस्थिति पर बधाई दी।

एआईएफएफ अध्यक्ष ने सुनील छेत्री को मौजूदा टीम के सभी खिलाड़ियों और स्टाफ सदस्यों द्वारा साइन की हुई जर्सी भेंट की। सुनील का आज अपना 150वां मैच खेलना भारतीय फुटबॉल में एक बड़ी उपलब्धि है और मुझे इसका गवाह बनकर गर्व महसूस हो रहा है। भारतीय कप्तान के इस उपलब्धि तक पहुंचने पर पूरे फुटबॉल जगत को गर्व महसूस हो रहा है। चौबे ने एआईएफएफ.कॉम को बताया, जैसा कि मैंने सुनील से कहा,

इस गौरवपूर्ण क्षण को और भी यादगार बनाने के लिए, भारत को अफगानिस्तान के खिलाफ महत्वपूर्ण विश्व कप क्वालीफायर में जीत हासिल करने में सक्षम होना चाहिए। यह न केवल सुनील के लिए बल्कि सभी के लिए एक ऐतिहासिक अवसर होगा। हम, चाहते हैं कि भारतीय फुटबॉल तीव्र गति से आगे बढ़े। छेत्री ने एआईएफएफ प्रमुख का उनके इन शब्दों के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि वह और उनके साथी भारतीय टीम को मौजूदा विश्व कप क्वालीफायर के तीसरे दौर में ले जाने के लिए सब कुछ करेंगे।

संजीव कुमार ने जीता 13वीं बार मेंस सिंगल नेशनल पैरा बैडमिंटन चैंपियनशिप का खिताब

चंडीगढ़, एजेंसी। अपना पहला गोल्ड और कांस्य मेडल संजीव कुमार ने 6वीं नेशनल पैरा बैडमिंटन चैंपियनशिप में चंडीगढ़ के लिए व्हीलचेयर 2 कैटेगरी मैं मेंस सिंगल मैं जीता 1 गोल्ड मेंस डबल में 1 कांस्य का मेडल जीता। चंडीगढ़ के पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी संजीव कुमार ने नेशनल पैरा बैडमिंटन चैंपियनशिप 20 से 23 मार्च 2024 टाटा नगर झारखंड में अपना पहला गोल्ड मेडल चंडीगढ़ के नाम किया।

संजीव कुमार ने अपने सिंगल के क्वार्टर फाइनल मैच में में दिल्ली के मुन्ना खालिद को तीन सेट में हराया 21-13 9-21 21-11 से मात दी। जबकि सेमी फाइनल मैच कर्नाटक के सिडाना के साथ हुआ और उन्होंने स्टेट सेट के अंदर 21-15 21-7 से मात देते हुए अपना फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल मैच उनका यूपी के अब्बू हुबैदा के साथ हुआ जिसको उन्होंने सीधे सेट में मैच में मात देते हुए अपना पहला गोल्ड मेडल चंडीगढ़ के नाम किया। 21-15 21-19 के साथ संजीव कुमार ने मेंस डबल्स में भी अपने पार्टनर अंकित प्रधान के साथ वेस्ट बंगाल के साथ जोड़ी बनाते हुए मेंस डबल मैं भी कांस्य के मेडल पर कब्ज़ा किया। संजीव कुमार ने खेल विभाग चंडीगढ़ और चंडीगढ़ बैडमिंटन एसोसिशन का बहुत-बहुत धन्यवाद किया। संजीव कुमार ने अपने कोच सुरिंदर माहजन और भुवन सेठी का भी धन्यवाद किया। पैरा बैडमिंटन खिलाड़ी संजीव कुमार 38 स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में ट्रेनिंग करते है। संजीव कुमार ने बताया कि वह आने वाले इंटरनेशनल टूर्नामेंट की तैयारी कर रहे हैं।

भारत और पाकिस्तान महिला टी20 एशिया कप के एक ही ग्रुप में

चर्चित राजनीति। एजेंसी

नई दिल्ली। गत चैंपियन भारत को आगामी महिला टी20 एशिया कप 2024 में पाकिस्तान, यूएई और नेपाल के साथ ग्रुप ए में रखा गया है, जो 19 से 28 जुलाई तक श्रीलंका के दांबुला में होने वाला है। टूर्नामेंट के संस्करण में आठ टीमें शामिल होंगी, जो 2022 में पिछले संस्करण की तुलना में एक अधिक है, जो पूरे एशिया में महिला क्रिकेट में बढ़ती रुचि और भागीदारी को दर्शाता है। मंगलवार को यहां एशियाई क्रिकेट परिषद द्वारा घोषित कार्यक्रम के अनुसार ग्रुप बी में बांग्लादेश, मेजबान श्रीलंका, मलेशिया और थाईलैंड शामिल होंगे।

एसीसी अध्यक्ष जय शाह ने एक बयान में कहा कि महिला एशिया कप 2024 क्षेत्र में महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए एसीसी की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। हम टीमों के बीच बढ़ती भागीदारी और प्रतिस्पर्धा को देखकर उत्साहित हैं, जो महिला क्रिकेट की बढ़ती लोकप्रियता और महत्व को दर्शाता है। शाह ने आगे कहा कि यह विस्तार, 2018 में छह टीमों से बढ़कर 2022 में सात और अब आठ टीमों तक, महिलाओं के खेल और एशियाई क्रिकेट में बढ़ते प्रतिभा पूल के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है। हम एक रोमांचक टूर्नामेंट की आशा करते हैं जो खिलाड़ियों और प्रशंसकों दोनों को प्रेरित करेगा। कार्यक्रम के अनुसार, आयोजन के शुरुआती दिन 19 जुलाई को होने वाले दो मैचों में पाकिस्तान का सामना नेपाल से होगा, जबकि भारत संयुक्त अरब अमीरात से भिड़ेगा। भारत 21 जुलाई को पाकिस्तान से खेलेगा जबकि बांग्लादेश 24 जुलाई को अंतिम लीग मैचों में मलेशिया से और श्रीलंका थाईलैंड से भिड़ेगा।

एलएसजी ने खेली गुलाल और फूलों की होली खिलाड़ियों ने एक दूसरे को जमकर लगाए रंग

लखनऊ, चसं। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के खिलाड़ियों ने लखनऊ के होटल ताज महल में होली खेली है। गुलाल और अबीर संग खेली गई होली में एलएसजी के खिलाड़ियों के साथ में कोच और टीम प्रबंधन के लोग भी रहे हैं। इस मौके पर एलएसजी की टीम ने इस खास पल को सोशल मीडिया पर भी साझा किया है। इसमें गुलाल, अबीर, फूल के साथ में खिलाड़ी नजर आ रहे। साथ ही एक दूसरे को होली पर भिगो रहे और गले मिलकर बधाई भी दे रहे। टीम के मुख्य कोच जस्टिन लैंगर, फील्डिंग कोच जांटी रोड्स, उपकप्तान निकालेस पूरन,एश्टन टर्नर, केशव महाराज ने गुलाल और अबीर लगाकर होली मनाई है। होटल ताज में आयोजित हुए कार्यक्रम में गुलाल और अबीर एक दूसरे को लगाकर होली मनाई गई है। इस मौके पर फूलों की भी होली खेली गई है। वहीं, खिलाड़ियों ने एक दूसरे पर पिचकारी की बौछार मार कर होली मनाई है। फूलों को भी एक दूसरे पर डालकर गले मिलकर होली की बधाई दी है। टीम के कप्तान केएल राहुल, अर्शिन कुलकर्णी, दीपक हुड्ड्डा, यश ठाकुर,के गौतम और टीम के सीईओ कर्नल विनोद बिष्ट सहित अन्य ने भी होली मनाई है। टीम की तरफसे इसकी फोटो और वीडियो भी जारी की गई है। इसको लेकर टीम की तरफसे होली के खास पल भी साझा किए गए हैं। अर्शिन कुलकर्णी के चेहरे पर केएल राहुल के रंग लगाते हुए फोटो लोगों को खूब भा रही है।

अंडर-13 आईलीग में मिनर्वा एकेडमी ने पंजाब एफसी को 15-2 से हराया

चंडीगढ़, एजेंसी। अंडर-13 यूथ लीग में मिनर्वा एकेडमी ने अवे मैच में बड़ी जीत दर्ज की और पंजाब एफसी को उन्हीं के घर में 15-2 से हराया। मोहम्मद आजम सिंह को शानदार प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड दिया गया। मिनर्वा के युवा खिलाड़ियों ने पंजाब एफसी पर कोई दया नहीं दिखाई और खेल की शुरुआत से ही जोरदार आक्रामक प्रदर्शन किया। मिनर्वा का नेतृत्व आजम कर रहे थे और उन्होंने 5 गोल करते हुए टीम की जीत पक्की की। वे इससे पहले 3 गोल कर चुके हैं और उनके गोल की टोटल गिनती अब 8 हो गई है। उनका साथ देते हुए चेतन ने भी गेम में हैट्रिक लगाई, जिससे उनके कुल गोल की संख्या 8 हो गई। दोनों के असाधारण प्रदर्शन ने न केवल मिनर्वा को शानदार जीत दिलाई, बल्कि मैदान पर अपनी अपार प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन भी किया। पंजाब एफसी बैकफुट पर रही। मैच में मिनर्वा का पूरी तरह से दबदबा रहा। उनके शीर्ष गुणवत्ता वाले आक्रामक प्रदर्शन ने पंजाब एफसी को पूरी तरह से आश्चर्यचकित कर दिया।

द ग्रैंड शॉप्सी मेला के चौथे एडिशन में नए ग्राहकों और विक्रेताओं की संख्या में बढ़त दर्ज

चर्चित राजनीति। संवाददाता

लखनऊ। भारत के तेजी से बढ़ रहे हाइपरवैल्यू ई-कॉमर्स प्लेटफार्म शॉप्सी ने 12 से 17 मार्च के दौरान द ग्रैंड शॉप्सी मेला के चौथे एडिशन का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस दौरान ग्राहकों को किफायती कीमतों पर जोरदार उत्पाद उपलब्ध कराए गए। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि शॉप्सी ने ग्रैंड शॉप्सी मेला के चौथे एडिशन के दौरान 16करोड़ उत्पादों को फ्री डिलीवरी तथा आकर्षक कीमतों पर उपलब्ध कराया।

द ग्रैंड शॉप्सी मेला के चौथे एडिशन में दैनिक मांग और नए ग्राहकों में 2एक्स बढ़त दर्ज की गई। द ग्रैंड शॉप्सी मेला के दौरान सामने आए ट्रैंड्स के बारे में कपिल थिरानी, प्रमुख दृ शॉप्सी, फ्लिपकार्ट ने कहा, शॉप्सी में हमारा मिशन भारत के शॉपिंग अनुभव को नए सिरे से परिभाषित करना है ताकि ग्राहकों को बटन दबाने भर से ही तरह-तरह के प्रोडक्ट्स तक आसान पहुंच का लाभ मिले और वो भी किफायती कीमत पर। ग्रैंड

शॉप्सी मेला हमारे उन ग्राहकों की बदलती जरूरतों को पूरा करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है जो जी-भरकर खरीदारी करने के लिए इस तरह के सेल इवेंट्स का उत्सुकता से इंतजार करते हैं और बिना किसी दबाव के अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं। हम लोकल बिजनेस और सैलर्स को भी सपोर्ट करते हुए गर्व महसूस करते हैं, जो इस ग्रैंड शॉप्सी मेला का उत्साहपूर्वक इंतजार करते हैं, और इस तरह से आर्थिक अवसरों तथा मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। हम आगे बढ़ते हुए अपने ग्राहकों के लिए उत्पादों तक पहुंच तथा विकल्पों में विस्तार करने की अपनी नीति को और मजबूत बना रहे हैं और साथ ही, ग्रैंड शॉप्सी मेला जैसे आयोजनों के जरिए आकर्षक कीमतें भी सुनिश्चित करते हैं।÷देश के दूरदराज तक के इलाकों में ग्राहकों की मांगों को पूरा करते हुए, शॉप्सी ने सेल इवेंट के दौरान प्रमुख रूप से योगदान करने वाले टियर 2 तथा टियर 3 शहरों, जैसे कटक, गोवाहाटी, गोरखपुर और मैसूर में ग्राहकों की मांगों में बढ़त दर्ज की है। 41:नए यूजर्स ऐसे थे जिन्होंने पहली बार शॉप्सी पर खरीदारी की जबकि 60:ग्राहक देश के टियर 3शहरों से आए थे। टियर 2शहरों के प्रमुख ग्राहकों ने इस इवेंट के दौरान चॉपर्स, बच्चों के कपड़ों, ईयरबड्स तथा फैशन वियरेबल्स की खरीदारी की और पुरुषों की श्रेणी में टीशर्ट तथा जूते जबकि महिलाओं की श्रेणी में कुर्तियां, साड़ियां और ईयररिंग्स की सबसे ज्यादा बिक्री हुई। इस ग्रैंड शॉप्सी मेला को ग्राहकों ने काफी पसंद किया तथा प्लेटफार्म पर यूजर्स की संख्या में1.4एक्सबढ़त हुई। सेल के आखिरी दिन, शॉप्सी के प्लेटफार्म पर सर्वाधिक ट्रैफिक दर्ज हुआ, जिसने इसे अब तक का सबसे कामयाब कैम्पेन बनाया। आरगन्जा साड़ियां, स्मार्ट वॉच, तथा ईयरबड्स सबसे ज्यादा सर्च किए जाने वाले कीवर्ड्स रहे, जो ग्राहकों की रुचियों तथा प्राथमिकताओं को दर्शाते हैं। शॉप्सी ने इस सेल के दौरान चॉपर्स, वॉटर बॉटल्स तथा लिपस्टिक्स जैसे प्रोडक्ट्स की मांग में बढ़त दर्ज की। अलग-अलग उत्पाद श्रेणियों में शानदार कीमतों के चलते शॉप्सी ने इस दौरान एक बड़े ग्राहक आधार की जरूरतों को पूरा किया। कुछ लोकप्रिय ऑफर थीं दृ 79ध्र से कम की टीशर्ट, 129ध्रु की कीमत से शुरू होने वाले पुरुषों के जूते, 85 रु से शुरू हो रहीं साड़ियां, 19 रु से शुरू किचन बैस्टसैलर्स आइटम्स, 33 रु से शुरू घड़ियां तथा 129ध्रु से शुरू बैडशीट्स। ग्रैंड शॉप्सी मेला ग्राहकों के लिए काफी रोमांचकारी अनुभवों को परोसने वाला आयोजन साबित हुआ और हर घंटे नई आफर्स आती रहीं। इनमें प्राइस कैश एंड लूट आवर्स दृ जिसमें विभिन्न प्रोडक्ट्स पर लिमिटेड टाइम की अतिरिक्त ऑफर्स, झटपट डील्स-जिसमें ईयररिंग्स और रुमालों जैसे उत्पादों को सीमित समय के लिए मात्र 1 रु की कीमत पर बेचा गया, शामिल थीं।

इरडा ने पॉलिसी वापसी शुल्क से संबंधित नियम में बदलाव किया

चर्चित राजनीति। एजेंसी

नयी दिल्ली। बीमा नियामक इरडा ने विभिन्न नियमों को अधिसूचित किया है। इसमें बीमा पॉलिसी वापस या सरेंडर करने से जुड़ा शुल्क भी शामिल है। इसमें बीमा कंपनियों को ऐसे शुल्कों का खुलासा पहले ही करना होता है। इरडा (बीमा उत्पाद) विनियमन, 2024 के तहत छह नियमों को एक एकीकृत ढांचे में मिलाया गया है। इसका उद्देश्य बीमा कंपनियों को उभरती बाजार मांग के अनुसार तेजी से कदम उठाने में सक्षम बनाना, कारोबार सुगमता को बेहतर करना और बीमा को बढ़ावा देना है।

भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (इरडा) ने बयान में कहा कि ये नियम उत्पाद डिजायन और मूल्य निर्धारण में बेहतर कामकाज को बढ़ावा देते हैं। इसमें पॉलिसी वापसी पर गारंटीशुदा मूल्य और विशेष वापसी

● नियम उत्पाद डिजायन और मूल्य निर्धारण में बेहतर कामकाज को बढ़ावा देते हैं

मूल्य से जुड़े नियमों को मजबूत करना शामिल है। इसमें यह भी सुनिश्चित किया गया है कि बीमाकर्ता प्रभावी निगरानी और उचित जांच-परख के लिए ठोस गतिविधियों को अपनाएं। ये नियम एक अप्रैल, 2024 से प्रभाव में आएंगे। यह निर्धारित करते हैं कि यदि पॉलिसी खरीद के तीन साल के भीतर लौटायी या वापस की जाती है, तो वापसी मूल्य समान या उससे भी कम रहने की संभावना है। इसमें कहा गया है कि जिस पॉलिसी को चौथे से सातवें वर्ष तक वापस किया जाता है, उनके वापसी मूल्य में मामूली वृद्धि हो सकती है। बीमा में वापसी मूल्य से तात्पर्य बीमा कंपनियों के पॉलिसीधारक को उसकी परिपक्वता तिथि से पहले पॉलिसी समाप्त करने पर भुगतान की गई राशि से है। यदि पॉलिसीधारक पॉलिसी अवधि के दौरान 'सरेंडर' करता है, तो उसे कमाई और बचत हिस्से का भुगतान किया जाता है। इरडा ने 19 मार्च को हुई अपनी बैठक में बीमा क्षेत्र के लिए नियामकीय ढांचे की व्यापक समीक्षा के बाद आठ सिद्धांत-आधारित एकीकृत नियमों को मंजूरी दी। इन नियमों में पॉलिसीधारकों के हितों की रक्षा, ग्रामीण और सामाजिक क्षेत्र की जिम्मेदारियां, इलेक्ट्रॉनिक बीमा बाजार, बीमा उत्पाद और विदेशी पुनर्बीमा शाखाओं के संचालन के साथ-साथ पंजीकरण, बीमा जोखिम और प्रीमियम के मूल्यांकन, वित्त, निवेश तथा कंपनी संचालन के पहलू जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं। इरडा ने बयान में कहा, ''यह नियामकीय व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसमें 34 नियमों को छह नियमों के साथ बदला गया है। साथ ही नियामकीय परिदृश्य में स्पष्टता को लेकर दो नये नियम लाये गये हैं।

रातों-रात पिंपल्स से चाहिए छुटकारा तो ऐसे करें एलोवेरा का इस्तेमाल, साफ नजर आएगा फर्क

एलोवेरा में मौजूद एंटी-बैक्टीरियल एंटी-सेप्टिक और एंटीइंफ्लेमेटरी गुण स्किन के लिए फायदेमंद होते हैं। एलोवेरा की मदद से आप भी पिंपल्स की समस्या से राहत पा सकते हैं। इन उपायों का इस्तेमाल करने से आपको कुछ ही हफ्तों में असर साफनजर आएगा।

अगर चेहरे पर कभी-कभी पिंपल्स आ जाएं तो इतनी समस्या नहीं होती है। लेकिन जब चेहरा हमेशा पिंपल्स से भरा रहता है तो यह आपकी खूबसूरती को बिगाड़ता है। साथ ही चेहरे के पिंपल्स मेंटल प्रेशर को भी बढ़ाते हैं। पिंपल्स को जबरन हटाने या फोड़ने की गलती नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने पर यह कई बार गंभीर दाग भी छोड़ जाते हैं। एलोवेरा की मदद से आप इन पिंपल्स से छुटकारा पा सकते हैं। एलोवेरा का इस्तेमाल न सिर्फ पिंपल्स को हटाने बल्कि स्किन संबंधी कई समस्याओं से राहत देता है। एलोवेरा में एंटी-बैक्टीरियल गुण पिंपल्स को रोकने में मदद करते हैं। एलोवेरा में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण भी पाए जाते हैं। एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण से पिंपल्स के कारण होने वाली सूजन भी कम होती है।

ऐसे करें इस्तेमाल

एक कटोरी में जरूरत के अनुसार एलोवेरा जेल लें।

एलोवेरा में गुलाब जल की बूंदे डालें और दोनों को अच्छी तरह मिक्स कर लें।

इसके बाद इसे चेहरे पर लगाएं और अच्छे से सूखने दें। इसके बाद पानी से चेहरा धो लें।

अगर आप चाहें तो इस पैक को पूरी रात के लिए भी फेस पर अप्लाई कर सकते हैं। सुबह उठकर अपना चेहरा सादे पानी से धो लें। यह उपाय पिंपल्स के लिए और स्किन के लिए भी फायदेमंद होता है।

एलोवेरा, शहद और दालचीनी फेस मास्क

एलोवेरा जेल- 1 चम्मच

प्योर शहद- 2 चम्मच

दालचीनी पाउडर- एक चौथाई चम्मच

ऐसे करें इस्तेमाल

इन सारी चीजों के मिक्स कर लें। फिर इसको अपने चेहरे पर अप्लाई करें।

इसको लगाने से पहले फेस को अच्छे से साफकर लें।

फिर इस पेस्ट को अपने चेहरे पर अप्लाई करें।

इस पेस्ट को 5-10 मिनट तक चेहरे पर लगा रहने दें।

इसके बाद सादे पानी से चेहरा धो लें। इससे निखार आने के साथ ही पिंपल्स से भी राहत मिलती है।

एप्पल साइडर विनेगर और एलोवेरा फेस मास्क

एलोवेरा का जेल- 1 चम्मच

एप्पल साइड विनेगर- 1 चम्मच

पानी- 1 चम्मच

एक साफकॉटन बॉल

ऐसे करें इस्तेमाल

एप्पल साइड विनेगर और पानी को अच्छे से मिला लें।

इसके बाद उसमें एलोवेरा जेल मिक्स कर दें।

अब कॉटन बॉल की सहायता से इस पेस्ट को पिंपल वाली जगह पर लगाएं।

इसके बाद इसे 10-15 मिनट के लिए लगा रहने दें।

समय पूरा होने के बाद चेहरा साफपानी से धो लें।

अप्रैल में शुरू हो रही रामायण यात्रा का बनें हिस्सा, बच्चों को भी कराएं भगवान राम से जुड़े इन स्थलों के दर्शन

अगर आप भी भारत में मौजूद भगवान राम से जुड़े सभी तीर्थ स्थलों की यात्रा करना चाहते हैं। तो अप्रैल के महीने में आपको इस यात्रा पर जाने का मौका मिल रहा है। रेलवे पर्यटकों के लिए श्भारत गौरव डीलक्स एसी टूरिस्ट ट्रेनश् के माध्यम से यह यात्रा करवाने जा रहा है। अप्रैल के महीने में अगर आप भी बच्चों को कहीं अच्छी जगह ले जाना चाहते हैं। तो ऐसे में आप अपने बच्चों को रामायण यात्रा का अनुभव करवा सकते हैं। बता दें कि तीर्थ पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारतीय रेल भारत गौरव डीलक्स एसी टूरिस्ट ट्रेन शुरू कर रही है। इस ट्रेन के माध्यम से 18 दिन की श्री रामायण यात्रा शुरू की जा रही है। इस यात्रा के तहत ट्रेन भगवान राम के जीवन से जुड़े सभी प्रमुख स्थानों को कवर करेगी। दिल्ली के सफदरजंग रेलवे स्टेशन से 7 अप्रैल को इस 18 दिवसीय यात्रा की शुरूआत की जाएगी। भारतीय रेलवे ने श्देखो अपना देशश् और श्एक भारत श्रेष्ठ भारतश् के विजन को बढ़ावा देते हुए भारत गौरव पर्यटक ट्रेनें चलाने की पहल की है। बता दें कि देश में अब तक 26 गौरव ट्रेनें शुरू की गई हैं।

इस गौरव ट्रेन में आपको कई तरह की सुविधाएं मिलेंगी। यह ट्रेन पूरी एयर कंडीशन होगी। इसमें आपको फर्स्ट एसी और सेकंड एसी की सुविधा मिलेगी। इसके साथ ही सुरक्षा के लिहाज से ट्रेन के हर कोच में सीसीटीवी कैमरे लगे होंगे और साथ ही सुरक्षा गार्डों की संख्या भी बढ़ाई गई है। एयर कंडीशन ट्रेन में यात्रियों को दो शानदार डाइनिंग रेस्त्रां, कोचों में शॉवर क्यूबिकल्स, सेंसर बेस्ड वॉशरूम, एक मॉड्यूलर किचन, फुट मसाजर जैसी कई लग्जरी सुविधाएं मिलेंगी। इस ट्रेन में 156 यात्री बैठ कर रामायण यात्रा का शानदार अनुभव ले सकते हैं।

पहला पड़ाव अयोध्या

बता दें कि यह ट्रेन सबसे पहले दिल्ली से भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या पहुंचेगी। जहां पर पर्यटक श्री राम जन्म भूमि मंदिर, हनुमान मंदिर और सरयू आरती का आनंद लेंगे। फिर ट्रेन का अगला पड़ाव नंदीग्राम में भरत मंदिर और बिहार का सीतामढ़ी मंदिर होगा। इसके बाद फिर पर्यटक माता सीता की जन्मस्थली और जनकपुर नेपाल में जानकी मंदिर के दर्शन करेंगे। सीतामढ़ी के बाद बक्सर के रामरेखा घाट और रामेश्वर नाथ मंदिर के दर्शन करने के सौभाग्य प्राप्त होंगे।

विश्वनाथ मंदिर के दर्शन

इसके बाद ट्रेन का अगला पड़ाव वाराणसी होगा। यहां पर पर्यटक काशी विश्वनाथ मंदिर, तुलसी मंदिर और संकट मोचन हनुमान मंदिर के दर्शन करेंगे। फिर पर्यटकों को प्रयागराज, श्रृंगवेरपुर और चित्रकूट ले जाने के बाद यह ट्रेन नासिक पहुंचेगी। जहां पर त्र्यंबकेश्वर और पंचवटी की यात्रा कराई जाएगी। नासिक के बाद किष्किंधा शहर हम्पी की यात्रा करते हुए वापस दिल्ली पर यह सफर खत्म होगा।

बोर्डिंग स्टेशन

रामायण यात्रा के लिए बोर्डिंग स्टेशन गाजियाबाद, अलीगढ़, टूंडला, इटावा कानपुर और लखनऊ रहेंगे। वहीं डी बोर्डिंग स्टेशन में वीरांगना लक्ष्मीबाई, ग्वालियर, आगरा और मथुरा शामिल हैं।

पैकेज

ऑफिशियल वेबसाइट पर दी गई जानकारी के मुताबिक रामायतण यात्रा के इस पैकेज में सेकेंड एसी के लिए प्रति व्यक्ति 1,14,065 रुपए किराया और फर्स्ट एसी क्लास केबिन के लिए 1,46, 545 रुपए और 1 एसी कूप के लिए 1, 68, 950 रुपए किराया होगा। इस पैकेज में पर्यटकों के एसी होटल में रुकने की व्यवस्था, वेज मील्स की सुविधा, साइट सीन पर लाने ले जाने के लिए व्हीकल और ट्रैवल इंश्योरेंस की सुविधा शामिल है।

घूमेंगे ये जगहें

अयोध्या- राम जन्मभूमि मंदिर, हनुमानगढ़ी, सरयू घाट।

नंदीग्राम- भरत-हनुमान मंदिर और भरत कुंड।

जनकपुर- राम-जानकी मंदिर।

सीतामढ़ी- सीतामढ़ी और पुनौरा धाम में जानकी मंदिर।

बक्सर-राम रेखा घाट, रामेश्वर नाथ मंदिर।

वाराणसी- तुलसी मानस मंदिर, संकट मोचन मंदिर, विश्वनाथ मंदिर और गंगा आरती।

सीता संहता स्थल, सीतामढ़ी- सीता माता मंदिर।

प्रयागराज- भारद्वाज आश्रम, गंगा-यमुना संगम, हनुमान मंदिर.

श्रृंगवेरपुर- श्रृंग ऋषि समाधि और शांता देवी मंदिर, राम चौरा।

चित्रकूट-गुप्त गोदावरी, रामघाट, सती अनुसुइया मंदिर.

नासिक-त्र्यंबकेश्वर मंदिर, पंचवटी, सीता गुफा, कालाराम मंदिर।

हम्पी- अजनद्री पहाड़ी, विरुपाक्ष मंदिर और विठ्ठल मंदिर।

रामेश्वरम- रामनाथस्वामी मंदिर और धनुषकोडी।

भद्राचलम- श्री सीताराम स्वामी मंदिर, अंजनी स्वामी मंदिर।

बच्चों को स्कूल भेजते समय पेरेंट्स अपनाएं ये सुरक्षा कदम, दुर्घटना से होगा बचाव

बच्चों की परिक्षाएं खत्म होने के बाद 1 अप्रैल से नया सेशन भी शुरु होने वाला है। स्कूल में बच्चे बसों या फिर वैन में ही जाते हैं। ऐसे में बसों और वैन में बच्चों को स्कूल भेजते समय माता-पिता को उनकी सेफ्टी की चिंता रहती है। माता-पिता की चिंता को ध्यान में रखते हुए पंजाब सरकार ने कुछ कड़े कदम उठाए हैं। तो चलिए आपको बताते हैं कि पंजाब सरकार ने बच्चों की सुरक्षा के लिए क्या कदम उठाए हैं....

सेफवाहन स्कूल पॉलिसी का बनाया नियम

विभाग ने सारे निजी स्कूलों को सरकार के द्वारा लागू की गई सेफ स्कूल वाहन पॉलिसी को अमल में लाने के निर्देख देकर बकायदा नियमों के सभी नोटिफिकेशन भी जारी कर दिया है। जानकारी की मानें तो विभाग ने ट्रांसपोर्ट विभाग और पुलिस की एक कॉपी भेजकर स्कूलों के लिए चलने वाली बसों में पॉलिसी के नियमों को चेक करने के लिए कहा है। इसके अलावा शिक्षा विभाग के द्वारा निजी स्कूलों के विद्यार्थियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सारे जिला शिक्षा अधिकारियों को सेफस्कूल वाहन पॉलिसी लागू करने के भी दिशा निर्देश जारी किए हैं। विभाग के द्वारा जारी किए गए पत्र में कहा गया है कि प्राइवेट स्कूलों के विद्यार्थी अलग-अलग साधनों के जरिए स्कूल में आते हैं ऐसे में उन्हें दुर्घटनाओं से बचाने के लिए पंजाब सरकार ने सेफ वाहन स्कूल पॉलिसी लागू की है, ताकि बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखा जाए।

इसके अलावा पेरेंट्स बच्चों को कुछ यातायत नियम सिखाकर दुर्घटना से बचा सकते हैं। तो आइए जानते हैं इनके बारे में...

ट्रैफिक सिग्नल का मतलब समझाएं

आप बच्चों को दुर्घटना से बचाने के लिए सबसे पहले ट्रैफिक सिग्नल से जुड़ा नियम सिखाएं। उन्हें बताएं कि इसमें तीन तरह की लाल, हरी और पीली बत्ती होती है। इन तीनों बत्तियों का अलग-अलग महत्व है ऐसे में उन्हें समझाएं कि जब भी वह सड़क पार करें तो दुर्घटना से बचने के लिए इन तीन बत्तियों से जुड़े नियमों का पालन जरुर करें।

जल्दबाजी न करने दें

इसके अलावा बच्चों को यह भी बताएं कि यदि वह सड़क पर जाते हैं तो जल्दबाजी न करें। खासकर बस में बैठने के दौरान थोड़ी सावधानी बरतने को कहें। इसके अलावा चलती बस में बच्चों को न चढ़ाएं इससे भी दुर्घटना हो सकती है।

बस में लाइन बनाकर चढ़ने की दें सीख

बच्चों को सिखाएं कि उन्हें एक लाइन में बस में बैठना चाहिए। इसके अलावा बस में कभी भी खड़े होकर नहीं बल्कि बैठ कर जाना चाहिए। क्योंकि तेज मोड़ के दौरान वह गिर सकते हैं। इसलिए उन्हें थोड़ी सावधानी बरतने को कहें।

राजनीति समाज के लिए काम करने का एक तरीका है : कंगना

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत, जो फिलहाल अपनी आगामी राजनीतिक फिल्म इमरजेंसी की तैयारी कर रही हैं, ने राजनीति में प्रवेश किया है। वह भाजपा के टिकट पर हिमाचल प्रदेश के मंडी से लोकसभा चुनाव लड़ने जा रही हैं। अभिनेत्री ने राजनीति में आने का कारण साझा किया है। कंगना ने कहा कि भारत के लोगों ने उन जैसे एक कलाकार को बहुत कुछ दिया है और वह उसे समाज को लौटाना जरूरी समझती हैं और राजनीति ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है।

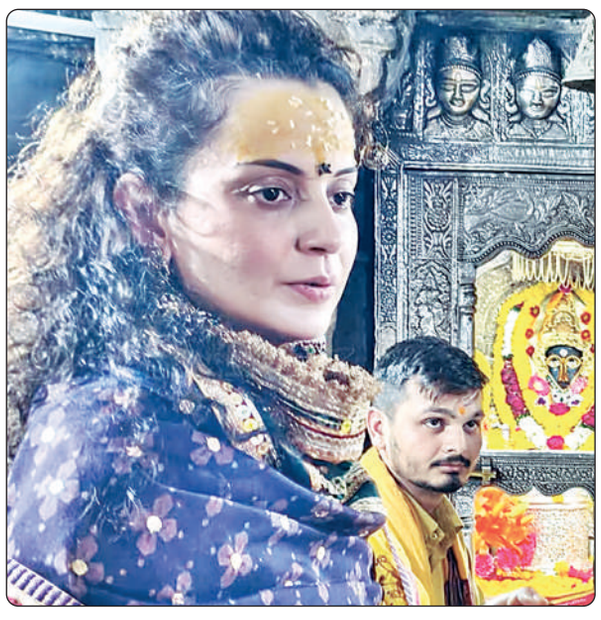

अभिनेत्री ने सोमवार को एक इवेंट के दौरान मीडिया से बात करते हुए कहा कि उनके लिए राजनीति प्रचार पाने या पैसा कमाने का नहीं, बल्कि देश की सेवा करने का जरिया है। उन्होंने कहा ÷भगवान दयालु रहे हैं और उन्होंने मुझे बहुत आशीर्वाद दिया है। मेरे लिए राजनीति प्रचार पाने या पैसा कमाने का साधन नहीं है, यह लोगों की सेवा करने का एक तरीका है। सार्वजनिक शख्सियतों और अभिनेताओं के रूप में हम उस बिंदु पर पहुंच जाते हैं, जहां दर्शक भी समाज को वापस देने के मामले में हमसे कुछ उम्मीद करते हैं। मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब लोगों की वजह से है और भाजपा लोगों की पार्टी है। मैं यह सुनिश्चित करूंगी कि कोई कसर न छोड़ूं और लोगों ने मुझे जो आशीर्वाद दिया है, उसकी तुलना में उन्हें कहीं अधिक लौटाऊं। मैंने भाई-भतीजावाद शब्द का इस्तेमाल किया था और मैं कहना चाहूंगा कि भाजपा एक निष्पक्ष दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली वाली राजनीतिक पार्टी है। कंगना ने यह भी कहा कि वह पार्टी में बॉलीवुड स्टार के तौर पर नहीं, बल्कि एक पार्टी कार्यकर्ता के तौर पर शामिल हुई हैं। उन्होंने कहा, आज मैं इस पार्टी में एक बॉलीवुड स्टार के तौर पर शामिल नहीं हुई हूं, मैं एक कार्यकर्ता के तौर पर पार्टी का हिस्सा बनी हूं। पार्टी व समाज के हित में काम करूंगी। आज बहुत सारे लोग यहां एकत्र हुए हैं और उन्होंने मुझे इस रास्ते पर मार्गदर्शन करते हुए यह अवसर दिया है। कंगना के पिता अमरदीप रनौत ने उनके बयान को दोहराते हुए कहा कि अभिनेत्री समाज के लिए काम करने के लिए पार्टी में शामिल हुई हैं। उन्होंने कहा कि उनके परिवार की किसी और राजनीतिक दल से कोई दुश्मनी नहीं है। इससे पहले, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने रविवार को हिमाचल प्रदेश की मंडी सीट से कंगना को और कांगड़ा सीट से राजीव भारद्वाज को अपना उम्मीदवार घोषित किया था। वहीं दूसरी ओर अभिनेत्री और अब बीजेपी की लोकसभा प्रत्याशी कंगना रनौत पर आपत्तिजनक टिप्पणी के बाद कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत घिर गई हैं। सोमवार को सुप्रिया श्रीनेत के इंस्टाग्राम अकाउंट से कंगना रनौत पर एक अपमानजनक पोस्ट किया गया। इस पर विवाद छिड़ने के बाद सुप्रिया श्रीनेत ने सफाई दी कि उन्होंने ये आपत्तिजनक टिप्पणी नहीं की है। अपनी सफाई में श्रीनेत ने कहा कि उनके फेसबुक और इंस्टाग्राम अकाउंट का एक्सेस कई लोगों के पास है। इस टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए कंगना रनौत ने कहा है कि हमें अपनी बेटियों को पूर्वाग्रहों के बंधनों से मुक्त करना चाहिए। कंगना की उम्मीदवारी के ऐलान के बाद ही सुप्रिया श्रीनेत के इंस्टाग्राम अकाउंट से आपत्तिजनक पोस्ट किया गया। सुप्रिया श्रीनेत इस समय कांग्रेस पार्टी के सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेफॉर्म को संभालने वाले विभाग की चेयरपर्सन भी हैं। सुप्रिया श्रीनेत की सफ़ाई के बावजूद बीजेपी ने उनके बयान को लेकर हमलावर रुख़ अपनाया हुआ है। वहीं, राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) ने चुनाव आयोग को चिट्ठी लिखकर श्रीनेत के ख़िलाफ़ कार्रवाई की मांग की है। दिल्ली यूनिवर्सिटी से इतिहास में मास्टर्स की पढ़ाई करने वालीं सुप्रिया श्रीनेत ने 17 सालों तक प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में काम किया। मीडिया में श्रीनेत ने अपने करियर की शुरुआत साल 2001 में इंडिया टुडे से की और फिर साल 2004 में बतौर असिस्टेंट एडिटर एनडीटीवी से जुड़ीं। :: एजेंसी

प्रथम पृष्ठ का शेष समाचार

शोक, संताप नहीं

जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सफलता प्राप्त हुई है। 7 वर्ष श्नए भारत के नए उत्तर प्रदेशश् के सृजन को समर्पित रहे हैं। लोक कल्याण के पथ पर चलते हुए डबल इंजन सरकार प्रदेश वासियों के हर सपने को साकार करने के लिए पूरी प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। प्रदेश की जनता-जनार्दन और सभी सहयोगियों का सहयोग-समर्थन के लिए आभार।

योगी ने गणेश

समाजसेवी, गणेश शंकर विद्यार्थी की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। माँ भारती की सेवा में समर्पित आपका संपूर्ण जीवन युगों-युगों तक हम सभी को देश सेवा हेतु प्रेरित करता रहेगा। बता दें कि विद्यार्थी का जन्म आश्विन शुक्ल 14, रविवार सं. 1947 (1890 ई.) में ननिहाल, इलाहाबाद के अतरसुइया मोहल्ले में दुर्गा पूजा पार्क के निकट, श्रीवास्तव (वर्मा - कायस्थ) परिवार में हुआ था। वह रहने वाले मुंशी जयस्थ हथगाँव, जिला फतेहपुर (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे। माता का नाम गोमतीदेवी था।

मुख्यमंत्री आज जायेंगे मेरठ, मथुरा और गाजियाबाद : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कल बुधवार को मथुरा ,मेरठ और गाजियाबाद में आयोजित प्रबुद्ध सम्मेलनों को संबोधित करेंगे।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दोपहर 12.30 बजे मंगलम ग्रीन रिसार्ट,गोवर्धन चौराहा मथुरा मे प्रबुद्ध सम्मेलन को संबोधित करेंगे। दोपहर 2.30 बजे चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ और सायं 4 .00 बजे पंडित दीन दयाल उपाध्याय आडिटोरियम ,नेहरू नगर गाजियाबाद में आयोजित प्रबुद्ध सम्मेलन को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ संबोधित करेंगे।

भाजपा उम्मीदवार बनीं

आपके हाथ मेरे और संदेशखाली की सभी महिलाओं के सिर पर हैं। ऐसा लगता है कि हमें भगवान राम का आशीर्वाद मिला है। इसके बाद बीजेपी उम्मीदवार ने पीएम को संदेशखाली की महिलाओं की आपबीती सुनाई। उन्होंने आगे कहा कि हमारे साथ एक बड़ी त्रासदी हुई। सिर्फ संदेशखाली की महिलाओं को ही नहीं, बल्कि पूरे बशीरहाट की महिलाओं को इसका सामना करना पड़ा। हम आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हैं। हम 2011 से वोट नहीं कर पाए हैं और हमें उम्मीद है कि इस बार भी वोट डालेंगे। पीएम मोदी ने उनके साहस की सराहना करते हुए कहा कि रेखा जी, आपने संदेशखाली में बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी है। एक तरह से आप शक्ति स्वरूपा हैं। आपने इतने शक्तिशाली लोगों को जेल भेजा। आप चुनाव जरूर जीतेंगी। क्या आपके पास है? कोई अंदाज़ा है कि आप कितने साहसी हैं?

केरल : मोदी ने

को फोन किया। पीएम ने उनसे पूछा कि उनका अभियान कैसा चल रहा है। उन्होंने सहकारी बैंक घोटाले के आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का वादा किया है। पीएम की योजना यह सुनिश्चित करने की है कि ईडी द्वारा कुर्क की गई संपत्तियों और पैसों से गरीबों को पैसा वापस मिले। टीएन सरासु ने पीएम को बताया कि केरल में सहकारी बैंकों के साथ एक समस्या है जो सीपीआई (एम) नेताओं द्वारा शासित हैं। गरीबों का बैंक में जमा पैसा लूट लेते हैं। उन्हें उनके पैसे वापस नहीं मिल रहे हैं। तो, यहां के लोगों की ओर से एक बड़ी शिकायत है...क्या आप इसके खिलाफ कुछ कर सकते हैं? इसके जवाब में पीएम ने कहा कि मुझे खुशी है कि एक उम्मीदवार के तौर पर आप जनता के मुद्दे उठा रही हैं। यह किसी भी लोक सेवक के लिए अच्छी बात है...हां, मैंने इसके बारे में सुना है। मेरे पास इसके बारे में कुछ विवरण हैं और आप सही हैं कि बहुत सारे गरीब लोग प्रभावित हुए हैं। हमारी सरकार इसमें शामिल सभी लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी और हम यह सुनिश्चित करेंगे कि गरीबों को न्याय मिले। प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि मैं कानूनी सलाह लूंगा और ईडी जो भी संपत्ति जब्त करेगा, अगर इसमें आम आदमी का पैसा शामिल है, तो मैं देखूंगा कि एक-एक पैसा संबंधित व्यक्ति को वापस मिलना चाहिए। हम ऐसा सख्ती से करेंगे।

नेवी ने किया

अभ्यास का हार्बर चरण 18-25 मार्च तक विशाखापत्तनम में आयोजित किया गया था। इसमें प्री-सेल चर्चा, पेशेवर विषयों पर विषय विशेषज्ञ आदान-प्रदान और विभिन्न कार्यों की योजना और निष्पादन प्रक्रियाओं पर विचार-विमर्श शामिल था। ट्रायम्फ 2024 के हिस्से के रूप में, यूएसएस नेवी समरसेट जहाज विशाखापत्तनम आया, जो एक सैन एंटोनियो-क्लास उभयचर परिवहन डॉक जहाज है। इसके प्रत्येक डेक में फ्लाइट 93 के स्मृति चिन्ह हैं, जिसमें मेमोरियल रूम की ओर जाने वाला एक रास्ता भी शामिल है, जिस पर यात्रियों के नाम अंकित हैं। इससे पहले शनिवार को, यूएसएस समरसेट के चालक दल ने कहा कि वे विशाखापत्तनम की अपनी यात्रा और टाइगर ट्रायम्फ के हिस्से के रूप में भारतीय नौसेना के साथ संयुक्त अभ्यास के शानदार अनुभव को हमेशा याद रखेंगे। जहाज के एक पायलट एशले अंबुएहल ने कहा, इस जहाज पर एक हजार से अधिक नाविक और नौसैनिक यात्रा करते हैं, जिसमें दर्जनों सैन्य वाहनों को ले जाने की क्षमता है। नाव की मरम्मत के लिए एक कार्यशाला है। इसके अलावा एक उड़ान डेक है जिसपर विमान और हेलीकॉप्टर उतर सकते हैं और तैनात हो सकते हैं। बता दें कि टाइगर ट्रायम्फ, का अर्थ ट्राई-सर्विसेज इंडिया-यू.एस. है। उभयचर अभ्यास, अमेरिकी और भारतीय सशस्त्र बलों के बीच एक संयुक्त अभ्यास है जो मानवीय सहायता और आपदा राहत तैयारी और अंतरसंचालनीयता को बढ़ाने पर केंद्रित है। यह बंदरगाह चरण और समुद्री चरण सहित 18 से 31 मार्च तक आयोजित किया जा रहा है।

अदालतें लोगों को

इसलिए, हम उच्च न्यायालय द्वारा लगाई गई शर्त को उस सीमा तक रद्द और खारिज करते हैं, जैसा कि ऊपर बताया गया है। दास ने जमानत पर रिहाई का निर्देश देते हुए 11 अगस्त, 2022 के आदेश में लगाई गई शर्त में संशोधन की मांग करते हुए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था। उनके वकील ने उच्च न्यायालय को बताया था कि अपीलकर्ता को एक राजनीतिक व्यक्ति होने के नाते आगामी आम चुनाव के मद्देनजर राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति दी जा सकती है। राज्य ने उनकी प्रार्थना पर आपत्ति जताई थी और कहा था कि जमानत पर रिहा होने के बाद उन पर जानलेवा हमला किया गया था। उच्च न्यायालय ने कहा था, दोनों पक्षों को सुनने और वर्तमान स्थिति पर विचार करने के बाद, क्योंकि यह एक तथ्य है कि वह न केवल अन्य मामलों में शामिल था, बल्कि उस पर जानलेवा प्रयास भी किया गया था, जमानत की शर्तों को संशोधित करना अनुचित होगा। अपीलकर्ता को राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए कहा गया है जो अपीलकर्ता से जुड़े इलाके में कानून और व्यवस्था की स्थिति को और खराब करेगा।

भारत में विभिन्न

बता दें कि सुजुकी को भारत और इसकी संस्कृति के बारे में जानना काफी अधिक पसंद है। एक अन्य वीडियो में वो गुजिया खाते हुए दिख रहे है। हिंदी में ही वो गुजिया को खाकर कहते हैं, ये बुहत अच्छा है। वहीं भारत में रूस और इजराइल के दूतों ने मंगलवार को हिंदी में होली की शुभकामनाएं दीं। भारत में इज़राइल के राजदूत नाओर गिलोन ने कहा कि उन्हें इस साल, मुझे होली के आनंदमय उत्सव में शामिल होना मुश्किल लग रहा है, यह जानते हुए कि इजरायली बच्चे, महिलाएं और पुरुष अभी भी गाज़ा के अंधेरे सुरंगो में बंदी बने हुए हैं। परन्तु, हमारे भारतीय परिवार को होली की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ! आइए इस दिन को बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए प्रार्थनाओं के साथ मनाएं। भारत में जर्मन राजदूत डॉ फिलिप एकरमैन ने लिखा कि होली की शुभकामनाएं। यह देखते हुए कि यह एक लंबा सप्ताहांत है। अपने प्रियजनों के साथ वसंत के त्योहार और संस्कृति और जीवन के इस सबसे रंगीन उत्सव का आनंद लें।

लोकसभा चुनाव : 46

समाज पार्टी से अनीस अहमद खान (फूल बाबू), समाजवादी पार्टी से भगवत सरण गंगवार, स्वतंत्र प्रत्याशी में आदर्श पाण्डेय हैं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि नामांकन का समय पूर्वाह्न 11 बजे से अपराह्न 03 बजे के मध्य निर्धारित है। नामांकन के दौरान सुरक्षा की व्यापक व्यवस्था की गयी है। सम्पूर्ण नामांकन प्रक्रिया की वीडियोग्राफी भी करायी जा रही है। नामांकन भरने की अंतिम तिथि 27 मार्च, 2024 (बुधवार) निर्धारित है। 28 मार्च, 2024 (वृहस्पतिवार) को नामांकन पत्रों की संवीक्षा की जायेगी। प्रत्याशियों द्वारा 30 मार्च, 2024 (शनिवार) तक नाम वापस लिये जा सकेंगे। प्रथम चरण में 19 अप्रैल, 2024 (शुक्रवार) को मतदान होगा।

बेंगलुरु में कार

और अन्य गैर-जरूरी उद्देश्यों के लिए पेयजल का उपयोग करने के लिए 22 घरों पर कुल 1.1 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। इसके अलावा ठैंठ ने 7 मार्च को बेंगलुरु शहर में वाहनों की सफाई, इमारतों और सड़कों के निर्माण, मनोरंजन उद्देश्यों या फव्वारे जैस कार्यों के लिए पेयजल के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने का आदेश जारी किया था।आदेश में मॉल और सिनेमा हॉल को केवल पीने के लिए पानी का उपयोग करने की अनुमति दी गई थी। बता दें कि बेंगलुरु इस समय पानी की गंभीर कमी के संकट से गुजर रहा है। जहां तक की लोगों को नहाने और कपड़े धोने के लिए भी पानी नहीं मिल पा रहा है।इतना ही नहीं घरों के नलों में भी पानी नहीं है इसलिए टैंकरों का इंतजाम किया गया है। टैंकरों पर भी सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजय शंकर शर्मा द्वारा ग्रुप 5 प्रकाशन 55-बी, वजीर हसन रोड, लखनऊ से मुद्रित एवं डी-206-सी, विभूतिखण्ड गोमती नगर लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक- विजय शंकर शर्मा
(M.)- 9628478339, 9335322739 Ph: 0522- 4075237 Fax: 0522- 2306048 Email- charchitrajnit@gmail.com

भाजपा की छठीं सूची जारी, राजस्थान से दो, मणिपुर से एक लोकसभा उम्मीदवार के नाम का ऐलान

सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, बदायूं समेत कई प्रत्याशियों के नाम की घोषणा, योगी ने कहा-होगी रिकॉर्ड जीत

चर्चित राजनीति। संवाददाता

नई दिल्ली/लखनऊ। भाजपा ने लोकसभा उम्मीदवारों की छठी सूची मंगलवार को जारी कर दी। इसमें राजस्थान से दो और मणिपुर से एक लोकसभा उम्मीदवार के नाम का ऐलान किया गया है। पार्टी ने राजस्थान के करौली-धौलपुर से वर्तमान सांसद मनोज राजोरिया का टिकट काटकर इंदु देवी जाटव को उम्मीदवार बनाया है। वहीं, दौसा से भी मीना जसकौर का टिकट काटकर कन्हैया लाल मीणा को उम्मीदवार घोषित किया है।भाजपा ने मणिपुर के इनर मणिपुर लोकसभा सीट से केंद्रीय मंत्री डॉ. राजकुमार रंजन सिंह का टिकट काटकर थौनाओजम बसंत कुमार सिंह को उम्मीदवार बनाया है।

बता दें कि भारतीय जनता पार्टी लोक सभा चुनाव की तैयारियों में जोर-शोर से जुटी है। बीते रविवार को भाजपा ने लोकसभा प्रत्याशियों की पांचवीं लिस्ट जारी की है, जिसमें यूपी, बिहार समेत कई अन्य राज्यों की लोक सभा सीटों पर उम्मीदवारों के नाम घोषित किए हैं। उत्तर प्रदेश में 13 लोक सभा सीटों पर प्रत्याशियों के नाम फाइनल किए गए हैं। इनमें सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, बदायूं आदि सीटें शामिल हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश में न सिर्फ रिकार्ड संसदीय सीटें जीतने के प्रति आश्वस्त नजर आते हैं, बल्कि आत्मविश्वास से ओतप्रोत भी। कहते हैं- 'विपक्ष एकजुट होने का स्वांग तो करता है, लेकिन उनका गठबंधन स्वार्थ का है, जबकि मोदी एक ब्रांड हैं, विकास की गारंटी हैं, रोजगार की गारंटी हैं, निवेश की गारंटी हैं, परिवार कल्याण की गारंटी हैं।'

मुख्यमंत्री कहते हैं कि लोगों ने महसूस किया है कि प्रदेश के हर सेक्टर में परिवर्तन हुआ है। भाजपा इस चुनाव में अब तक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन करने जा रही है। समाजवादी पार्टी के पीडीए फार्मूले पर वह कहते हैं यह 'परिवार दंगा एसोसिएशन' है, भाजपा का मुकाबला कर ही नहीं सकता। बातचीत में योगी ने कहा कि देखिए, किसी के लड़ने या गठबंधन का पार्ट होने से बीजेपी का

वोट बैंक प्रभावित नहीं होता है। बीजेपी, मोदीजी के नेतृत्व में अपने कार्य के भरोसे जनता-जनार्दन का आशीर्वाद पाने में सफल रहेगी। विपक्ष के गठबंधन बनते और टूटते रहते हैं, जितनी बार बनता है, उससे ज्यादा बार टूट भी जाता है। यही नीयत है, इन लोगों की, क्योंकि स्वांग पर आधारित गठबंधन है। न मूल्य हैं और न ही आदर्श, उनके व्यक्तिगत स्वार्थ जब टकराते हैं तो टूट भी जाते हैं उतने ही भागों में। अभी तो वह इसी प्रकार से आपस में लड़ते-भिड़ते रहते हैं। 2022 के विधानसभा चुनाव में भी गठबंधन करने के प्रयास किए गए थे। आज फिर वही स्थिति उनके सामने आ गई है कि अब कोई गठबंधन का पार्ट नहीं बन पा रहा है। वे किसी तरह अपनी लाज बचाने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन कोई असर नहीं पड़ेगा। भाजपा सभी सीटों पर जीतेगी।

बीजेपी से टिकट कटने के बाद वरुण गांधी को आया कांग्रेस से खुला ऑफर : लोकसभा चुनाव शुरू होने में अब मात्र चंद दिन बचे हैं। उत्तर प्रदेश की राजनीति में सियासी हलचल भी तेज हो गई है। वरुण गांधी वो नाम है जिस पर सभी की निगाहें टिकी हुई हैं। अब बीजेपी से टिकट कटने के बाद वरुण गांधी को कांग्रेस पार्टी के एक वरिष्ठ नेता की ओर से बड़ा ऑफर मिला है। बहुत दिनों से कयास लगाए जा रहे थे कि पीलीभीत से बीजेपी वरुण गांधी पर दांव पर लगा सकती है, लेकिन बीजेपी ने इनका पत्ता काट दिया। इसी की साथ ही वरुण गांधी के लिए अन्य राजनीतिक दलों से ऑफर आने लगे हैं। मंगलवार को कांग्रेस के सीनियर नेता और सांसद अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि वो आए तो हमें खुशी होगी।

मीडिया से बात करते हुए राहुल गांधी और सोनिया गांधी के करीबी अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि वरुण गांधी को कांग्रेस पार्टी में आना चाहिए, हमें खुशी होगी। उन्होंने कहा कि वरुण गांधी बड़ा नाम हैं, वरिष्ठ नेता हैं और उनकी छवि काफी साफ है। अधीर रंजन चौधरी ने भारतीय जनता पार्टी को निशाने पर लेते हुए कहा कि वरुण गांधी का गांधी परिवार से जुड़ाव है, इसलिए बीजेपी ने उनका टिकट काट दिया। मुझे तो लगता है कि वरुण गांधी को कांग्रेस में आना चाहिए। उनके आने से सब खुश होंगे। गौरतलब है कि अधीर रंजन चौधरी को राहुल गांधी और सोनिया गांधी का करीबी माना जाता है। उनकी ओर से आए इस बयान से ये कयास लगने लगे हैं कि कांग्रेस वरुण गांधी को टिकट दे सकती है या फिर इस पर विचार कर सकती है।

बसपा ने 25 सीटों के प्रत्याशी किए घोषित : बसपा ने लोकसभा चुनाव के लिए रविवार को प्रत्याशियों के नामों की दो अलग-अलग सूचियां जारी करते हुए प्रदेश की 25 सीटों के लिए उम्मीदवार घोषित कर दिए। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव मेवालाल गौतम की ओर से रविवार को जारी की गई 16 प्रत्याशियों की पहली और नौ उम्मीदवारों की दूसरी सूची में बसपा ने सभी सीटों पर नए चेहरों को आजमाया है। हालांकि पार्टी ने नगीना के बसपा सांसद गिरीश चंद्र जाटव को इस बार बुलंदशहर सीट पर आजमाने का निर्णय किया है। घोषित प्रत्याशियों में दो महिलाएं हैं। पहली सूची के 16 प्रत्याशियों में सात मुस्लिम हैं। सात प्रत्याशी अनुसूचित जाति व तीन अन्य पिछड़ा वर्ग के हैं। चार प्रत्याशी ब्राह्मण, तीन ठाकुर और एक जैन (अल्पसंख्यक) बिरादरी से हैं। इनमें से ज्यादातर नामों की घोषणा क्षेत्रीय स्तर पर जोनल कोआर्डिनेटर पहले ही कर चुके हैं। पहली सूची में सात मुस्लिम प्रत्याशियों को उतार कर बसपा ने अतीत में पश्चिमी उप्र में सफलतापूर्वक आजमाए गए दलित-मुस्लिम गठजोड़ पर फिर दांव लगाने का इरादा जताया है। वहीं, प्रत्याशियों के चयन में मुस्लिम चेहरों को तरजीह देकर उसने आइएनडीआइए गठबंधन की राह मुश्किल करने का संकेत दिया है। अन्य सीटों पर भी विभिन्न जातियों के उम्मीदवार उतार कर सोशल इंजीनियरिंग के प्रयोग को विविधता दी है। कांग्रेस की ओर से उप्र के लिए अपने नौ प्रत्याशियों की पहली सूची जारी करने के चंद घंटों बाद अपने उम्मीदवारों की सूचियां जारी करा कर बसपा प्रमुख मायावती ने यह संदेश भी दे दिया कि कांग्रेस के साथ उनकी पार्टी के गठबंधन की अब कोई गुंजायश नहीं है।

बसपा ने जिन 25 सीटों के लिए प्रत्याशी घोषित किए हैं, उनमें से उसने चार सीटें- सहारनपुर, बिजनौर, नगीना व अमरोहा, पिछले लोकसभा चुनाव में जीती थीं। सहारनपुर सीट पर बसपा ने तीन माह पूर्व पार्टी में वापसी करने वाले जिला पंचायत सदस्य माजिद अली को उम्मीदवार बनाया है। बसपा ने उन्हें सहारनपुर का लोकसभा क्षेत्र प्रभारी भी बनाया था। कैराना से बसपा ने बीएसएफ के रिटायर्ड जवान श्रीपाल सिंह राणा पर दांव लगाया है जो ठाकुर बिरादरी के हैं। मुजफ्फरनगर सीट पर बसपा ने ओबीसी कार्ड खेलते हुए प्रजापति बिरादरी से ताल्लुक रखने वाले दारा सिंह प्रजापति को मैदान में उतारा है। बिजनौर सीट पर भी बसपा ने पिछड़ा कार्ड खेला है। यहां पार्टी ने लोकदल छोड़कर आए जाट बिरादरी के चौधरी विजेंद्र सिंह को मौका दिया है। नगीना (अनुसूचित जाति) सीट पर पार्टी ने अपने वर्तमान सांसद गिरीश चंद्र जाटव की बजाय सुरेन्द्र पाल सिंह को आजमाने का निर्णय किया है। सुरेन्द्र पाल सिंह वर्ष 2022 के विधान सभा चुनाव में बसपा के टिकट पर मुजफ्फरनगर की पुरकाजी सीट से चुनाव लड़े लेकिन जीत नहीं सके थे। मुरादाबाद मंडल की चार लोकसभा सीटों पर बसपा ने मुस्लिम प्रत्याशी उतारे हैं। मुरादाबाद सीट पर पार्टी ने नगर पालिका ठाकुरद्वारा के वर्तमान अध्यक्ष मोहम्मद इरफान सैफी को उम्मीदवार बनाया है।

वहीं रामपुर में पठान बिरादरी से ताल्लुक रखने वाले जीशान खां को मौका दिया है। संभल में बसपा ने पूर्व विधायक सौलत अली पर भरोसा जताया है। सौलत अली 1996 में बतौर सपा प्रत्याशी मुरादाबाद देहात क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए थे। वर्ष 2012 में उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में मुरादाबाद की कुंदरकी विधानसभा सीट पर चुनाव लड़ा, लेकिन हार गए। उनके पिता रियासत हुसैन मुरादाबाद देहात क्षेत्र से चार बार विधायक रहे। अमरोहा से बसपा ने मुजाहिद हुसैन को प्रत्याशी बनाया है जो पेशे से यूनानी चिकित्सक रहे हैं जबकि उनकी पत्नी बागेजहां डासना नगर पंचायत की अध्यक्ष हैं। मेरठ से पार्टी ने त्यागी ब्राह्मण समाज के देवव्रत त्यागी को प्रत्याशी घोषित किया है। बागपत से पार्टी ने गुर्जर बिरादरी के प्रवीण बैंसला को उम्मीदवार बनाया है जो पेशे से अधिवक्ता हैं। वहीं गौतम बुद्ध नगर सीट से बसपा ने ठाकुर बिरादरी के पूर्व विधायक राजेन्द्र सिंह सोलंकी को उम्मीदवार बनाकर यहां चुनावी मुकाबले को रोचक बना दिया है। बसपा ने नगीना सीट के मौजूदा सांसद गिरीश चंद्र जाटव को इस बार बुलंदशहर (अनुसूचित जाति) सीट से आजमाने का फैसला किया है।

आंवला सीट से पार्टी ने हाल ही में सपा छोड़कर बसपा में शामिल हुए आंवला नगर पालिका के अध्यक्ष आबिद अली को उम्मीदवार घोषित किया है। वहीं पीलीभीत सीट पर पूर्व मंत्री और बीसलपुर के विधायक रह चुके अनीस अहमद खां उर्फ फूल बाबू को मैदान में उतारा है। शाहजहांपुर (अनुसूचित जाति) सीट पर बसपा ने शिक्षक संघ से जुड़े रहे पूर्व प्रधानाचार्य डा.दोदराम वर्मा को प्रत्याशी बनाया है। बसपा ने हाथरस (अनुसूचित जाति) सीट से हेमबाबू धनगर को प्रत्याशी बनाया है। पेशे से साफ्टवेयर इंजीनियर हेमबाबू बसपा की स्थापना के समय से पार्टी से जुड़े रहे पुराने कार्यकर्ता जगदीश प्रसाद धनगर के पुत्र हैं।

मथुरा से ब्राह्मण चेहरे पर दांव लगाते हुए बसपा ने छावनी परिषद के पूर्व पार्षद और अधिवक्ता कमलकान्त उपमन्यु को प्रत्याशी घोषित किया है। वह 1999 में बसपा के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़े लेकिन जीत नहीं पाए थे। पार्टी ने आगरा से जाटव बिरादरी की पूजा अमरोही को उम्मीदवार बनाया है। पूजा कांग्रेस की राज्यसभा सदस्य रहीं सत्या बहन की बेटी हैं। फतेहपुर सीकरी सीट पर ब्राह्मण कार्ड चलते हुए बसपा ने राम निवास शर्मा को मैदान में उतारा है। फिरोजाबाद सीट पर पार्टी ने सतेन्द्र जैन सौली के रूप में नए चेहरे पर भरोसा जताया है।

देश-विदेश डायरी

पाकिस्तान में अफगानों की वापसी के लिए दूसरे चरण की तैयारी, मैपिंग प्रक्रिया शुरू

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान ने लगभग दस लाख अफगानों को अफगानिस्तान वापस भेजने के अपने अभियान के दूसरे चरण को शुरू करने की तैयारी शुरू कर दी है, जिसमें जिला अधिकारियों और पुलिस को डेटा खोजने और इकट्ठा करने के आदेश दिए गए हैं। पाकिस्तान स्थित डॉन ने दस्तावेजों का हवाला देते हुए देश भर में उनके ठिकाने की जानकारी दी। रिपोर्ट में कहा गया है कि घटनाक्रम से वाकिफ एक अधिकारी ने कहा कि अफगान नागरिक कार्ड (एसीसी) धारकों की मैपिंग में तेजी लाने के लिए जिला प्रशासन और पुलिस को निर्देश जारी किए गए हैं। अभी तक कोई तारीख घोषित नहीं की गई है। हालाँकि, एक अधिकारी ने कहा कि पाकिस्तान की संघीय सरकार से हरी झंडी मिलने के बाद, एसीसी धारकों को वापस लाने का अभियान गर्मियों की शुरुआत में शुरू हो सकता है। डॉन से बात करते हुए खैबर पख्तूनख्वा के अतिरिक्त मुख्य सचिव आबिद मजीद ने कहा, ष्हमने मैपिंग प्रक्रिया पहले ही शुरू कर दी है। उन्होंने कहा, रमजान के बाद इसमें तेजी आएगी और हमें उम्मीद है कि 30 अप्रैल से पहले सर्वेक्षण पूरा कर लिया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (यूएनएचसीआर) के अनुसार, अफगानिस्तान में 2.18 मिलियन दस्तावेजी अफगान शरणार्थी हैं, जिनमें 2006-07 में आयोजित जनगणना के अनुसार पंजीकरण प्रमाण (पीओआर) कार्ड वाले 1.3 मिलियन शरणार्थी और अतिरिक्त 880,000 शरणार्थी शामिल हैं। 2017 में एक पंजीकरण अभियान के बाद एसीसी जारी किए गए।अगस्त 2021 में तालिबान द्वारा सत्ता पर कब्जा करने के बाद अफगान पाकिस्तान पहुंचे। डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारियों के अनुसार, पाकिस्तान पहुंचने वाले अफगानों की संख्या 600,000 से 800,000 के बीच थी, कुछ के पास वैध यात्रा दस्तावेज थे, लेकिन अनिश्चित भविष्य था।इससे पहले नवंबर में, पाकिस्तान ने अप्रलेखित एलियंस के रूप में वर्णित लोगों की स्वदेश वापसी का पहला दौर शुरू किया था। पाकिस्तानी अधिकारियों ने इस बात का कोई आधिकारिक डेटा जारी नहीं किया है कि नवंबर 2023 से अनुमानित 1.7 मिलियन बिना दस्तावेज वाले अफगानों में से कितने लोगों ने पाकिस्तान छोड़ दिया है। डॉन ने बताया कि पाकिस्तान के प्रत्यावर्तन अभियान के पहले दौर में खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान के माध्यम से अफगानिस्तान लौटने वाले गैर-दस्तावेज अफगानों की कुल संख्या लगभग पांच लाख है। कम निकास संख्या की स्थिति में गैर-दस्तावेजीकृत अफगानों की स्वदेश वापसी में तेजी लाने के बढ़ते दबाव के बीच, अधिकारियों ने पाकिस्तान के आंतरिक मंत्रालय से जल्द ही 1.7 मिलियन गैर-दस्तावेजीकृत अफगानों के दावे की उत्पत्ति के बारे में आश्चर्य करते हुए और आंकड़े के पुनर्वैधीकरण का अनुरोध करने का आग्रह किया।

मलेशिया के खुदरा स्टोर में बेचे जा रहे 'अल्लाह शब्द छपे मोजे, मुसलमानों में भड़का रोष

कुआलालंपुर, एजेंसी। मलेशिया के एक खुदरा स्टोर में अल्लाह शब्द छपे मोजे बेचे जाने का मामला सामने आने पर मुसलमानों में रोष भड़का गया है। इसकी जानकारी मिलने के बाद स्टोर के मालिक और उसके यहां सामान की आपूर्ति करने वाले के खिलाफमंगलवार को मुस्लिमों की धार्मिक भावनाएं आहत करने का आरोप लगाया गया है। के के मार्ट समूह देश में खुदरा स्टोर की दूसरी सबसे बड़ी श्रृंखला है और इसके संस्थापक एवं अध्यक्ष चाई की कान और उनकी पत्नी तथा कंपनी की निदेशक लोह सीव मुई ने जानबूझकर मुसलमानों की धार्मिक भावनाएं आहत करने का आरोप से इनकार किया है। कंपनी ने अपने आपूर्तिकर्ता पर उन उत्पादों को भेजने का आरोप लगाया है जिनके स्टॉक के लिए कंपनी सहमत नहीं थी। मलेशिया में धर्म एक संवेदनशील मुद्दा है जहां 3.4 करोड़ की आबादी में से दो तिहाई मुस्लिम हैं। राष्ट्रीय समाचार एजेंसी बरनामा की खबर के मुताबिक, धार्मिक मामलों के मंत्री मोहम्मद नईम मुख्तार ने कहा, मुसलमानों की नजर में अल्लाह शब्द का बहुत सम्मान है। अल्लाह हमारा निर्माता है और अल्लाह को हमारे चरणों में रखना अपमानजनक है। मोजे उपलब्ध कराने वाले आपूर्तिकर्ता शिन जियान चांग और उसकी कंपनी में निदेशक उसकी पत्नी और बेटी पर भी अपराध को बढ़ावा देने का आरोप लगाया गया है। शिन जियान चांग ने कहा है कि मोजे चीन से आयात किए गए थे। प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम के गठबंधन में शामिल एक मलय राजनीतिक दल ने के के मार्ट के बहिष्कार का बार-बार आह्वान किया है, जबकि मलेशिया के नए शाह, सुल्तान इब्राहिम इस्कंदर ने इस मुद्दे पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है और चेतावनी दी है कि यह नस्लीय सद्भाव को बाधित कर सकता है।

मतदाता सूचना पर्ची और वोटर गाइड का होगा वितरण : रिणवा

चर्चित राजनीति। संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 की निर्वाचक नामावली में पंजीकृत मतदाताओं को मतदाता सूचना पर्ची जारी की जायेगी।इस मतदाता सूचना पर्ची के आगे के भाग पर निर्वाचक नामावली में भाग संख्या व नाम, क्रम संख्या, पोलिंग स्टेशन का नाम तथा मतदान का दिनांक, क्यू आर कोड का उल्लेख होगा।मतदाता सूचना पर्ची के पीछे के भाग पर पोलिंग स्टेशन का नक्शा तथा बीएलओ का नाम, बीएलओ का कॉन्टेक्ट नम्बर, मतदान करने के लिए आयोग द्वारा निर्धारित वैकल्पिक दस्तावेज का विवरण तथा अन्य महत्वपूर्ण निर्देश आदि उल्लिखित रहेगा।मतदाता सूचना पर्ची के साथ प्रत्येक परिवार को हिन्दी में रंगीन वोटर गाइड भी दी जाएगी। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार पंजीकृत मतदाताओं को मतदाता सूचना पर्ची का वितरण मतदान की तिथि के 09 दिन पूर्व से लेकर मतदान की तिथि से 05 दिन पूर्व तक समस्त मतदाताओं को उपलब्ध करायी जाएगी।बीएलओ द्वारा मतदाता सूचना पर्ची पंजीकृत मतदाता को या उसके परिवार के किसी वयस्क सदस्य को रजिस्टर पर हस्ताक्षर कराने के बाद दी जायेगी। रंगीन वोटर गाइड में चित्रों के माध्यम से मतदाता ईवीएम से कैसे अपना मतदानकरें। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दी जा रही सुविधा ऐप्स जैसे सक्षम ईसीआई, वोटर हेल्पलाइन ऐप, अपने अभ्यर्थी को जाने नो योर कैन्डिडेट ऐप तथा सी-विजिल ऐप की जानकारी दी गयी है। पंजीकरण, मतदान, दिव्यांगजनों एवं वृद्धों को घर से मतदान तथा डाक मतपत्र की सुविधा के बारे में बताया गया है।

सी-विजिल एप से कर सकते चुनाव आचार संहिता के उल्लघंन की शिकायत

लखनऊ,चसं। उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि सी-विजिल एप के माध्यम से आम नागरिक आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लघंन की शिकायत कर सकता है। मोबाइल से प्ले स्टोर या एप स्टोर से सी-विजिल एप डाउनलोड कर आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लघंन की शिकायत, लाइव फोटो अथवा लाइव वीडियो अपलोड कर शिकायत की जा सकती है।आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लघंन होने पर सी-विजिल एप में अपने मोबाइल नम्बर से लॉगिन करके नागरिक अपने शिकायत की सतत निगरानी भी कर सकता है।सी-विजिल एप पर शिकायत करने हेतु नाम व मोबाइल नम्बर की कोई बाध्यता नहीं है, परन्तु अगर शिकायतकर्ता द्वारा अपना नाम व मोबाइल नम्बर देता है तो शिकायतकर्ता एप के माध्यम से अपनी शिकायत की निगरानी भी कर सकता है।शिकायत दर्ज होने पर सम्बन्धित रिटर्निंग आफिसर द्वारा अपने नजदीक के उड़नदस्ता टीम एफएसटी को शिकायत स्थल पर भेजा जाता है।शिकायत को निर्धारित करके सम्बन्धित रिटर्निंग आफिसर के पोर्टल पर अग्रसारित किया जाता है तथा सम्बन्धित रिटर्निंग आफिसर द्वारा शिकायत के निस्तारण के क्रम में निर्णय लिया जाता है।

कोई पैसा लेकर रामलला का दर्शन करा रहा तो समझ लें कि हो रही है धोखाधड़ी

अयोध्या, चसं। पैसे लेकर राम लला का दर्शन कराने के खेल पर राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने फिर बयान दिया है।उन्होंने कहा है कि अगर कोई पैसा लेकर दर्शन करा रहा तो समझ ले कि आपके साथ धोखाधड़ी हो रही है। इससे ट्रस्ट का कोई लेनादेना नहीं है।दर्शन के नाम पर पैसा देकर समाज में बुराई न करें।यदि आप पैसा देना ही चाहिए हैं तो उसे गरीबों में बांट दें अथवा उस पैसे से गरीब लोगों को भोजन कराएं। रामलला के दर्शन को लेकर हो रही राम भक्तों से अवैध वसूली पर राम मंदिर ट्रस्ट के सदस्य चंपत राय ने वीडियो के जरिए बयान जारी किया है।उनका यह बयान सोशल मीडिया पर चल रहा है। इसमें उन्होंने कहा है कि दर्शन के नाम पर लेन देन के मामले में तभी खुलासा होगा जब पुलिस और गुप्तचर विभाग लिप्त लोगों पर कार्रवाई करेंगे। राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा के बाद बालक रूप में रामलला की सेवा होती है।राम लला की प्रतिमा जीवंत रूप में विराजमान है। राम लला के परिसर में विराजमान राम लला का प्रतिदिन सवा लाख से डेढ़ लाख राम भक्त दर्शन कर रहे हैं। दिन भर में 14 घंटे राम भक्तों को रामलला का दर्शन हो रहा है।

राम मंदिर में पैसा लेकर टाइम स्लॉट देकर दर्शन की कोई व्यवस्था नहीं है। राम भक्तों के साथ राम नगरी में कुछ दुर्घटनाएं होने की सूचना मिली है। सामान्य दर्शन में लाइन में लगा कर दर्शन करने वाले राम भक्तों को राम लला के सुगम दर्शन हो रहे हैं। इस व्यवस्था के तहत दर्शन करने वाले भक्तों को लगभग 10 मिनट तक रामलला का दर्शन मिलता है।

भाजपा ने बाराबंकी सीट से राजरानी को मैदान में उतारा

चर्चित राजनीति। संवाददाता

● एनडीए बनाम इंडिया में होगी जंग

लखनऊ। बाराबंकी संसदीय सीट पर प्रत्याशी को लेकर चल रहे असमंजस को बीजेपी हाईकमान ने खत्म कर दिया है। अटकलों पर विराम लग गया है। अब यहाँ एनडीए बनाम इंडिया लड़ाई हो गई है।

इंडिया गठबंधन ने बाराबंकी के पूर्व सांसद पीएल पुनिया के पुत्र तनुज पुनिया के नाम पर मुहर लगाई है तो अब वर्तमान जिला पंचायत अध्यक्ष राजरानी रावत के नाम पर एनडीए ने मुहर लगा दी है।भाजपा लीडर राजरानी रावत फतेहपुर(सु.)सीट जो अब कुर्सी कहलाती है, उससे विधायक रह चुकी है। वर्तमान भाजपा सांसद उपेन्द्र रावत अश्लील वीडियो मामले को लेकर खुद चुनाव लड़ने से मना कर दिया तो बीजेपी नेतृत्व ने राजरानी रावत को चुनावी समर में उतारने का निर्णय लिया है।बाराबंकी (सु.) सीट से बीजेपी के टिकट के लिए काफी जोड़तोड़ चल रही थी। बीजेपी के पूर्व जिलाध्यक्ष शशांक कुशमेश, पूर्व सांसद बैजनाथ रावत, पूर्व सांसद प्रियंका रावत,डॉ सुनील रावत समेत कई लोग लाइन में थे। राजरानी रावत का नाम ज्यादा चर्चा में नही था।बीजेपी के बारे कहा जाता है कि कि वो अप्रत्याशित और कुछ नया करने पर ज्यादा फोकस करने वाली पार्टी है। उसके पिटारे में बेशुमार मोहरे हैं, कभी भी बाहर निकाल देती है। लोकसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी ने शनिवार को अपनी एक और सूची जारी की है। बीजेपी ने 111 उम्मीदवारों के नाम का एलान किया है, जिसमें उत्तर प्रदेश के 13 उम्मीदवारों के नाम है। लिस्ट में बीजेपी ने अपने बाराबंकी के उम्मीदवार की जगह अब दूसरा उम्मीदवार उतारा है। बाराबंकी संसदीय क्षेत्र से बीजेपी के उम्मीदवार उपेंद्र सिंह रावत ने कथित अश्लील वीडियो वायरल होने के बाद आगामी लोकसभा चुनाव नहीं लड़ने का ऐलान कर दिया था। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर घोषणा की थी और उपेंद्र रावत ने निर्दोष साबित होने तक सार्वजनिक जीवन में कोई चुनाव नहीं लड़ने की बात कही थी।उपेंद्र सिंह रावत बाराबंकी सीट से भाजपा के सांसद हैं और उन्हें पार्टी की तरफ से फिर से उम्मीदवार बनाया गया था लेकिन अब उनकी जगह बीजेपी ने राजरानी रावत पर भरोसा जताया गया है।उपेंद्र सिंह रावत ने चुनाव नहीं लड़ने का एलान करते हुए अपने सोशल मीडिया पर लिखा था, मेरा एक एडिटेड वीडियो वायरल किया जा रहा है, जो डीपफेक एआई तकनीक द्वारा जनरेटेड है, जिसकी एफआईआर मैंने दर्ज करा दी है, इसके संदर्भ में मैंने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से निवेदन किया है कि इसकी जांच करवायी जाए। जब तक मैं निर्दोष साबित नहीं होता सार्वजनिक जीवन में कोई चुनाव नहीं लडूंगा। लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा की तरफसे जारी 195 उम्मीदवारों की पहली लिस्ट में उपेंद्र रावत का भी नाम शामिल था।उन्हें बाराबंकी से पार्टी ने उम्मीदवार बनाने की घोषणा किया था लेकिन नाम की घोषणा होने के एक दिन बाद सोशल मीडिया पर उनका एक कथित अश्लील वीडियो वायरल हो गया, जिसके बाद वह विवादों में घिर गए थे।

अवैध निर्माण हुआ तो वरिष्ठ अधिकारी होंगे जिम्मेदार : एलडीए वीसी

लखनऊ, चसं। शहर में अवैध निर्माण व प्लाटिंग पर अंकुश लगाने के लिए अब वरिष्ठ अफसर खुद फील्ड पर उतरकर निरीक्षण करेंगे। इसमें न सिर्फ नए अवैध निर्माणों को चिह्नित किया जाएगा, बल्कि सीलिंग की कार्यवाही की वर्तमान स्थिति भी देखी जाएगी। साथ ही कार्य में लापरवाही बरतने वाले फील्ड स्टॉफ के खिलाफ कार्यवाही के लिए जांचकर्ता अधिकारी को रिपोर्ट भी देनी होगी। लखनऊ विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉक्टर इन्द्रमणि त्रिपाठी ने इस संबंध में आदेश जारी किया हैं।

सूख रही सरयू की धारा को लेकर अयोध्या चिंतित

अयोध्या, चसं। सूख रही सरयू की धारा को लेकर अयोध्या के संत चिंतित हैं। लक्ष्मण किला के अधिकारी सूर्य प्रकाश शरण ने कहा कि सरयू अयोध्या की शोभा,पहचान है।

सरकार को इसकी सुंदरता पर ध्यान देना चाहिए। नौ अप्रैल से आरंभ हो रहे राम नवमी मेले से पहले सरयू के घाटों को उसके जल से समृद्ध किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अयोध्या नऐ सिरे से विश्व में स्थापित हो रही हैं।ऐसे में सरयू का सूखना ठीक नहीं हैं।

आवश्यकता

आवश्यकता है ऐसे डी.टी.पी. ऑपरेटर की, जो समाचार पत्र, पत्रिका के पेज बनाने, फोटोशॉप में काम करने तथा कम्प्यूटर में पारंगत हो, वेतन-योग्यतानुसार।

सम्पर्क करें :- 9335322739, 8881992262

उमा इन्फ्राटेक

लखनऊ में कामर्शियल/रेजीडेन्शियल भवन, भूखण्ड, फ्री होल्ड प्लॉट, एग्रीकल्चर जमीन खरीदने एवं बेचने के लिए सम्पर्क करें।

ऑफिस पता-डी-206-सी, विभूति खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ।

मो.-8604000050, 9415007197